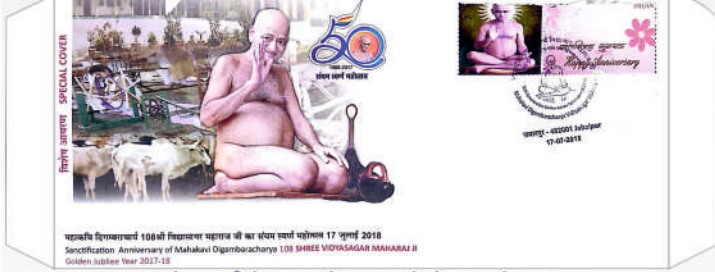


इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज
Sanskarsagar Anniversary of Shikharji Digambaracharya 108 SHREE VIDYASAGAR MAHARAJ II
Golden Jubilee Year 2017-18

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
मार्च 2024			
16	शनिवार	सप्तमी	रोहिणी
17	रविवार	अष्टमी	मृगशिरा
18	सोमवार	नवमी	आर्द्रा
19	मंगलवार	दशमी	पुनर्वसु
20	बुधवार	एकादशी	पुष्य
21	गुरुवार	द्वादशी	आश्लेषा
22	शुक्रवार	त्रयोदशी	मघा
23	शनिवार	चतुर्दशी	पूर्वाषाढा/दि/रा
24	रविवार	चतुर्दशी	पूर्वाषाढा/दि/रा
25	सोमवार	पूर्णिमा	उत्तराषाढा/दि/रा
26	मंगलवार	प्रतिपदा	हस्त
27	बुधवार	द्वितीया	चित्रा
28	गुरुवार	तृतीया	स्वाती
29	शुक्रवार	चतुर्थी	विशाखा
30	शनिवार	पंचमी	अनुराधा
31	रविवार	षष्ठी	ज्येष्ठा
अप्रैल 2024			
1	सोमवार	सप्तमी	मूल
2	मंगलवार	अष्टमी	पूर्वाषाढा
3	बुधवार	नवमी	उत्तराषाढा
4	गुरुवार	दशमी	श्रवण
5	शुक्रवार	एकादशी	धनिष्ठा
6	शनिवार	द्वादशी/त्रयोदशी	शतभिषा
7	रविवार	चतुर्दशी	पूर्वाभाद्रपद
8	सोमवार	अमावस	उत्तराभाद्रपद
9	मंगलवार	प्रतिपदा	रेवती/अश्विनी
10	बुधवार	द्वितीया	मरगी
11	गुरुवार	तृतीया	कृत्तिका
12	शुक्रवार	चतुर्थी	रोहिणी
13	शनिवार	पंचमी	मृगशिरा
14	रविवार	षष्ठी	आर्द्रा
15	सोमवार	सप्तमी	पुनर्वसु

तीर्थकर कल्याणक

17 मार्च:	भगवान संभवनाथ जी गर्भ कल्याणक
29 मार्च:	भगवान पार्श्वनाथ जी ज्ञान कल्याणक
30 मार्च:	भगवान चन्द्रप्रभ जी गर्भ कल्याणक
02 अप्रैल:	भगवान शीतलनाथ जी गर्भ कल्याणक
03 अप्रैल:	भगवान आदिनाथ जी जन्म तप कल्याणक
08 अप्रैल:	भगवान अनन्तनाथ जी ज्ञान मोक्ष कल्याणक
08 अप्रैल:	भगवान अरुनाथ जी मोक्ष कल्याणक
09 अप्रैल:	भगवान मल्लिनाथ जी गर्भ कल्याणक
14 अप्रैल:	भगवान कुन्धुनाथ जी ज्ञान कल्याणक
13 अप्रैल:	भगवान अजितनाथ जी मोक्ष कल्याणक
14 अप्रैल:	भगवान संभवनाथ जी मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

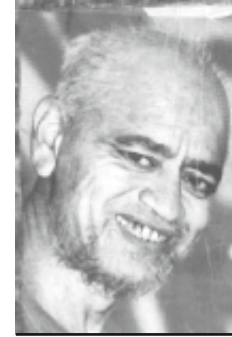
16 मार्च:	रोहिणी व्रत
17 मार्च:	अष्टान्तिका व्रत प्रारंभ
24 मार्च:	षोडशकार व्रत प्रारंभ
25 मार्च:	अष्टान्तिका व्रत पूर्ण
03 अप्रैल:	तीर्थकर दिवस
09 अप्रैल:	लब्धिविधान व्रत प्रारंभ
12 अप्रैल:	लब्धिविधान व्रत पूर्ण
12 अप्रैल:	रोहिणी व्रत
13 अप्रैल:	दशलक्षण व्रत प्रारंभ
13 अप्रैल:	पुष्पांजलि व्रत प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

16 मार्च	: 06/23 बजे	से	16/05 बजे	तक
24 मार्च	: 07/34 बजे	से	30/14 बजे	तक
29 मार्च	: 20/36 बजे	से	30/09 बजे	तक
31 मार्च	: 22/57 बजे	से	30/07 बजे	तक
07 अप्रैल	: 12/58 बजे	से	30/00 बजे	तक
09 अप्रैल	: 07/32 बजे	से	29/06 बजे	तक
10 अप्रैल	: 27/05 बजे	से	29/57 बजे	तक
15 अप्रैल	: 27/05 बजे	से	29/53 बजे	तक

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: मार्च-17,20,25,27 अप्रैल-3,12
मशीनरी प्रारंभ: मार्च-20,27,31 अप्रैल-5,15
वाहन खरीदने: मार्च-20,28 अप्रैल-5,6,13,15



संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 299 • मार्च 2024

• वीर नि.संवत 2550-51 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

- श्रमण संस्कृति सुरक्षा का आधार संत सुरक्षा 08
- परमाणु बंध और वर्गणा 10
- चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी की शिष्य परंपरा 15
- क्या पर्याय के बिना द्रव्य रह सकता है ? 18
- हथकरघा के विस्तार की दिशा 24
- प्रवचन- ग्रहण और पावन में अंतर 26
- मोबाईल से नवजात पीढ़ी, युवा पीढ़ी में भटकाव 28
- बच्चों के चतुर्मुखी विकास में मातृशक्ति की भूमिका 41
- जन प्रतिनिधियों की इतनी सुरक्षा क्यों 44
- तीर्थकर ऋषभदेव और उनका अवदान 52
- वरिष्ठ नागरिक: बुढ़ापे में सजगता से भोजन करे 57
- सासों की शरगम बनाये रखे अस्थिमा रोग दमा 59

बाल कहानी

- बहादुर मोरसलिम 62

कविता

- नम्रता में ही कल्याण है 14
- हम हैं कठपुतली 17
- अहिंसा धर्म सच्चा 23
- कब गुरु दर्शन पाये 27
- एकता के गीत 43
- विद्यागुरु सम संत समागम 45
- साजिश हँस रही है 56

कहानी

- कपास का पेन 46

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
- चलो देखें यात्रा : 23 • आगम दर्शन : 31 • माथा पच्ची : 32 • पुराण प्रेरणा : 33
- कैरियर गाइड : 34 • दुनिया भर की बातें : 35 • इसे भी जानिये : 39
- दिशा बोध : 40 • हमारे गौरव : 56 • वरिष्ठ नागरिक : 57 • हास्य तरंग-पाककला : 61
- बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-9425141697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोटिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवाला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-9412889449
डॉ. ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-9793821108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✽ आंतरिक सज्जा ✽
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- ◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- ◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- ◆ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- ◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगंबर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मादी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की
स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर
सहयोग करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : **2100/-** (15 वर्ष)
-संरक्षक : **5001/-** (सदैव)
-परम सम्मानिय : **11000/-** (सदैव)
-परम संरक्षक : **15001/-** (सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया - **संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक - **ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)
• आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)



में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय - संस्कार सागर
श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर - 10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

• सम्पादक महोदय, विगत दिन ताइवान में राष्ट्रपति पद का चुनाव हुआ और ताइवान के नये राष्ट्रपति विलियम लाई चुने गये। उन्होंने कहा कि वे चीन की धमकियों डराने और धकाने से झुकने वाले नहीं हैं क्योंकि चीन द्वारा ताइवान को लगातार धमकियां दी जा रही है और उसकी सैन्य घेरा बंदी प्रयासों के बीच उसकी आंख की किरकिरी माने जाने वाले सत्ता रूढ़ दल के विलियम लाई के राष्ट्रपति पद पर चुनाव जीत जाने से चीन ओर बौखला गया और उसने कहा कि हम ताइवान को पुनः चीन में सम्मिलित किये बिना रूकने वाले नहीं हैं चीन और ताइवान के बढ़ते तनाव से वैश्विक अर्थ व्यवस्था की मार सबको झेलना पड़ेगी।

सुरेश जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के फरवरी अंक में प्रकाशित श्रद्धा का संकल्प शीर्षक से कहानी को पढ़ा कहानी अनूठी प्रेरणा देने वाली है अगर कोई लड़की तीर्थ रक्षा का संकल्प लेकर अपने संपूर्ण जीवन को समर्पित करने कबी बात सोच ले तो यह अपने आप में एक अनूठा उदाहरण ही होगा मर्म स्पर्शी प्रेरणा स्रोत सरल सुबोध भाषा में कहानी

**पाती
पाठकों
की....**

की कथा वस्तु देखकर मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य हुआ और कहानी को पढ़कर कोई भी महिला, पुरुष तीर्थ रक्षा की आवश्यकता को प्राथमिकता के तौर पर स्वीकार अवश्य ही करेगा। भलेही वह तीर्थ रक्षा के लिये सक्रिय किन्हीं कारणों से न हो पाये तब भी उसके मन में तीर्थ रक्षा की तड़फन अवश्य ही होगी।

अनिमेष जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, संस्कार प्रवाह पढ़ा चुनाव और जैन समाज की भूमिका पर सम्पादक महोदय ने बड़े ही जोरदार शब्दों में जैन समाज को राजनैतिक दलों से बचने की सलाह दे दी है साथ ही बातों ही बातों में संतों की तरफ भी निशाना साथ दिया है कि जैन संत किसी भी एक राजनैतिक दल का समर्थन अथवा विरोध में वक्तव्य देने से क्यों बचे क्योंकि सत्य यह है कि जैन समाज का कोई भी प्रभावी वोट बैंक नहीं है और न ही किसी भी धार्मिक नेता की प्रेरणा से जैन समाज के वोट किसी एक राजनैतिक दल के लिये एक मुस्तक नहीं पड़ते हैं तो फिर किसी भी बयान देना जैन समाज के हित में नहीं होता है अतः समाज हित को ध्यान में रखते हुये किसी भी अनर्गल प्रलाप से छुटभैया नेता अवश्य बचें।

रश्मि जैन, नागपुर

भक्ति तरंग आनंद वर्ष



हम आये हैं जिनभूप ! तेरे दरसन को ॥टेक ॥
निकसे घर आरतिकूप, तुम पद परसन को ॥ हम ॥2॥
वननिसो सुगुन निरूप चाहैं, दरसन को ॥ हम ॥2॥
ध्यानत ध्यावैं मन रूप, आनंद बरसन को ॥ हम ॥3॥

हे जिनराय ! हम आपके दर्शन करने को आये हैं। उस घर से बाहर निकलकर जो दुःखों का कुआँ है, हम तेरे पद का, तेरे चरण-कमल का स्पर्शन करने आये हैं।

हे अरूपी ! हम वचनों से आपका गुण-स्तवन करते हैं और आपके रूप के दर्शन की कामना करते हैं।

ध्यानतराय कहते हैं कि मन में आपका ध्यान-चिंतवन करते हैं तब आनंद बरस पड़ता है अर्थात् मन आनंद से भर-भर जाता है।



मतदाता बने समझदार

लोकसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है हर मतदाता यह चिंतन कर रहा है कि इस बार अपना मत किसे दिया जाये वह यह निर्णय करने जब बैठता है तो उसके सामने कई प्रलोभन दिखाई देने लगते हैं गैस सिलैण्डर सस्ता अनाज तथा लेपटॉप का प्रलोभन अपनी पीढ़ी के लिये रोजगार के आश्वासन देखकर के वह मतदाता यह कहना प्रारंभ कर देता है कि जो जितना उसे लाभ पहुँचायेगा उसे ही हमें अपना मत देना चाहिये आरक्षण का प्रलोभन और जातिगत जनगणना जैसे मुद्दे भी किसी मतदाता की समझ को भटकाने के लिये पर्याप्त होते हैं इन सभी प्रलोभनों को दृष्टिगत रखते हुये मतदाता के सामने सरहदों की सुरक्षा एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत का बढ़ता ग्राफ तथा विश्वमंच पर भारत की बढ़ती शाख जैसे राष्ट्र स्तरीय मुद्दे कम वजन के दिखते हैं। ऐसी परिस्थिति में तत्काल लाभ को दृष्टिगत रखते हुये यदि मतदाता मतदान करता है तो उसकी परिपक्वता पर पाँच वर्ष तक सवाल उठते रहेगें और यह कहा जायेगा कि कहीं मतदान करते समय मतदाता की समझदारी पीछे रह गई।

लोकसभा का चुनाव स्थानीय मुद्दे पर आधारित नहीं होता है अपितु लोकसभा चुनाव राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संदर्भों में महत्व रखता है आतंकवाद, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महंगाई एवं विदेशी नीति की समझ मतदाता के अंदर आ जाती है तो वह मतदाता जाति धर्म भाषा जैसे छोटे सोच से ऊपर उठकर अपना मतदान करता है अब हमें देखना यह है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में भारतीय मतदाता भय और लोभ से ऊपर उठकर धर्म जाति भाषा की छोटी विचारधारा को छोड़कर राष्ट्रीय विकास के लिये मतदान करके अपना स्पष्ट जनादेश देकर भारत की शाख को बढ़ाने में मददगार बनेगा।

श्रमण संस्कृति सुरक्षा का आधार संत सुरक्षा

✽ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✽

इन दिनों परम पूज्य आचार्य कामकुमार नंदी जी की जघन्य हत्याकांड के बाद देशभर में आंदोलन का माहौल है जगह-जगह समाज के द्वारा शासन-प्रशासन को ज्ञापन दिये जा रहे हैं 20 जुलाई 2023 को देशव्यापी बंद का आयोजन भी किया गया। इस घटना से सभी को झकझोर दिया है, पूरे देश की समाज आंदोलित और उद्वेलित है। समाज में भारी गुस्सा, आक्रोश नजर आया है, अनेक स्थानों के जैनेतर संतों और समाज के साथ देने के भी समाचार आ रहे हैं।

शर्मनाक और धिनोनी हरकत: कर्नाटक के बेलगावी जिले में चिकोड़ी तालुक में नदी पर्वत पर स्थित जैन तीर्थ पर विराजमान परम पूज्य जैन आचार्य श्री कामकुमारनंदी जी महाराज की दिनांक 5 जुलाई 2023 को निर्मम हत्या कर हत्यारों ने मृत शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर बोरवेल में डाल दिये, जिससे सम्पूर्ण भारत ही नहीं विश्व के जैन समाज में दुख व रोष व्याप्त है। यह एक कायराना कृत्य है, जिसकी जितनी निंदा की जाये कम है। उन्हें करन्ट लगाकर यातनायें दी और फिर क्रूरतापूर्वक उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर बर्बरता की सारी सीमाएँ लांघ दी। इससे अधिक शर्मनाक और धिनोनी हरकत क्या होगी जानकर मन बड़ा बैचैन दुःखी है। स्वतन्त्र भारत के इतिहास में इस जघन्य हत्याकाण्ड ने कर्नाटक के गौरवशाली इतिहास पर एक काला धब्बा लगा दिया है। आजाद भारत में शायद 76 साल के इतिहास में किसी भी धर्म के साधु की इतनी वीभत्स, नृशंस हत्या नहीं की गई होगी, जैसी जैन दिगंबर आचार्य श्री कामकुमारनंदी जी की गई। सुनकर और चित्र-वीडियो देखकर ही मन सिहर उठता है।

बहुभाषाविद: आचार्य श्री कामकुमार नंदी जी महाराज का जन्म 6 जून 1967 को ग्राम खवटकोप्प जिला बेलगांव कर्नाटक में पिता भीमप्पा, माता रत्नवा के यहाँ हुआ था। वे गृहस्थ जीवन में पांच भाई और तीन बहिनें थे। आचार्य श्री कुंथुसागर जी से सम्मदशिखर जी में मुनि दीक्षा ग्रहण की थी। आपके दीक्षा गुरु जहाँ आचार्य कुंथुसागर जी थे वहीं शिक्षा गुरु आचार्य श्री विद्यानंदी जी महाराज व आचार्य श्री कनकनंदी जी महाराज रहे हैं। आचार्य कामकुमार नंदी जी महाराज को कन्नड़, हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी, ब्राम्ही लिपि का अच्छा ज्ञान था। आपके बड़ौत, सहारनपुर, कुंदकुंद भारती दिल्ली, शामली, देहरादून आदि में प्रभावक चातुर्मास हुये थे।

साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अवदान: आपने अनेक कृतियों का प्रणयन किया है। मुझे अच्छे से स्मरण है अब से 15-20 वर्ष पहले जब आप उपाध्याय कामकुमार नंदी जी महाराज के नाम जाने जाते थे उस समय आपकी बहुउपयोगी अनेक कृतियों को डाक से स्वाध्याय प्रेमियों के लिये निःशुल्क भेजी जाती थी, उस समय इंटरनेट, सोशल मीडिया आदि थी नहीं, उपयोगी साहित्य भी कम ही प्रकाशित होता था ऐसे में आपने जैन सिद्धांतों को बड़ी ही सरल भाषा में पुस्तकें प्रणयन की और घर घर पहुंची। युवा पीढ़ी के लिये प्रश्नोत्तर के रूप पुस्तकें उपयोगी साबित हुईं। आचार्य श्री के द्वारा लिखित अनेक पुस्तकों में से जैन धर्म की मौलिक विशेषतायें घर घर चर्चा रहे धर्म की, जैन धर्म में वायु संबंधी अवधारणा, कुंथु-कनक धर्म विज्ञान भाग एक, दो, तीन, नीति सुधा बिंदु जैसी पुस्तकें आज भी मेरे पुस्तकालय में संग्रहित हैं। निश्चित ही आचार्य श्री कामकुमारनंदी जी महाराज

का जैन साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अवदान रहा है।

संत हमारी राष्ट्रीय धरोहर हैं- संत, धर्म और संस्कृति को जीवित रखने के लिये हमें उनके संरक्षण के लिये आगे आना होगा। सरकार और समाज दोनों को इस दिशा में गंभीरता पूर्वक तुरंत निर्णय लेना होंगे।

भारत सरकार को चाहिये कि संतों की रक्षा और सुरक्षा के लिये एक आयोग बने और उसके अधीन एक सुरक्षा बल का गठन हो। संतों पर अत्याचार और अपराधों से जुड़े मामले फास्टट्रैक कोर्ट में चलाये जायें। सभी तीर्थ ओर धर्म स्थानों की सुरक्षा के लिये एक राष्ट्रीय बोर्ड का गठन हो और विभिन्न समितियों के माध्यम से समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो।

निर्मम हत्या का मुकदमा फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुना जायें- परम पूज्य आचार्य श्री 108 कामकुमारनंदी जी मुनिराज की हत्या की साजिश का जल्द से जल्द खुलासा हो। कर्नाटक के डी.जी.पी पुलिस या एस.पी. बेलगावी इस दुःखद घटनाक्रम पर वीडियो संदेश जारी करें तथा राष्ट्र को बतायें कि उन्होंने इस नृशंस हत्याकांड पर क्या कार्रवाई की है? इस निर्मम हत्या का मुकदमा फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुना जाएँ तथा हत्यारों को शीघ्र सजा दी जाए। कर्नाटक में सर्वाधिक जैन रहते हैं। गोमटेश्वर बाहुबली श्रवणबेलगोला जैसा प्रसिद्ध जैन तीर्थ है। यहां जैन संतों पैदल विहार होता रहता है अतः उनकी समुचित सुरक्षा व्यवस्था हो। कर्नाटक सहित सभी राज्यों में जैन धर्म तीर्थ व संतों की सुरक्षा हेतु जैन संरक्षण बोर्ड की स्थापना हो। जैन धर्मायतनों की सुरक्षा की जाये। जैन साधुओं के विहार के समय पुलिस व्यवस्था अनिवार्य की जाये।

संतों की सुरक्षा के लिये हों कटिबद्ध: समाज को भी गंभीरता से चिंतन करना होगा। साधु संतों के आहार-विहार-निहार के लिये जागरूक होना होगा ताकि किसी अप्रिय घटना से बचा जा सके। साधु संतों के विहार में अक्सर समाज की लापरवाही देखी जाती है जिस पर चिंतन जरूरी है। जब भी साधु का विहार हो संबंधित एरिया की जैन समाज का दायित्व बनता है कि स्थानीय पुलिस प्रशासन को भी उनके विहार कार्यक्रम की डिटेल दे, यदि पुलिस प्रशासन के संज्ञान में साधु का विहार होगा तो वह सुरक्षा के इंतजाम भी करेगी।

जब कोई अप्रिय घटना घट जाती है तो हम निंदा आदि प्रस्ताव पास करके हम कुछ नहीं कर पा सकने की निराशा से ऊपर उठने की कोशिश और कुछ तो क्रिया की संतुष्टि में अक्सर एक साथ जी लेते हैं। आखिर यह सब कब तक! अब हमारी समाज को निर्णायक फैसले लेना होंगे।

हम अपनी विरासत बचाने को आगे आयें। इसकी रक्षा करने के लिये हमें संकल्पित होना होगा मात्र प्रस्ताव पास करने या व्हाट्सएप फेसबुक पर ज्ञान बाटने की आदत से बाहर निकलकर कुछ सार्थक निर्णायक कदम उठाना आज की महती आवश्यकता है।

साधु संस्था की गरिमा को बचाये रखना समाज की प्राथमिकता होनी चाहिये क्योंकि दिगम्बर जैन धर्म की पहचान हमारे साधु संस्था से ही है।

यदि अब भी न जागे जो मिट जायेंगे खुद ही।

दास्तां तक भी न होगी, हमारी दस्तानों में ॥

आज हम सभी को आत्मावलोकन करने की जरूरत है।

कुहा सां आसमां पर छा रहा है और हम चुप हैं।

अंधेरा धूप को धमका रहा है और हम चुप हैं ॥

परमाणु बंध और वर्गणा

* ब्र. समता जैन, मारौरा, इंदौर *

वर्गणा- सजातीय परमाणुओं का सूक्ष्मतम समुदाय वर्गणा है। अथवा समान गति वाले पुद्गल एवं स्कंध को वर्गणा कहते हैं। हम जानते हैं कि 2 या से 2 से अधिक अणु मिलकर स्कंध बना लेते हैं, उसमें भी अलग-अलग प्रकार के स्कंध पुद्गल बनते हैं। तो जो परमाणुओं के याग से सबसे पहले सूक्ष्म स्कंध बनता है, उसे वर्गणा कहते हैं। अर्थात् समान गुण वाले परमाणुओं के पिण्ड/समूह को वर्गणा कहते हैं। विज्ञान इसे Molecule कहता है। जैन दर्शन के अनुसार वर्गणा पूरे लोक में ठसाठस भरी हुई हैं। और इन वर्गणाओं के योग से ही जल, अग्नि, वायु इस लोक के समस्त दृष्ट पदार्थों का निर्माण हुआ है।

वर्गणा के भेद¹⁵ -गोमटसार जीवकाण्ड के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में ठसाठस भरी हुई 23 प्रकार की वर्गणायें हैं वे 23 वर्गणायें निम्नलिखित हैं -

- | | |
|--------------------------|------------------------|
| 1. अणु वर्गणा | 2. संख्याताणु वर्गणा |
| 3. असंख्याताणु वर्गणा | 4. अनंताणु वर्गणा |
| 5. आहार वर्गणा | 6. अग्राह्य वर्गणा |
| 7. तेजस वर्गणा | 8. अग्राह्य वर्गणा |
| 9. भाषा वर्गणा | 10. अग्राह्य वर्गणा |
| 11. मनो वर्गणा | 12. अग्राह्य वर्गणा |
| 13. कार्माण वर्गणा | 14. ध्रुव वर्गणा |
| 15. सान्तर निरंतर वर्गणा | 16. ध्रुव शून्य वर्गणा |
| 17. प्रत्येक शरीर वर्गणा | 18. ध्रुव शून्य वर्गणा |
| 19. बादर निगोद वर्गणा | 20. ध्रुव शून्य वर्गणा |
| 21. सूक्ष्म निगोद वर्गणा | 22. ध्रुव शून्य वर्गणा |
| 23. महास्कंध वर्गणा | |

उपरोक्त 23 वर्गणाओं में से आहार वर्गणा, तेजस वर्गणा, मनोवर्गणा, कार्माण वर्गणा प्रत्येक शरीर वर्गणा, बादर निगोद वर्गणा और सूक्ष्म निगोद वर्गणा ही ब्रह्माण्ड के जीवों के उपयोग में आती है। शेष 15 वर्गणायें विश्व की रचना व्यवस्था में काम करती हैं।

वर्गणाओं की उत्पत्ति- एक प्रदेशी परमाणु वर्गणा द्वि प्रदेशी आदि उपरिम वर्गणाओं के भेद से उत्पन्न होती हैं। संख्याताणु वर्गणा से लेकर 14वीं ध्रुव स्कंध वर्गणा ऊपर के द्रव्यों के भेद से और नीचे के द्रव्यों से संघात से तथा स्वस्थान में भेद-संघात से उत्पन्न होती है। सान्तर-निरन्तर वर्गणा स्वस्थान की अपेक्षा भेद-संघात से उत्पन्न होती है। वह वर्गणा प्रत्येक शरीर, बादर शरीर और सूक्ष्म निगोद वर्गणाओं के भेद से उत्पन्न नहीं होती है।

परमाणु वर्गणा से लेकर सान्तर-निरन्तर उत्कृष्ट वर्गणा इन वर्गणाओं के समुदाय समागम से प्रत्येक शरीर वर्गणा उत्पन्न नहीं होती है, क्योंकि उत्कृष्ट सांतर-निरन्तर वर्गणाओं का अपने

स्वरूप को छोड़कर एक अधिक यदि उपरिम वर्गणा रूप में परिणमन करने की शक्ति का अभाव है। क्योंकि वे प्रत्येक शरीर के अनंतवे भाग प्रमाण होते हैं। प्रत्येक शरीर वर्गणा उपरिम वर्गणाओं के भेद या संघात से भी उत्पन्न नहीं होती, किन्तु स्वस्थान की अपेक्षा भेद-संघात उत्पन्न होती है। बादर निगोद वर्गणा और सूक्ष्म निगोद वर्गणा भी स्वस्थान की अपेक्षा भेद-संघात से होती है।

महास्कंध वर्गणा की उत्पत्ति स्वस्थान की अपेक्षा भेद-संघात होती है। नीचे की वर्गणाओं के संघात से दूसरी महास्कंध वर्गणा उत्पन्न नहीं होती है, क्योंकि वह सर्वत्र एक वर्गणा रूप है। महास्कंध से एक आदि अनंत परमाणु पुद्गलों के विलग होकर चले जाने पर भेद से अन्य महास्कंध वर्गणा होती है। उसी में एक आदि अनंत परमाणु पुद्गलों के आ जाने पर संघात से अन्य महास्कंध वर्गणा होती है तथा एक साथ उपचय होने से भेद-संघात से महास्कंधन वर्गणा उत्पन्न होती है।

वर्गणा पुद्गल परमाणु से निर्मित हैं और अजीव, पौद्गलिक होती है ये हवा जिसे हम पंखे से अनुभव करते हैं। यही सर्द-गर्म धूल-प्रकाश, ध्वनि, ऊर्जा, खशुबू-बदबू, अनुकूल-प्रतिकूल एजर्जेन्स, श्वास-प्रच्छवास सभी पुद्गल की भिन्न-भिन्न वर्गणायें हैं। जैन विज्ञान का ये अति महत्वपूर्ण अंग बनाती है।

वर्गणा के उपकार-

1. वर्गणा और शरीर रचना- आहार वर्गणा से औदारिक, वैक्रियक और आहारक शरीरों का निर्माण होता है। और हम यह भी जानते हैं कि वर्गणायें विद्युत चुम्बकीय तरंग या स्कंध हैं। अतः औदारिक, वैक्रियक और आहारक शरीरों में समान स्वभाव वाला विद्युत चुम्बकीय अंश पाया जाता है, जो इन शरीरों की रचना में मुख्य भूमिका निभाता है। वैक्रियक शरीर अदृश्य है और अति सूक्ष्म स्कंधों से बना है। आहारक शरीर संभव तथा एक विद्युतीय शरीर है जिसमें स्निग्ध परमाणुओं की प्रधानता है और यह लोक में तीव्र गति से यात्रा कर सकता है।

जैन दर्शन के अनुसार-आहार वर्गणा ही जैव विद्युत होनी चाहिये। कोशिका केन्द्रक और माइटोकॉण्ड्रिया में अति अल्प तरंग दैर्ध्य वाले विद्युत ओसीलेशन से वातावरण में व्याप्त आहार वर्गणा आकर्षित होती है और जैव विद्युत उत्पन्न करने में कारण बनती है। जैन विद्युत का रहस्य वैज्ञानिकों को मालूम नहीं परन्तु जैन दर्शन में आहार वर्गणा के रूप में स्पष्ट उल्लेख है।

2. वर्गणा और तेजस शरीर- तेजस वर्गणा से तेजस शरीर का निर्माण होता है। यह शरीर तेज और प्रभा रूप गुण से युक्त होता है, इसके निमित्त से अन्य शरीरों में कांति उत्पन्न होती है। शायद इसे ही आभामण्डल कहते हैं। तेजस और कार्माण शरीर अनादिकाल से आत्मा के साथ हैं और जब तक सभी कर्मों का क्षय नहीं हो पाता वे जन्म-जन्मांतरों तक आत्मा के साथ बने रहेंगे। तेजस शरीर और कार्माण शरीर को सूक्ष्म शरीर भी कहा जाता है। इस शरीर के निमित्त से नया-नया स्थूल शरीर का निर्माण होता है। जीव के भावों को छोड़कर इस सूक्ष्म शरीर पर किसी भी वस्तु का प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि इन सूक्ष्म शरीर के निमित्त से हमारी आहार, भाषा और मनो वर्गणाओं के कार्य होते दिखाई देते हैं।

3. वर्गणा और ध्वनि- जीव भाषा निकालने के पूर्व भाषा के रूप में परिणत करने के लिये

भाषा वर्गणाके पुद्गलों को ग्रहण करता है। ये द्रव्य एक या अधिक वर्ण, गंध, रस वाले द्विस्पर्श या चतुः स्पर्श होते हैं। तीव्र प्रयत्नवान वक्ता द्वारा छोड़े गये भाषा द्रव्य खण्डित होकर सूक्ष्म होने से लोक के अंत तक पहुंचते हैं। मंदिर प्रयत्न द्वारा निकाले हुये भाषा द्रव्य स्थूल खंड रूप एवं अव्यक्त होने से लोकांत तक नहीं पहुंच पाते। वे असंख्यात् अवगाहन वर्गणा तक जाकर भेद को प्राप्त होते हैं और असंख्यात् योजन तक जाकर विध्वंस हो जाते हैं।

4. वर्गणा और विद्युत तरंग- भाषा कंपनों को विद्युत तरंगों में बदल दिया जाता है और इन विद्युत तरंगों को अन्य शक्तिशाली केरियर तरंगों की सहायता से प्रसारित किया जाता है। ये केरियर तरंगों विद्युत चुम्बकीय रेडियो तरंगे होती हैं। दूसरे स्थान पर जहाँ भाषा या ध्वनि को सुनना होता है। विद्युत तरंगों को पुनः भाषा कंपनों में बदल दिया जाता है। इस विधि से ध्वनि को अंतरिक्ष में दूर तक पहुंचाया जा सकता है।

5. वर्गणा और मनोरचना- मनोवर्गणा से द्रव्य मन की रचना होती है। मन सब प्राणियों में नहीं होता। केवल मन का कार्य है संकल्प-विकल्प करना, स्मृति, चिंतन और कल्पना करना। संकल्प - विकल्प चेतना की प्रवृत्ति है परन्तु उसके लिये भौतिक माध्यम चाहिये यही माध्यम द्रव्य मन है।

6. वर्गणा और कर्म सिद्धांत- कार्मण वर्गणा से कार्मण शरीर का निर्माण होता है और 8 प्रकार के कर्म बनते हैं, ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावरणीय कर्म, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र, अन्तराय कर्म। कर्म का पुद्गल, कर्म वर्गणा है। जीव की विभिन्न अवस्थायें कर्म जन्य हैं। शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, मन-वचन आदि जीव की विविध अवस्थायें कर्म के कारण हैं।

जैन दर्शन को केवल एक भावात्मक संस्कार नहीं मानता है, बल्कि भौतिक (पौद्गलिक, जडात्मक, रासायनिक, जैव रासायनिक) संस्कार (संश्लेष बंधन, संयोग) भी मानता है। जिस समय में जीव, अज्ञान, ईर्ष्या, काम, क्रोधादि के वशीभूत होकर कुछ मन, वचन या काय से कार्य करता है, उस समय में जीव के सम्पूर्ण आत्मप्रदेश में परिस्पंदन होता है। इस परिस्पंदन से आकर्षित होकर सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त कर्म वर्गणाओं में से कुछ वर्गणायें आकर्षित होकर आती हैं। इसको कर्मास्रव कहते हैं। यह कार्मण वर्गणा भौतिक (पौद्गलिक परमाणुओं के समूह स्वरूप) होती है। रागद्वेषादि कषाय भाव से आकर्षित हुई कर्म वर्गणायें आत्मा के असंख्यात् प्रदेश में संश्लेष रूप से मिल जाती हैं, इसको कर्मबंध कहते हैं। जैसे धन विद्युत एवं ऋण विद्युत से आवेशित होकर के लौह खण्ड, चुम्बक रूप परिणमन करता है। तब स्वक्षेत्र में स्थित योग्य लौह खण्ड को आकर्षित करता है। उस प्रकार राग (धनात्मक आवेश, आसक्ति, आकर्षण) द्वेष (ऋणात्मक आवेश, विद्वेष, विकर्षण) से आवेशित होकर जीव भी स्वयोग्य कार्मण वर्गणाओं को आकर्षित करके स्वप्रदेश में संश्लेष रूप से बांधता है।

कर्म सिद्धांत का वैज्ञानिक दृष्टिकोण- प्रत्येक दृष्टव्य पदार्थ को छोटे-छोटे भागों में विभाजित किया जा सकता है, जिन्हें अणु कहते हैं। ये अणु ही परस्पर संयुक्त होकर इतना बड़ा कण (स्कंध) बनाते हैं अथवा बनाते चले जाते हैं कि वे दृष्टव्य हो जाते हैं। इन सभी अणुओं में एक विशेष पारस्परिक आकर्षण बल Mutual force of attraction होता है जिसके द्वारा ही ये परस्पर संयुक्त होते हैं, किन्तु यह बल स्थाई नहीं होता, इसी कारण किसी बाह्य अथवा

आंतरिक बल से प्रेरित होने पर ये पृथक हो जाते हैं। इस बल को वाण्डर आकर्षण बल तरविशी Vander waal's force of attraction व बंध को टूटने को Cleavage Breaking कहते हैं। जैन दर्शन में कर्म सिद्धांत के आधार पर इस आकर्षण को आस्रव व पृथक होने को निर्जरा कहते हैं। जीव एवं कार्मण वर्गणाओं के परस्पर संश्लेष को कर्म बंध Bond Formation कहते हैं।

अणु सिद्धांतानुसार- किसी भी पुद्गल का किसी अन्य पुद्गल से संबंध ससंजनबल Co-adhesive force (जो समान अणुओं में कार्य करता है) तथा आसंजनबल Adhesive force (जो विपरीत प्रकृति के अणुओं में कार्य करता है) के द्वारा होता है, चाहे वह एक समान हो अथवा संख्यात् या असंख्यात् पुद्गलों से बने हों।

7. वर्गणा एवं प्रत्येक शरीर- एक जीव के एक शरीर के कर्म और नोकर्म के स्कंध को प्रत्येक शरीर वर्गणा कहते हैं। पृथ्वीकायिक, जलकायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, आहारक शरीर, प्रमत्त संयत, संयोग केवली और अयोग केवली ये जीव प्रत्येक शरीर वाले होते हैं। जिनका शरीर पृथक-पृथक् अर्थात् प्रत्येक होकर भी परस्पर जुड़ा होता है वे एक बंधन बद्ध जीव होते हैं। प्रत्येक वनस्पति प्रत्येक शरीर वाले जीव हैं।

जैन दर्शन में प्रमत्त संयत, संयोग केवली और अयोग केवली को भी प्रत्येक शरीर वाला बताया गया है। संभवतः यह दो तथ्य इंगित करता है। प्रथम इन वर्ग के जीवों के शरीर में एक ही जीव हैं, अन्य निगोदिया जीव जो शरीर में प्रायः रहते हैं इस अवस्था तक पहुंचने पर क्षय को प्राप्त हो चुके हैं। अन्यथा शरीर वैसा ही है जैसा मनुष्यों का होता है। दूसरा इन जीवों शरीर में वनस्पति की तरह बिना कवलाहार के पोषण करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

नारकी और देवों का शरीर भी प्रत्येक शरीर कहा है। इसका भी संभवतः यही अभिप्राय है कि उनके वैक्रियक शरीर का पोषण सूर्य प्रकाश हो जाता है। स्थावर जीव समस्त लोक में व्याप्त हैं और वे अपना पोषण प्रत्येक शरीर वर्गणा से करते हैं।

8. वर्गणा और सूक्ष्म जीव- बादर निगोद जीवों विस्रसोपचय सहित कर्म-नोकर्म अर्थात् बादर निगोद वर्गणा कहते हैं। मूली, थूअर, अदरक लतादिकार्यें, महामत्स्य आदि बादर निगोद वर्गणा है। इनमें असंख्यात् लोक प्रमाण निगोद शरीर होते हैं और एक-एक निगोद शरीर में अनंतानंत निगोद जीव होते हैं। क्षीण कषाय के अन्तिम समय में भी बादर निगोद वर्गणा होती है। सूक्ष्म निगोद वर्गणा सूक्ष्म निगोद जीवों के ही होती है। इन जीवों के औदारिक, तैजस, और कार्मण शरीरों के कर्म, नोकर्म और विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलों को ग्रहण कर सबसे जघन्य सूक्ष्म निगोद वर्गणा होती है। वह जल में, स्थल में और आकाश में सर्वत्र दिखाई देती है। मानव शरीर में बादर निगोद जीव एवं सूक्ष्म निगोद जीव दोनों पाये जाते हैं।

विज्ञान के अनुसार मनुष्य के शरीर में कृमि, जीवाणु, आर्किया और विषाणु पाये जाते हैं। सूक्ष्म निगोद जीव अप्रतिघाती हैं और विज्ञान की पहुंच के बाहर है अतः यह माना जा सकता है कि जीवाणु, विषाणु, आर्किया सभी बादर जीव हैं। सूक्ष्म निगोद जीव हमारे संज्ञान में नहीं आ सकते हैं। इन जीवों के औदारिक, तैजस और कार्मण तीनों ही शरीर इन्हीं वर्गणाओं से बने हैं। अर्थात् समस्त सृष्टि का निर्माण वर्गणाओं से हुआ है और इन वर्गणाओं का निर्माण परमाणुओं से हुआ है इस प्रकार स्पष्ट है कि परमाणु का वर्गणा विज्ञान से परस्पर में अभीष्ट संबंध है।



अंगुष्ठ स्वास्थ्य योग

सिर-दर्द की घरेलु दवा

सिर-दर्द, ललाट, कनपट्टीयों, सिर के पीछे के भाग, ऊपर के हिस्से, सारे सिर में कहीं भी हो सकता है। सिर दर्द कुछ बिमारियों में तो एक लक्षण मात्र होता है। जैसे- ज्वर, फ्लू, माता आदि में। कभी स्वतंत्र रूप से केवल सिर में दर्द हो तो। ऐसा सिर दर्द स्वयं एक रोग होता है।

सिर दर्द के कारण- कब्ज रात में नींद पूरी न होना, ज्वर, मानसिक ताण, अपचन, ज्यादा टीवी देखना, एक जैसा कम्प्यूटर वर्क, रक्त को ऑक्सीजन कम मिलना इत्यादि सिर दर्द के कारण है।

उपाय- चिकित्सा -सिर दर्द के कारण, प्रकृति स्थिति, रोगी के धातू के अनुसार चिकित्सा करने से सिर दर्द ठीक हो जाता है। सबसे पहले तो कारणों को दूर करने का प्रयास करना चाहिये।

पानी- जुकाम से सिर दर्द हो तो दोनों पैरों को गरम पानी में रखने से आराम मिलता है। रक्तार की अधिकता से तेज सिर दर्द हो तो सिर पर पानी की पट्टी रखे।

युक्लिपट्टस ऑयल- यह दवा बेचने वाले दुकान पर मिल जाता है। जुकाम से होने वाले सिर दर्द में ललाट पे लगाने से सिर दर्द कम होता है।

नींबू- सिर दर्द होने पर नींबू चाय में निचोड़कर पीने से फायदा मिलता है।

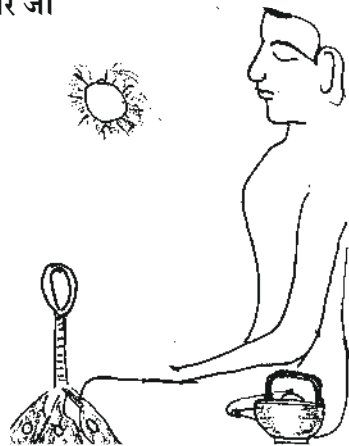
नारीयल- नारीयल की सूखी गरी और मिश्री सुर्य उगने से पहले खाने से सिरदर्द ठीक हो जाता है।

कविता

नग्नता में ही कल्याण है

एलक श्रीसिद्धांतसागर जी

परिग्रह से मुक्ति झूठा है सपना
परिग्रह के साथ नहीं कर्म खपना
कर्म तो जलेंगे तप की आग में
कर्म का बंध होगा विषय भोग के राग में
लज्जा के चलते पहने कपड़े
पाल लिये इन्होंने सैकड़ों लफड़े
लंगोटी की चाहने साधना को विगाड़ा है
शास्त्र भी धार लिया
जिन्हें कपड़ों से राग गाढ़ा है।
जब कफन के रहते, केकुंठ नहीं मिलता है
नग्नता में ही कल्याण का कमल खिलता है



चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी की शिष्य परंपरा

✽ प्रस्तुति: पं. सुरेश जैन, मारौरा, इंदौर ✽

मंगलाचरण- समुद्र को सागर कहते हैं बर्तन को गागर कहते हैं।

जो पाप से पुण्य की ओर ले जाये उसे शांतिसागर कहते हैं।

समता रस को पीने वाले तामसता का ना कोई स्थान

करुणा जिनके भरी हुई है कषाय लेश का रंच ना पान।

ऐसे गुरुवर शांतिसागर जी जन जन का करते कल्याण

इन गुरुवर के श्री चरणों में शत-शत बार विनम्र प्रणाम।

चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी का नाम सातगोड़ा था। 9 वर्ष की उम्र में 7 वर्षीय कन्या से विवाह हुआ 6 माह बाद कन्या का देहांत हो गया तब से 9 वर्ष की उम्र से सातगोंडा ने 40 वर्ष की उम्र तक घर में रहकर माता पिता की सेवा करने के पश्चात ब्रह्मचर्य व्रत पालते हुये त्याग मार्ग की ओर कदम बढ़ा दिये। 35 वर्ष की दीक्षा मुनि अवस्था में 25 वर्ष 9 माह के उपवास किये 84 वर्ष की आयु में 37 वर्ष का अन्न त्याग रखा 35 वर्ष की मुनि अवस्था में 20000 कि.मी की पदयात्रा की।

शांतिसागर जी के शिष्यगण- वीरसागर जी, नेमीसागर जी, वर्धमानसागर जी, देवसागर जी, पायसागर जी, चंद्रसागर जी, नमिसागर जी, पदमसागर जी, आदिसागर जी, श्रुतसागर जी, कुंथुसागर जी, सुधर्मसागर जी, नेमीसागर जी (पुनुरकर), धर्मसागर जी, अनंतकीर्ति जी, पार्श्वकीर्ति जी, चंद्रसागर जी, समंतभद्रसागर जी।

आचार्य श्री वीर सागर जी- आचार्य महाराज ने हम सब का अनंत उपकार किया है उन्होंने इस युग में मुनि धर्म स्वरूप आचरण करके बतलाया, उनके पूर्व उत्तर में तो मुनियों के दर्शन नहीं थे दक्षिण में जहां कहीं भी मुनि थे उनकी चर्या विचित्र प्रकार की थी, वे दिगम्बर मुनि कहलाते थे ऊपर से एक वस्त्र ओडे रहते थे, वे मुनि आहार को उस जगह जाते थे जहां उपाध्याय पहले जाकर आहार की पक्की व्यवस्था कर लेता था, लोगों को पढ़ाहन की विधि मालूम नहीं थी उपाध्याय ही आहार कराता था। वह स्वयं भी माल उड़ाता था।

इस वातावरण को देखकर शांति सागर जी महाराज ने सोचा कि यह तो निर्ग्रथ मुनि की चर्या नहीं हो सकती और उपाध्याय द्वारा निर्णीत घर में जाना छोड़ दिया तथा दिगंबर मुद्रा धारण कर आहार के लिये विहार करना प्रारंभ किया। आचार्य महाराज की वाणी में बड़ी मिठास एवं गंभीरता थी, एक बार महाराज का आलंद (निजाम राज्य) में विहार हुआ तब उनका उपदेश वहां मुस्लिम जिलाधीश के समक्ष हुआ उसको सुनकर वह अधिकारी और सहकारी मुस्लिम कर्मचारी इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने महाराज को प्रणाम किया और बोले महाराज जैनों के ही नहीं हमारे जगतगुरु हो, हमारे गुरु हो।

आचार्य वीर सागर जी कहते थे कि मैंने गुरुदेव को निकट से देखा उनके समान अन्य महापुरुष इतनी आयु में दृष्टिगोचर नहीं हुआ, मुझे सबसे बड़ी व्यथा है कि मैं सल्लेखना के समय निकट नहीं रह सका और ना ही दर्शन कर सका। मैंने हजारों जनता की प्रार्थना पर आचार्य पद को स्वीकार नहीं किया इस 82 वर्ष की अवस्था में गुरुदेव का प्रसाद समझ कर अनिक्षा होते हुये भी इस स्वैक्षाचारी युग में इस पद का निर्वहन कैसे होगा मुझे चिंता है। आचार्य महाराज की मुझ पर बड़ी कृपा रही उनके आत्म प्रेम ने हमारा उद्धार कर दिया, महाराज की विशेषता थी कि वह दूसरे ज्ञानी तथा तपस्वी को योग्य सम्मान का ध्यान रखते थे।

आचार्य पायसागर जी- एक बार महाराज के दर्शन करने दही गांव के पास गये भक्ति भाव से विनय करते हुये वंदना की महाराज ने प्रतिवंदना की पाय सागर जी बोले मैं प्रतिवंदना के योग्य नहीं महाराज बोले पायसागर चुप रहो तुम्हें अयोग्य कौन कहता है। मैं तुम्हारे हृदय को जानता हूँ महाराज के अपार प्रेम के कारण मेरा हृदय शल्य रहित हो गया मेरे गुरु का मुझ पर अपार विश्वास था मुझे कहा पायसागर बहुत होशियारी से चलना स्वरूप में जागृत रहना उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया कुछ भी कहती रहे तू तो योगनिद्रा में लीन रहना।

धर्मसागर जी कहते थे- रविवार को हम 10 मील दौड़ते हुये आचार्य महाराज के पास जाते थे दर्शन के बाद शाम को घर आते थे महाराज के जीवन का आकर्षक इतना था कि उस समय 20 मील का आना-जाना कष्ट नहीं लगता था पहले महाराज ने मुझे शादी होने तक व्रत दिया सन् 1928 में शिखर जी पहुंचकर पूर्ण व्रत दे दिया मुझे क्षुल्लक दीक्षा दी, 10 वर्ष पश्चात ऐलक बनाया 2 वर्ष ऐलक रहने के बाद निर्ग्रंथ दीक्षा दी वे धर्म विरुद्ध बात को सहन नहीं करते थे, शिष्यों को कठोर शब्द कभी नहीं कहते थे मधुर वाणी से समझाया करते थे या मौन रहकर समझाते थे।

महाराज के स्वर्गारोहण के समय अंतिम पहर में मुझे अर्धी दिखाई दी वह आकाश से हमारे पास आ रही थी उसके समीप आने पर हमने कहा णमो अरिहंताणं पढो उत्तर में हमें भी णमो अरिहंताणं की ध्वनि सुनाई दी कुछ समय बाद अर्धी अदृश्य हो गई। हमने सोचा कि महाराज संभवत, स्वर्गवासी हो गये।

आचार्य नेमीसागर जी- हमारा और आचार्य महाराज का 50 वर्षों का साथ रहा 40 वर्ष के मुनिराज जीवन के पूर्व मैंने गृहस्थ अवस्था में भी अनेक सत्संग का लाभ लिया था। आचार्य महाराज मुझे कहा करते थे कि तुम शास्त्र पढ़ो मैं आप लोगों को समझा दूंगा। मैं कक्षा 5 तक पढ़ा था मुझे भाषण प्रवचन देना नहीं आता था। क्षुल्लक अवस्था में आचार्य महाराज का आहार हमारे घर में हुआ, आहार के बाद बोले तुम्हारी भक्ति पूजा अर्चना कार्य गज के स्थान तुल्य है देखो पूजा सत्कार्यों के द्वारा तुमने निर्मलता प्राप्ति की यह तो स्नान हुआ इसके पश्चात तुमने आरंभ कार्य में पड़कर संचय किया इसके द्वारा तुमने अपने ऊपर फिर से मिट्टी डाल दी ऐसा गृहस्थ का जीवन होता है।

आचार्य महाराज के पैरों में ध्वजा का चिन्ह था, उन्होंने धर्म की ध्वजा फहरा कर उस चिन्ह की सार्थकता घोषित की, उनके पांव में चक्र भी था इससे वे सदा भ्रमण किया करते थे, उनके शरीर में अनेक शुभ चिह्न सामूहिक शास्त्रानुसार थे, उनके हाथ में दिव्य ध्वनि की रेखा देखकर हस्त रेखा विशेषज्ञ आश्चर्य चकित होते थे।

आचार्य नमीसागर जी- आचार्य महाराज का यह पुनीत वाक्य हमेशा याद रहता है कि निर्वाण स्थान में उपवास आदि की कठिनता नहीं होती है इसी में समाधि के लिये निर्वाण भूमि पर आया हूँ।

मुझे आचार्य महाराज ने स्वप्न में दर्शन दिया था और कहा था धर्म में स्थिर रहना इधर दिल्ली की तरफ अब मत रहना यहां से जा तुम्हारे दिन नजदीक आ गये हैं अतः सावधानी रखो आचार्य महाराज चार बार मुझे सपने में आये उनकी समाधि होने पर मैंने भगवान से प्रार्थना की थी प्रभु मुझे भी ऐसी समाधि का लाभ हो।

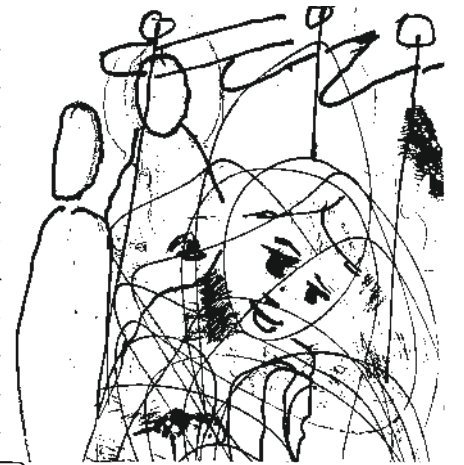
तपोमूर्ति श्री वर्धमान सागर जी- मुनि पद धारण करने के बाद आचार्य गुरुदेव के बड़े उत्तम विचार थे उनका कहना था कि हमने आत्म कल्याण के लिये यह पद ग्रहण किया है इससे आगमानुसार प्रवृत्ति के लिये मुद्रा धारण की आचार्यों ने कहा हे 28 मूलगुणों का पालन करते हुये आत्म कल्याण करो इससे मैं ऐसा करता हूँ यश मान सम्मान के लिये यह पद अंगीकार नहीं किया है। यश तथा सम्मान में क्या है आहार के पश्चात तुमने पूजा स्तुति की है या नहीं इसमें क्या है आगम कहता है मुट्टी भर अन्न खा और जा इससे आत्म कल्याण की साधना के एकमात्र उद्देश्य से हमने दिगंबर मुद्रा धारण की है।

कविता

हम हैं कठपुतली

इन्द्रकुमार जैन, बाकल वाले, इंदौर

जी हाँ कठपुतली ही हमारा नाम है हम में जान नहीं है, फिर भी कठपुतली ये पहचान सही है, निरजीव होकर भी हम हिला देते हैं उन सभी मानवों का हृदय जो हमें सुनते, देखते हैं, होकर मग्न एक लय सोया हुआ मानव हृदय, पुनः पुनः जाग जाता है मैं सैनी पंचेन्द्रिय जीव, इस संसार सागर में क्यों? कैसे? कब यहाँ आया, संशय भाग जाता है हमारा उद्देश्य केवल, कैवल्य प्राप्त कराना है इस संसार सागर की गहराई, गहरी हो या उथली हम तो कल, कल भी थे, और आज भी हैं ही खेल दिखाना की काम है, क्योंकि हम हैं कठपुतली



क्या पर्याय के बिना द्रव्य रह सकता है ?

* डॉ. पंकज कुमार जैन, भोपाल *

प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में द्रव्य के स्वरूप पर गंभीर चिन्तन मनन किया गया है। जैन दार्शनिकों ने भी द्रव्य के स्वरूप के विषय में मौलिक और विशिष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। आचार्य उमास्वामी ने सत् द्रव्यलक्षणम्' सूत्र के द्वारा द्रव्य का लक्षण सत् स्वीकार किया है। इसके बाद उन्होंने ने उत्पादव्यय ध्रौव्ययुक्तसत्' सूत्र के द्वारा सत् को उत्पाद व्यय और ध्रौव्य इन तीनों युक्त प्रतिपादित किया है। इसका कारण यह है कि दार्शनिक क्षेत्र में द्रव्य के संदर्भ में दो प्रकार की मान्यतायें विशेष रूप से प्रचलित थी एक मान्यता यह थी कि द्रव्य सर्वथा नित्य है अर्थात् उसका किसी भी प्रकार विनाश नहीं होता है और दूसरी मान्यता यह थी कि द्रव्य सर्वथा क्षणिक है अर्थात् द्रव्य प्रतिक्षण विनाशशील है। इन दोनों ही मान्यताओं से द्रव्य के स्वरूप की सम्यक् व्याख्या नहीं हो सकती है, क्योंकि ये दोनों ही मान्यताएँ एकान्त पर आश्रित हैं और द्रव्य के स्वरूप के केवल एक ही पक्ष को प्रस्तुत करने में समर्थ हैं।

जैन दर्शन द्रव्य को न तो सर्वथा नित्य स्वीकार करता है और न ही द्रव्य को सर्वथा क्षणिक मानता है। इसलिये जैनाचार्यों ने द्रव्य के स्वरूप की अनेकान्त दृष्टि से व्याख्या करते हुये उस उत्पाद व्यय और ध्रौव्यात्मक स्वीकार किया है। जैन दर्शन की दृष्टि में द्रव्य में उत्पाद और व्यय निरन्तर होता रहता है इसे जैन दर्शन में द्रव्य की परिणमन शीलता कहा जाता है। इस परिणमनशीलता को स्वीकार करते हुये भी जैनाचार्यों ने द्रव्य में ध्रौव्यत्व या स्थायित्व को भी स्वीकार किया है। द्रव्य के स्वरूप के संदर्भ जैन दर्शन की यह दृष्टि पूर्णतः मौलिक है।

जैन दर्शन में वर्णित द्रव्य के स्वरूप के संदर्भ में जब हम सत् शब्द पर व्यापक दृष्टि से विचार करते हैं तो यह निष्कर्ष निकलता है कि सत् तभी उत्पाद व्यय और ध्रौव्यात्मक हो सकता है जब द्रव्य का एक आयाम परिवर्तनशील हो और उसका एक अन्य आयाम ध्रौव्य या स्थिर हो। इसी कारण जैन दर्शन में द्रव्य के स्वरूप को एक अन्य दृष्टि से परिभाषित करते हुये आचार्य उमास्वामी जी ने लिखा है कि- गुणपर्ययवद् द्रव्यम्³। अर्थात् गुण और पर्याय वाला द्रव्य है।

इस सूत्र की व्याख्या करते हुये आचार्य पूज्यपाद ने सर्वार्थसिद्धि टीका में लिखा है कि- गुणाश्च पर्ययाश्च गुणपर्ययाः । तेऽस्य सन्तीति गुणपर्ययवद् द्रव्यम् । अत्र मतोरुत्पत्तवुक्त एव समाधिः कथंचिद् भेदोपत्तेरिति ।⁴ अर्थात् जिसमें गुण और पर्याय दोनों हैं वह गुण पर्याय वाला कहलाता है और वहीं द्रव्य है। यहाँ मतुप प्रत्यय का प्रयोग कैसे बनता है इस विषय में पहले समाधान कर आये हैं तात्पर्य यह है कि द्रव्य का गुण और पर्यायों से कथञ्चित भेद है इसलिये यहाँ मतुप प्रत्यय का प्रयोग बन जाता है।

गुण और पर्याय को परिभाषित करते हुये आचार्य पूज्यपाद ने लिखा है कि - अन्वयिनो गुणा व्यतिरेकिणः पर्यायाः । उभयैरूपेतं द्रव्यमिति । आशय यह है कि - गुण

अन्वयी होते हैं और पर्याय व्यतिरेकी। तथा इन दोनों से युक्त द्रव्य होता है। सर्वार्थसिद्धि में आचार्य पूज्यपाद ने इस प्रसङ्ग में एक प्राचीन गाथा में उद्धृत की है।

गुण इति दव्वविहाणं दव्वविकारो हि पज्जवो भणिदो ।

ते हि अणूणं दव्वं अजुदपसिद्धं हवे णिच्चं ॥ इति ॥

अर्थात् द्रव्य में भेद करने वाले धर्म को गुण और द्रव्य के विकार को पर्याय कहते हैं। द्रव्य इन दोनों से युक्त होता है। तथा वह अयुतसिद्ध और नित्य होता है। यहाँ गुण और पर्याय को स्पष्ट करते हुये आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने लिखा है कि - सामान्यापेक्षया अन्वयिनो ज्ञानादयो जीवस्य गुणाः पुद्गलादीनां च रूपादयः । तेषां विकारा विशेषात्मना भिद्यमानाः पर्यायाः । घटज्ञानं पटज्ञानं क्रोधो मानो गन्धो वर्णस्तीवो मन्द इत्येवमादयः । तेभ्योऽन्यत्वं कथंचिदापद्यमानः समुदायो द्रव्यव्यपदेशभाक् ।⁵ अर्थात् सामान्य की अपेक्षा जो अन्वयी ज्ञानादि हैं वे जीव के गुण हैं और रूपादिक पुद्गलादिक के गुण हैं। तथा इनके विकार विशेष रूप से भेद को प्राप्त होते हैं इसलिये वे पर्याय कहलाते हैं। जैसे घटज्ञान, पटज्ञान, क्रोध, मान, गन्ध, वर्ण, तीव्र और मन्द आदिक। तथा जो कथञ्चित् भिन्न हैं और समुदाय रूप हैं वह द्रव्य कहलाता है।

आचार्य अकलङ्कदेव ने राजवार्तिक में पर्याय शब्द को स्पष्ट करते हुये लिखा है कि अतो द्रव्यस्य परिणमनं परिवर्तन पर्यायः । अर्थात् द्रव्य का परिणमन- परिवर्तन पर्याय कहलाता है।

पर्याय का स्वरूप और भेद- आचार्य अकलङ्कदेव ने राजवार्तिक में लिखा है कि परि समन्तादायः पर्यायः । अर्थात् जो सर्व ओर से भेद को प्राप्त करे सो पर्याय है। आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने पर्याय शब्द के समानार्थक शब्दों पर प्रकाश डालते हुये लिखा है कि- ववहारो वियप्पो भेदो तह पज्जओत्ति एयट्ठो । अर्थात् व्यवहार, विकल्प, भेद और पर्याय ये सब एकार्थ हैं।

जैनाचार्यों ने पर्याय के भेद अनेक प्रकार से किये हैं- जैसे सहभावी पर्याय व क्रमभावी पर्याय, द्रव्य पर्याय और गुणपर्याय अर्थ पर्याय व व्यञ्जन पर्याय एवं स्वभाव पर्याय और विभाव पर्याय आदि।

वसुनन्दी श्रावकाचार में अर्थ पर्याय ओर व्यञ्जन पर्याय का स्वरूप स्पष्ट करतेहुये लिखा है कि-

सुहुमा अवायविसया खणखइणो अत्थपज्जयादिट्ठा ।

वंजणपज्जा पुण थूलागिरिगोयरा चिरविवत्था ॥⁶

अर्थात्- अर्थ पर्याय सूक्ष्म है, अवाय (ज्ञान) विषयक है, अतः शब्द से नहीं कहीं जा सकती है और क्षण-क्षण में बदलती हैं, किन्तु व्यञ्जन पर्याय स्थूल है, शब्द गोचर है अर्थात् शब्द से ही जा सकती है और चिरस्थायी है।

यदि हम जीव की स्वभाव और विभाव पर्याय पर दृष्टि डालते हैं तो ज्ञात होता है कि देवता मनुष्य, नारकी, तिर्यञ्च ये जीव की विभाव व्यञ्जन पर्याय हैं और जीव की सिद्धरूप पर्याय

स्वभाव पर्याय है। पञ्चास्तिकाय में आचार्य कुन्दकुन्द देव ने लिखा है कि-
सुरणरणायरतिरियां जीवस्य य पज्जया बहुगा।⁷

नियमसार में लिखा है कि - **णरणारयतिरियसुरा पज्जाया ते विभावमिदि भणिदा।⁸**
अर्थात् मनुष्य, नारक, तिर्यञ्च और देवरूप पर्यायों जीव द्रव्य की विभाव पर्यायों कहीं गयी हैं।

आलापपद्धतिकार आचार्यदेवसेन ने लिखा है कि- **स्वभावद्रव्यव्यञ्जनपर्यायाश्चरम शरीरात् किं चिन्यूनसिद्धपर्यायाः।⁹** अर्थात् चरम शरीर से किञ्चित् न्यून तो सिद्ध पर्याय है वह स्वभाव द्रव्य व्यञ्जन पर्याय है।

प्रवचनसार में आचार्य कुन्दकुन्द देव ने स्पष्ट लिखा है कि-

कम्मं णाम समक्खं सभावमद्य अप्पणो सहावेण।

अहिभूय णरं तिरियं णेरइयं वा सुरं कुणदि।¹⁰

अर्थात् नाम संज्ञा वाला कर्म अपने कर्म स्वभाव से आत्मा के स्वभाव को देखकर मनुष्य तिर्यञ्च नारक अथवा देवरूप कर देता है।

प्रवचनसार में ही आचार्य कुन्दकुन्द देव ने लिखा है कि-

उप्पादट्टिदिभंगा विज्जंते पज्जयेसु पज्जाया।

दव्वं हि संति णियदं तम्हा दव्वं हवदि सव्वं।¹¹

अर्थात् उत्पाद ध्रौव्य और व्यय पर्यायों में वर्तते हैं और पर्यायों निश्चित ही द्रव्य में रहती हैं। अतः वह सब द्रव्य हैं।

द्रव्य के परिणमन के सन्दर्भ में प्रवचनसार की यह गाथाएँ उल्लेखनीय हैं-

परिणमदि जेण दव्वं तक्काले तम्मए त्ति पण्णत्तं।

तम्हा धम्मपरिणदो आदा धम्मो मुणेदव्वो।¹²

अर्थात् द्रव्य जिस समय जिस भावरूप से परिणमन करता है उस समय द्रव्य उसी भावमय हो जाता है इस प्रकार कहा गया है। इस कारण से धर्म से परिणत आत्मा को धर्म ही जानना चाहिये।

जीवो परिणमदि जदा सुहेण असुहेण वा सुहो असुहो।

सुद्धेण तदा सुद्धो हवदि हि परिणाम सव्वभावो।¹³

अर्थात्- जब यह जीव शुभ अथवा अशुभ भावों से परिणमन करता है तब यह जीव ही शुभ अथवा अशुभ होता है और जब शुद्ध भावों कर परिणमन करता है तब शुद्ध होता है, क्योंकि परिणाम का सद्भाव ऐसा ही होता है।

पज्जयमूढा हि परसमया- आचार्य कुन्दकुन्द देव ने प्रवचनसार में लिखा है कि पज्जयमूढा हि परसमया¹⁴ अर्थात् पर्यायमूढ जीव परसमय है। इसकी व्याख्या करते हुये आचार्य प्रभाचन्द्र ने सरोज भास्कर टीका में लिखा है कि - सर्वज्ञप्रकाशितेषु समस्तार्थद्रव्यगुणपर्यायेषु मूढा यथावत्स्वरूपाप्रतिपत्तिलक्षण-मोहग्रस्ताः द्रव्यमेव पर्यायमेव तयोरत्यन्तभेद एवाभेद एव

वेत्यादि विपर्यासमात्रावलम्बिनः परसमया इति। अर्थात् सर्वज्ञ के द्वारा कहे गये सभी पदार्थों की द्रव्य गुण और पर्यायों में यथावत् स्वरूप का ज्ञान न कराने वाले मोह से ग्रस्त हुये जीव यह द्रव्य ही है, यह पर्याय ही है, इन दोनों में एकान्त से भेद ही है अथवा दोनों में अभेद ही है इत्यादि रूप से विपरीत ज्ञान को धारण करने वाले परसमय कहलाते हैं।

हमें आचार्य कुन्द कुन्द देव का यह कथन भी ध्यान रखना चाहिये कि जो अनेकान्त दृष्टि से द्रव्य-गुण-पर्याय को जानता है वही अपनी आत्मा को जानता है। आचार्य देव ने प्रवचनसार में लिखा है कि -

जो जाणदि अरहंत दव्वत्त-गुणत्त-पज्जयत्ते हिं।

सो जाणदि अप्पाणं मोहो खलु जादि तस्य लयं।¹⁵

अर्थात्- जो अरहंत को द्रव्यपने, गुणपने और पर्यायपने से जानता है वह अपने आत्मा को जानता है और उसका मोह अवश्य लय को प्राप्त हो जाता है।

उपर्युक्त संदर्भों से यह स्पष्ट है कि द्रव्य गुण पर्याय के अन्तः सम्बंध की सम्यक् व्याख्या अनेकान्त दृष्टि से ही संभव है, क्योंकि जैनदर्शन में द्रव्य और पर्याय में कथञ्चित् भेद है और कथञ्चित् अभेद भी है। एकान्त दृष्टि से द्रव्य और पर्याय में न तो पूर्णतः भेद स्वीकार किया जा सकता है और न ही इसमें पूर्णतः अभेद माना जा सकता है। न तो पर्याय के बिना द्रव्य का अस्तित्व संभव है और न ही द्रव्य के अभाव में पर्याय विद्यमान रह सकती हैं। आचार्य कुन्द कुन्द देव का स्पष्ट कथन है कि-

पज्जयविजुदं दव्वं दव्वविजुत्ता य पज्जया णत्थि।

दोणहं अणण्णभूदं भावं समणा परूवित्ति।¹⁶

अर्थात् पर्यायों रहित द्रव्य और द्रव्यरहित पर्याय नहीं होती। दोनों का अनन्य भाव (अनन्यपना) श्रमण प्ररूपित करते हैं।

द्रव्य और पर्याय के इस अनन्य सम्बन्ध की व्याख्या जैनदर्शन में अनैकान्तिक दृष्टि से करने के लिये नयपद्धति की प्ररूपणा की गयी है। पर्यायार्थिकनय और द्रव्यार्थिकनय के माध्यम से द्रव्य और पर्याय के स्वरूप की सर्वाङ्गीण व्याख्या की गयी है। जयधवला में लिखा हुआ है कि-

उप्पज्जंति वियंति य भावा णियमेण पज्जवणयस्य।

दव्वट्टियस्स सव्वं सदा अणुप्पण्णविणट्ठं।¹⁷

अर्थात्- पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा द्रव्य नियम से उत्पन्न होते हैं और नाश को प्राप्त होते हैं तथा द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा वे सदा अविनाशी अनुत्पन्न स्वभाव वाले हैं।

ये दोनों ही नय द्रव्य और पर्याय की सापेक्ष दृष्टि से करते हैं। जब द्रव्यार्थिक नय की प्रधानता होती है तब पर्यायार्थिक नय गौण हो जाता है। द्रव्यार्थिक नय कभी पर्यायार्थिक नय का निषेध नहीं करता है। इसी प्रकार पर्यायार्थिक नय की प्रधानता में द्रव्यार्थिक नय केवल गौण रहता है उसका निषेध नहीं होता है। इन नयों के सन्दर्भ में एकान्त दृष्टि का खण्डन करते हुये जयधवला में लिखा है कि-

णय दव्वट्टियपक्खे संसारो णेव पज्जवणयस्स ।

सासयवियत्तिवायी जम्हा उच्छेदवादीया ॥¹⁸

अर्थात् - द्रव्यार्थिक नय के पक्ष में संसार नहीं बन सकता है। उसी प्रकार सर्वथा पर्यायार्थिक नय के पक्ष में भी संसार नहीं बन सकता है। क्योंकि द्रव्यार्थिक नय नित्यत्वव्यक्तिवादी है और पर्यायार्थिक नय उच्छेदवादी है।

अंत में द्रव्य और पर्याय के अन्यान्यत्व के विषय में निष्कर्षरूप से यह कहा जा सकता है कि पर्याय के बिना कभी भी द्रव्य का अस्तित्व संभव नहीं है और न ही द्रव्य के अभाव में पर्याय की सत्ता भी संभव नहीं है। इससे द्रव्य और पर्याय के संदर्भ में यह भ्रान्ति स्वतः निराकृत हो जाती है कि जीव द्रव्य तो त्रैकालिक शुद्ध है और अशुद्धि केवल उसकी पर्यायों में है, क्योंकि पर्यायों से भिन्न किसी द्रव्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि जीव स्वभाव पर्याय और विभाव पर्याय दोनों ही होती है। संसारी और सिद्धत्व की शक्ति की अपेक्षा न होकर गुणों की अभिव्यक्ति होने पर ही होता है। आशय यह है कि भले की प्रत्येक जीव में सिद्धत्व प्राप्ति की शक्ति हो, परन्तु जीव में सिद्धत्व पर्याय प्रकट होने पर ही वह पूज्य बनता है। इसलिये द्रव्य की पर्यायों को यथार्थरूप से जानकर उनमें तदनुरूप श्रद्धा रखनी चाहिये।

संदर्भ सूची-

1. तत्त्वार्थ सूत्र 5/29- आचार्य उमास्वामी
2. तत्त्वार्थ सूत्र 5/30 आचार्य उमास्वामी
3. तत्त्वार्थ सूत्र 5/38 आचार्य उमास्वामी
4. तत्त्वार्थ सूत्र 5/38 आचार्य पूज्यपाद
5. सर्वार्थसिद्धि 5/38/600 पृ. 237- आचार्य पूज्यपाद
6. वसुनन्दि श्रावकाचार श्लोक - 25 आचार्य वसुनन्दि
7. पञ्चास्तिकाय गाथा- 16 आचार्य कुन्दकुन्द
8. नियमसार, गाथा- 15 आचार्य कुन्दकुन्द
9. आलाप पद्धति 3 - आचार्य देवसेन
10. प्रवचनसार- 127- आचार्य कुन्दकुन्द
11. प्रवचनसार 111- आचार्य कुन्दकुन्द
12. प्रवचनसार गाथा 8- आचार्य कुन्दकुन्द
13. प्रवचनसार गाथा 9 - आचार्य कुन्दकुन्द
14. प्रवचनसार गाथा 103- आचार्य कुन्दकुन्द
15. प्रवचनसार गाथा 86- आचार्य कुन्दकुन्द
16. पञ्चास्तिकाय गाथा 11- आचार्य कुन्दकुन्द
17. जयधवल पुस्तक - 1 पृ. 248
18. जयधवल पुस्तक - 1 पृ. 249

चलो देखें यात्रा

चंद्रप्रभ का धाम तिजारा

तिजारा (देहरा)

महत्व एवं दर्शन:- क्षेत्र देहरा तिजारा के नाम से प्रसिद्ध है। सन् 1956 में सड़क खुदाई के समय भगवान चंद्रप्रभु भगवान की मूर्ती प्रकट हुई थी। वर्तमान में एक विशाल केम्पस में एक विशाल हॉल में स्थापित है। मुख्य वेदी के सामने मान स्तम्भ है। भगवान के प्रकट के स्थान पर चरण चिह्न बने हुये है। सम्पूर्ण मंदिर का बाह्य शिल्प अनुपम है। मंदिरों की संख्या 3 है। पास में मंदिर के बाहर चंद्रवाटिका का निर्माण किया है जो मंदिर परिसर के बगल में है। विशाल परिसर में आधुनिक धर्मशाला निर्मित हो गयी है। सामने ऊँचाई पर चंद्राप्रभु की विशाल मूर्ती एवं दायें बायें चौबीसी का निर्माण हुआ है। प्रतिमा के सामने सुंदर उद्यान है। शहर से कुछ दुर (5 किमी) पहाड़ पर प्राचीन दुर्ग है। मेन मंदिर के बाहर अच्छा मार्केट है। नगर में अन्य जिनालय भी दर्शनीय है।

क्षेत्र पर आवास एवं भोजन की अत्याधुनिक व्यवस्थायें उपलब्ध हैं।

समीपवर्ती स्थल: अलवर ऐतिहासिक एवं प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है।

नवग्रह मंदिर: आचार्य बाहुबली महाराज की प्रेरणा से नवनिर्मित नवग्रह जिनालय का निर्माण बायपास रोड़ से तिजारा शहर के रास्ते में, दर्शनीय है। रजत रथ भी आकर्षक है। आवास एवं भोजन अभी उपलब्ध नहीं है।

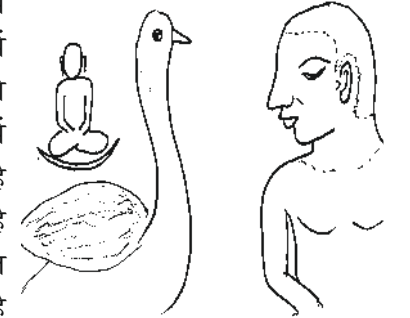
मैनेजर: भीराव मो. 9887161100 सम्पर्क: राजकुमार जैन गुड़गांव- 98100822447

कविता

अहिंसा धर्म सच्चा

✽ संस्कार फीचर्स ✽

सुगंधी लो तुम फूलों की कहाँ उलझे हो शूलों में करो रसपान शीतल जल कहाँ उलझे हो कूलों में धर्म तो कुम्भ अमृत का नहीं इसमें जहर घोलो अहिंसा धर्म सच्चा है, कहाँ उलझे हो पंथों में मंदिरों में अगर झगड़े अमर फिर किस जगह से है अमन के वास्ते मंदिर धर्म फिर किस वजह से है धर्म तो साँच है सुन्दर झूठ तो छल कपट फितरत छोड़ दो पाप सब मन के, धर्म तो इस तरह से है



हथकरघा के विस्तार की दिशा

✽ एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज ✽

वस्त्र मानव की अनिवार्य आवश्यकता परन्तु मानवीय वैभव प्रदर्शन की प्रवृत्ति वस्त्र की अनिवार्य आवश्यकता की सीमा को लांघकर वस्त्र को विलासता की आवश्यकता के रूप में परिणत कर देता है। वस्त्र की विलासलता अहिंसक स्वदेशी वस्त्र को भूलकर विदेशी हिंसक वस्त्रों को अपनाने लगता है आजादी के मसीहा महात्मा गांधी ने आजादी का मायना सिद्ध करने के लिये विदेशी वस्त्रों की पहले पहल होली जलवायी फिर चरखा और हथकरघा को अंग्रेजों के विरुद्ध शास्त्र के रूप में प्रस्तुत किया खादी को आजादी की निशानी और विदेशी वस्त्रों को गुलामी का चिह्न बापू ने प्रतिपादित किया। राजनैतिक सामाजिक आर्थिक नैतिक धार्मिक क्षेत्र में वस्त्र गहरा प्रभाव डालता है। रोटी के बाद यदि किसी वस्तु की मानव मात्र को चिन्ता सताती है तो वह वस्त्र की ही चिन्ता होती है।

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखें तो वैदिक काल में घर-घर खादी के वस्त्र बुने जाते थे। ऋग्वेद ऋचा 3/26/5, 5/57/1, 9/99/1, 9/96/1, 1/21/152/1 दृष्टव्य है। जिनमें वस्त्रों के माध्यम से राजा मंत्री सेनापति आदि को पहचान होती थी। धोती चादरें तथा अंग वस्त्र, रगीन वस्त्र, किनारीदार वस्त्र और महीन वस्त्रों को बनाने का काम महिलायें करा करती थी पहले खादी वस्त्र का अर्थ मोटे कपड़े से लिया जाता था किन्तु हुनरदार ढाँक के कारीगरों ने खादी में अपनी कला को अंजाम दिया और ढाँका का कपड़ा ऐसा बन पड़ा जैसे इसे मनुष्यों ने नहीं देवताओं ने बनाया हो। यवनकाल में खादी में आश्चर्यजनक उन्नति हुई। स्वतंत्रता के पूर्व भारत में खादी का आंदोलन गति पकड़ता गया साथ सरकारी दमन भी चलता रहा।

विदेशी कपड़े को पाप समझना चाहिये और स्वदेशी कपड़े को धर्म क्योंकि वर्तमान में सूत जो मटनटेलों का संस्कार दिया जाता है मटनटेलों से संस्कारित कपड़ा पानी छानने के योग्य नहीं होता तथा भगवान का प्रक्षाल करने को भी वर्जनीय माना जायेगा आगे अगर हम कहें तो यह भी कह सकते हैं मटनटेलों का कपड़ा रूमाल बनाने के योग्य नहीं है क्योंकि ऐसे कपड़े से मुख पोंछना भी ठीक नहीं है।

हथकरघा स्वदेशी तंत्र का आधार है इसी माध्यम से बेरोजगार युवक और महिलाओं के हाथों में रोजगार की नई उम्मीदें हथकरघा से उपलब्ध हो रही है, हुनरदार महिला प्रशिक्षण काल में नौ हजार रूपये प्रतिमाह प्राप्त कर सकेंगे ये ही कलाकार पैतालीस हजार रूपये प्रतिमाह तक अपने काम और कला के आधार पर बढ़ा सकेंगे जिससे कि अहिंसक

समाज के लिये आत्मनिर्भर रोजगार प्राप्त होगा अपने स्वाभिमान को कायम रखने में हथकरघा शिल्प गहरी भूमिका प्रदान करता है।

भारत के प्रसिद्ध जेलों में हथकरघा निवेश का जो प्रस्तुति-करण दिया गया है वह चमत्कारिक घटना है।

क्र.	जेल का नाम	कार्यरत कैदी संख्या	उत्पादन विशेषता	हथकरघा संख्या
01	के. जेल सागर	63	महेश्वरी+चंदेरी साड़ी	54
02	के. जेल तिहाड़	52	धोती दुपट्टा+6 पैडल वविल	45
03	के. जेल बनारस	23	बनारसी साड़ी, पटोला कडियल	18
04	जिला जेल मथुरा	27	बूटि साड़ी	22
05	जिला जेल मिर्जापुर	22	दरी एवं कालीन	18
06	के. जेल आगरा	44	बूटि एवं जाला साड़ी	40

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी की मंगल प्रेरणा से उनके ही आशीष के तले संचालित हथकरघा केन्द्रों में श्रमदान बीनाबारहा, कुण्डलपुर, भोपाल, मंडला, अशोकनगर, पपौरा एवं हथकरघा केन्द्र के अंतर्गत सक्रिय सम्यग्दर्शन के तहत परस्वाहा, डिंडोरी, मुंबई नारी, जुगूल, शिरड, शहापुर, एलोरा, शहपुरा (भिटौनी), कारंजा, बारासिवनी, रनाला बनवार आदि 20 केन्द्र एवं लगभग 300 उत्पादन केन्द्र।

हथकरघा वस्त्र गर्मी में ठण्डा एवं ठण्डी में गरम होता है। तथा जीन्स से मोटा रोग एवं मोटापा दोनों वृद्धि होती हैं तथा यौन रोग में वृद्धि होती है। एवं कई दृष्टि से मटन टेलों वस्त्र स्वास्थ्य के लिये प्रतिकूल होता है। आर्थिक दृष्टि से हथकरघा वस्त्र बहुत किफायती होता है। विभिन्न रंगों एवं फैशनों में हथकरघा वस्त्र बहुत चरम पर पहुंच रहा है। हर देखने वाले व्यक्ति को तुरंत पसंद आता है। डिजाईनों की विविधता हर ग्राहक को त्वरित आकर्षित करता है। पर्यावरण रक्षा में हथकरघा वस्त्र सदैव सहयोगी है। जल प्रदूषण वायु प्रदूषण को रोकने में हथकरघा का बहुत बड़ा योगदान है।

राष्ट्रीय गरीबी एवं बेरोजगारी मिटाने में हथकरघा की महनीय भूमिका स्वीकार्य करना उचित ही होता अतः हथकरघा वस्त्र का प्रचार करना मानवता के प्रति एवं मानव अधिकार के प्रति श्रेष्ठ उपक्रम है।

प्रवचन- ग्रहण और पाचन में अंतर

✽ आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ✽

गाय प्रातः जंगल की ओर जाती है और भिन्न-भिन्न स्थानों में जाकर चारा जो घास-फूस आदि जो उपलब्ध होता है उसे चरना प्रारंभ कर देती है। उनको कोई थाली नहीं परासेता और ना ही किसी विद्यालय में उनको सिखाया जाता है कि क्या खाना, क्या पीना है। जंगल में भिन्न-भिन्न वनस्पति होती है लेकिन गाय सूंघकर केवल खाने योग्य वनस्पति का ही सेवन करती है और जो खाने योग्य नहीं होती (विषाक्त वनस्पति) का सेवन नहीं करती है। सूखा खाती है हरी को देखती तक नहीं और आपको सुखा तो कभी पसंद आता नहीं। आहार संज्ञा एक ऐसी संज्ञा है जिसमें हेय और उपादेय का बोध आपको करना पड़ता है। दिन में खाती है और रात में जुगाली के माध्यम से पचाती है। उदाहरण के माध्यम से आचार्य श्री ने बताया की गाय रात में उसका चरबन करके लार से समिश्रण कर दिनभर उसे पचा देती है। खाना अलग वस्तु होती है और पचाना अलग है। पचाये बीना रक्त आदि में परिवर्तित नहीं होता है। पचाने में विलंभ होता है तो वह जब तक पूरा नहीं पचेगा तब तक नये शिरे से नहीं खाती। बीच-बीच में डकार भी लेती है। स्वास और निःस्वास के माध्यम से वायु को ग्रहण और निष्कासित कर देती है। सारी क्रियाएं बिना प्रशिक्षण और बिना विद्यालय के होती है। आहार संज्ञा मतलब इच्छा का होना। बच्चों को जब तक नहीं खिलाना जब तक उनकी इच्छा ना हो। ग्रहण और पाचन में अंतर है। श्रमणों को भी समझना चाहिये कि हम कहा अवैध रूप से काम कर रहे हैं। दिन में गाय, पशु, पक्षी खाकर आ जाते हैं और चरबन (जुगाली) करते हैं। जो चरबन नहीं करते वे बिल्ली, कुत्ता, सिंह, खरगोश आदि होते हैं।

इसी प्रकार आप लोगों को जो दिन में पढ़ाया/स्वाध्याय नहीं करना चाहिये। यदि कही लाइट पहले से जल रही हो और आप उसके नीचे जाकर पढ़ते हैं तो उस लाइट के द्वारा हो रहे जीवों के घात के दोष में आप भी भागीदार होंगे। हमारी सेवा के लिये सूर्य देवता नियुक्त है और आप लोग उसके सामने से भाग जाते हो। हम तो आप लोगों से ही परहेज करते हैं। दिन के 12 घंटे समय पर्याप्त है सभी कार्य करने के लिये और रात के 12घंटे सभी कार्य और सभी जनों से परहेज हो जाता है। विशेष ग्रंथ के स्वाध्याय के बाद चर्चा करते हैं। जिस प्रकार विशेष भोजन विशेष बच्चों को ही दिया जाता है जो इसे अच्छे से पचा सके उसी प्रकार विशेष ग्रंथ का स्वाध्याय हर किसी को नहीं कराया जाता है।

इसके लिये भी योग्य व्यक्ति का होना आवश्यक है। पहले हमने जो धर्मोपदेश दिया है उसको पहले समझों और दूसरों को भी पढ़ाओं तब आगे और देंगे। जो वर्षों पढ़कर प्राप्त नहीं होता वो 15 मिनट या आधा घंटे के प्रवचन में प्राप्त हो जाता है। हमारे लिये कहा गया है कि जो पाठ्यक्रम में है उसी को पढो और पूछो। दूसरे के प्रश्न को बार-बार घूमा-घूमा कर मत पूछो।

इससे आपका कुछ भला होने वाला नहीं है। ग्राहकों की पहचान समझते हो। ग्राहकों को मनाना सीखो। व्यवहार मीठे रखो। नाती के उग्र वाले को भी ददा कहो, कक्का कहो। ये सब विद्यालय के बिना हुआ। आपके पास भी संज्ञा है और उसके पास भी संज्ञा है। माँ ज्यादा रसोई नहीं बनाती ताकि बच्चा और न मांगे। मांग ले तो बेटा कल। तो बेटा सोचता है कि कल और नये व्यंजन खाने को मिलेंगे। माँ जानती है कि बच्चा यदि ज्यादा खायेगा तो उसे पचा नहीं पायेगा और बीमार हो जायेगा। इसलिये कल की छुट्टी करने की अपेक्षा कम खाओ। समय के अनुसार भूख लगती है तो समय पर भोजन करना चाहिये नहीं तो भूख मर जाती है फिर खाने की इच्छा नहीं होती फिर बिना इच्छा के खाओगे तो उल्टी हो जायेगी।

उसी प्रकार जितना स्वाध्याय करे हो पहले उसका चिंतन करो फिर आगे का सोचो तभी उसकी सार्थकता है। कृत, कारित, अनुमोदन यह महत्वपूर्ण कारण माने जाते हैं। जीवों के वध में वध हो रहे हैं और वहाँ आप कुछ कहते नहीं तो आप उसे समर्थन दे रहे हो।

कविता

तर्ज- मेरे नयना सावन भादों

कब गुरु दर्शन पाये

✽ संस्कार फीचर्स ✽

गुरु दर्शन को प्यासी अँखियाँ, पल पल नीर बहावे

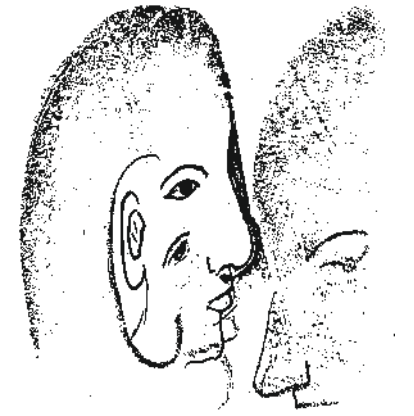
कब गुरु दर्शन पाये

ज्ञान चरण सदृदर्शन दे गुरु मुक्ति पथ दरशाते
आतम हित में लीन रहे नित ज्ञानामृत बरसाते
विषयों की आशा नहीं जिनके उनके चरण पखारे
कब गुरु दर्शन पाये

भेष दिगम्बर इन गुरुवर का त्याग तपस्या धारी
मोह की तोड़ी बड़ी जंजीरे जीता काम को भारी
विषय वासना मन नहीं जिनके गीत सदा हम गावे
कब गुरु दर्शन पाये

बन के पपीहो पीहू पीहू करता गुरुवर भक्त हो तेरा
माला जपता गुरुवर तेरी हो चाहे सांझ सबेरा
मुक्ति पथ गुरु छूट न जाये, अपना शिष्य सहारे
कब गुरु दर्शन पाये

गुरुवर दूर कहीं नहीं जाना सिलवानी फिर आना
समवसरण का बना है मंदिर पंचकल्याणक कराना
गुरु चरणन् में बैठे श्रावक गुरु महिमा ही गावें
कब गुरु दर्शन पाये



मोबाईल से नवजात पीढ़ी, युवा पीढ़ी में भटकाव

* विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.) *

आधुनिक संचार क्रांति के युग में युवाओं की सोच रचनात्मक होने की अपेक्षा दूषित हो रही है। युवाओं की दिनचर्या में बदलाव आ गया है। प्रतिस्पर्धा एवं बढ़ती महंगाई के दौर में माता-पिता की जिम्मेदारी बढ़ गई है। पति पत्नी दोनों नौकरी कर रहे हैं यह उनका शौक नहीं बल्कि परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यक हो गया है।

पति-पत्नी की व्यस्तता, बदलती जीवन शैली एवं नई सोच ने बालक, माता-पिता संबंधों को दिशाहीन बना दिया है। पुराने जमाने की अपेक्षा आज अभिभावक बनना चुनौती पूर्ण कार्य हो गया है।

संयुक्त परिवार होते थे परिवार में 20 से 30 सदस्य साथ रहते थे, संयुक्त परिवार की परंपरा समाप्त हो गई है। एकल परिवार में माता पिता नौकरी करते हैं। परिवार में छोटा बच्चा है तो माता के नौकरी पर जाने की मजबूरी के चलते बच्चों को झूलाघर नौकर अथवा आया के सहारे दिन भर छोड़ जाते हैं। आर्थिक दृष्टि से नौकरी करना उनकी मजबूरी बन गयी है परिवार में दादा-दादी, ताई-ताऊ, चाचा-चाची, बुआ साथ नहीं होते हैं।

आधुनिक संचार क्रांति के लगभग सभी उपकरण परिवार में बच्चों को उपलब्ध रहते हैं टी.वी, डेस्कटॉप, लैपटॉप, टेबलेट, मोबाईल आदि के साथ बचपन में बच्चों का अधिकांश समय व्यतीत होता है। आज के पालकों, अभिभावकों, माता-पिता की सबसे बड़ी चिंता है कैसे बच्चों को भटकने से बचाया जाये, समय की मांग है कि उन्हें लैपटॉप एवं मोबाईल दिया जाना चाहिये, छोटे-छोटे बच्चे जिनकी उम्र दो या तीन वर्ष होती है वे भी जिद करके मोबाइल चलाते हैं। छोटे बच्चे मोबाइल पर कार्टून आँखें गड़ाकर देखते हैं, नई पीढ़ी की बचपन से ही नेत्र ज्योति कमजोर हो रही है। चश्मा लगाना मजबूरी हो गयी। बच्चे बड़े होकर कम्प्यूटर चलाते हैं, मगर माता-पिता यह नहीं समझ पाते कि उनका बच्चा कम्प्यूटर का उपयोग करते करते कब अश्लील गतिविधियों या गलत मित्रों के जाल में फंसकर गलत रास्ते पर बढ़ रहा है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स या पोर्न साइट्स देखना बहुत आसान है। माता-पिता सोचते हैं शांति है बच्चे कम्प्यूटर से ज्ञान अर्जित कर रहे हैं। माता-पिता को पता नहीं बच्चे छिपकर कुछ और ही कर रहे हैं।

इंटरनेट पर सोशल साइट्स के युवाओं द्वारा उपयोग करने से साइबर अपराध अथवा बुलिंग के प्रकरण बढ़ रहे हैं। एक सर्वेक्षण में अनेक तथ्य प्रकाश में आये हैं। केवल 23%

पालकों ने स्वीकार किया कि उनके बच्चे सोशल साइट्स देखते हैं। जबकि 53% बच्चों ने स्वीकार किया कि वे ऐसी साइट्स नियमित रूप से देखते हैं। 1500 भारतीय अभिभावकों व किशोरों पर किये गये गोपनीय सर्वे के अनुसार 20% किशोरों ने स्वीकार किया कि वे एक दिन में कई पोर्न साइट्स देखते हैं। 70% अभिभावकों ने पूरे विश्वास से कहा उनके किशोर बच्चे ऑनलाईन क्या कर रहे हैं, इसकी पूरी जानकारी उन्हें देते हैं। जबकि 58% किशोरों ने कहा वे अपने अभिभावकों से ऑनलाईन गतिविधियों की जानकारी छुपाते हैं।

मेरे एक मित्र ने नाम न बताने की शर्त पर मुझे जानकारी दी उनकी 15 वर्षीय बेटिया घर से बाहर जाने एवं मित्रों से मिलने से कतराने लगी, पहले उन्होंने ध्यान नहीं दिया, एक दिन सुबह उसकी आँखों पर सूजन देखकर चिंतित हुये, बेटी रोते-रोते घबरा गई। उन्होंने मनोचिकित्सक को बुलाया। मनोचिकित्सक के बार-बार समझाने पर उसने बताया कोई अनजान व्यक्ति उसे अश्लील ई-मेल भेज रहा है और धमकी भरे कॉल कर निरंतर परेशान कर रहा है। उन्होंने बेटी का ई-मेल पता बदला तब कई महिनो बाद बेटी सामान्य हुई।

एक अन्तर्राष्ट्रीय कंपनी द्वारा कराये गये सर्वे के अनुसार चीन सिंगापुर के बाद भारत में साइबर बुलिंग की घटनाएं सबसे ज्यादा हो रही हैं। बाल अपराध भी तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चे बलात्कार, हत्या, धोखाधड़ी, लूटमार के मामलों में फंस रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार हर वर्ष 95 हजार से एक लाख बाल अपराधी पकड़े जाते हैं। जिनमें 35 से 40 हजार लड़के और लगभग 2 से 4 हजार लड़कियाँ होती हैं। 20-25 वर्ष पहले तक बच्चे घर से बाहर मैदान या पार्क में खेलने जाते थे। साइकिल आदि चलाते थे, व्यायाम आदि शारीरिक गतिविधियों में व्यस्त रहते थे। मगर अब सब परिवर्तन हो गया है। बच्चे टी.वी इंटरनेट, वीडियो गेम में व्यस्त हो जाते हैं। तीव्र गति से बढ़ रहे आधुनिक प्रौद्योगिक साधनों से बढ़ती उम्र के बच्चों पर विपरीत प्रभाव हो रहा है। बच्चों में शारीरिक मनोवैज्ञानिक अव्यवहारिक असामान्यतायें बढ़ रही हैं।

एक प्रसिद्ध रिसर्च कंपनी के द्वारा 18 हजार वरिष्ठजनों जिनमें 6500 पालक, अभिभावक थे सर्वे किया। रिपोर्ट के अनुसार सबसे ज्यादा साइबर बुलिंग सोशल नेटवर्किंग साइट्स जैसे फेसबुक आदि पर होती है। 32% भारतीय अभिभावकों ने स्वीकार किया कि उनके बच्चों के साथ साइबर बुलिंग हो चुकी है। वर्तमान में पालकों माता-पिता, अभिभावकों को पता है उनके बच्चे साइबर बुलिंग के शिकार हो रहे हैं, अथवा हो गये हैं, वे इसको रोकने, अपने बच्चों को सही मार्ग पर लाने सुनियोजित प्रयास नहीं कर पा रहे हैं। इस

सबका दुष्परिणाम यह हो रहा है युवा पीढ़ी का जीवन दिशाहीन हो रहा है अथवा अवसाद डिप्रेशन में है। यहाँ कुछ ऐसे उपाय सुझाने का प्रयास कर रहे हैं जिनसे पीड़ित को सही मार्ग पर लाया जा सकता है। आपको पला चले कि आपका बेटा या बेटी पोर्न फिल्मों देखता है अथवा अश्लील साइट्स देखता है उसे भूलकर भी न डाँटे, उसे अन्य कार्यों में व्यस्त करने का प्रयास करें। बच्चों को एक बार मनावैज्ञानिक चिकिस्तक से अवश्य मिलायें। उसके मित्रों का पता रखें तथा यह ध्यान रखें कहाँ जा रहा है। किन-किन से मिल रहा है। बच्चे का डाटना बंद करें। दूसरे बच्चों से अपने की तुलना न करें इस कार्य से बच्चे के मन में हीन भावना आती है।

वर्तमान में परिवार में नवजात दो एक या दो वर्ष का हो जाता है वह अपनी मम्मी से मोबाइल लेकर मोबाइल चलाने लगता है। मम्मी भी अपनी व्यस्तता में सोचती है, अच्छा है परेशान करने की अपेक्षा मोबाइल पर गेम देखता रहेगा। यहीं से छोटे-छोटे बच्चों में मोबाइल की लत बढ़ जाती है। हाल ही में गुना जिले में जामनेर नगर में एक दिल दहला देने वाली घटना हुई। लगभग आठ या नौ वर्षीय बालक ने अपने पिता से मोबाइल मांगा। पिता द्वारा मना करने पर उक्त बालक ने पिता के मूँह में फेविकोल भरकर मूँह बंद किया। फिर चाकू से कई बार हमला कर पिता की हत्या कर दी। आगरा नगर में विराजमान सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी जैन संत मुनि सुधासागर जी से उनके लोकप्रिय जिज्ञासा समाधान टी.वी प्रसारण में गत दिन मोबाइल के बढ़ते दुरुपयोग से बचने मार्गदर्शन चाहा, मुनिराज ने कहा मोबाइल आज हर परिवार में आवश्यक उपकरण बन गया है। परिवार के सभी सदस्य चाहे बड़े हों या छोटे सभी मोबाइल आज हर परिवार में आवश्यक उपकरण बन गया है। परिवार के सभी सदस्य चाहे बड़े हों या छोटे सभी मोबाइल में व्यस्त रहते हैं। पारिवारिक आत्मीयता, रिश्ते, नाते सभी को मोबाइल ने समाप्त कर दिया है। सुधासागर जी ने कहा उनके सान्निध्य में हर वर्ष जैन श्रावक संस्कार शिविर सितम्बर या अक्टूबर माह में आयोजित किया जाता है। शिविर में सारे देश के हजारों जैन बन्धु दस दिन तक धर्म साधना करते हैं। इस शिविर में दस दिन शिविरार्थियों को मोबाइल का उपवास रहता है। मुनि सुधासागर जी ने आन्हान किया है समाज विशेष कर युवा पीढ़ी को मोबाइल के दुष्परिणामों से बचाने के लिये महिने में कम से कम चार दिन मोबाइल का त्याग या मोबाइल के उपवास का वृत लेना समय की आवश्यकता है। परिवार में माता-पिता का दायित्व है कि बचपन से ही बच्चे को क्षमायाचना, साँरी, थैक्यू, धन्यवाद जैसे शब्द बोलने की आदत डालें। बच्चों को आत्मनिर्भर बनना सिखायें। बच्चों को ज्ञान प्राप्त करने के लिये लैपटॉप, मोबाइल के साथ साथ पत्र पत्रिकायें पढ़ने की आदत डालें।



दृष्टिवाद अंग के परिमाण और विषय

दृष्टिवाद अंग श्रुतज्ञान का बारहवां अंग है इस अंग के 5 विभाग है 1. परिक्रम 2. सूत्र 3. प्रथमानुयोग 4. चूलिका 5. पूर्वगत। सूत्र और प्रथमानुयोग के विभाग नहीं है। किन्तु परिक्रम और चूलिका के 55 विभाग है और पूर्वगत के 14 विभाग है।

परिक्रम के क्रमशः सूर्य प्रज्ञप्ति, चंद्र प्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, द्वीप सागर प्रज्ञप्ति, व्याख्या प्रज्ञप्ति। चूलिका के 5 भेद हैं जलगत चूलिका, स्थलगत चूलिका, आकाशगत चूलिका, मायागत चूलिका, मायागत चूलिका।

पूर्वगत के 14 भेद इस प्रकार हैं उत्पाद पूर्व, अग्रणीय पूर्व, वीर्यानुवाद पूर्व, अस्ति नास्ति प्रवाद, ज्ञान प्रवाद, सत्य प्रवाद, आत्म प्रवाद, कर्म प्रवाद, प्रत्याख्यान प्रवाद, विद्यानुवाद, कल्याण नामद्येय, प्राणवाद, क्रिया विशाल लोक बिन्दूसार

इस अंग में अध्यात्म भावना कर्म बंध की विधि और फल कर्मों के संक्रमण आदि करण विभिन्न दार्शनिक चर्चायें मत मतांतर, ज्योतिष आयुर्वेद, गणित, भौतिक, शास्त्र, भूगोल, खगोल सृष्टि उत्पत्ति विद्या पौराणिक मान्यताओं का ज्ञान उपलब्ध है। कला विज्ञान के सभी पक्षों का समावेश इस अंग में प्राप्त होता पुरुष की 72 कला, चार पुरुषार्थ का विवेचन प्राप्त है।

दृष्टिवाद अंग में मनोविज्ञान, समाज विज्ञान, प्रबंध विज्ञान एवं पर्यावरण सुरक्षा और प्रदूषण मुक्ति के सूत्र विद्यमान हैं जैन सिद्धांत की समग्र झंकी इस अंग में देखी जाती है। आचार विचार की सभी विधाओं का सूक्ष्म विवेचन प्राप्त है। धर्म तत्त्व का विमर्श भी उच्च स्तरीय है।

केरियर



लागत लेखा विधि में रोजगार (Cost Accountancy)

एक व्यावसायिक संगठन तभी उन्नती कर सकता है जब उसका लेखा विभाग सशक्त हो। इसके अलावा लेखा विभाग ही संसाधनों के बेहतर उपयोग तथा लागत बचत तकनीकी की योजना के माध्यम से कंपनी के लाभ स्तर में वृद्धि कर सकता है।

लागत लेखा विभाग मुख्यतः प्रबंधन के कार्य क्षेत्र के साथ अतर्ग्रथित है। व्यापक रूप से इसकी व्याख्या है-

लागत एवं प्रबंधन लेखा में मुख्यतः बजट का स्थिर और मानक मूल्यांकन, परिचालन सक्षमता एवं प्रभावशाली उत्पादन एवं सेवा प्रबंधन करना।

पाठ्यक्रम संरचना- लागत लेखापाल की शैक्षणिक योग्यता प्राप्त करने के लिये अभ्यर्थी को भारतीय लागत एवं कार्य लेखापाल संस्थान (ICWA) द्वारा संचालित परीक्षा को उत्तीर्ण करना होता है। परीक्षा तीन स्तरों में होती है। प्रारंभिक, इंटरमिडिएट और अंतिम।

विषय- वित्तीय लेखा, लागत लेखा, कॉर्पोरेट कानून एवं सचिवालय व्यवहार, प्रत्यक्ष कर आरधना, लेखांकन, मात्रात्मक पद्धति व्यापार, परियोजना प्रबंधन, सूचना प्राद्योगिकी एवं कम्प्यूटर इत्यादि।

योग्यता: 10+2 (कॉमर्स) स्नातक (कॉमर्स)

रोजगार संभावनायें- लागत लेखापाल किसी भी उद्योग अथवा सरकारी नौकरी, निजी लागत लेखापाल अथवा वित्तीय कंपनियों के विभागीय प्रबंधन परामर्शदाता के रूप में कार्य कर सकता है।

दुनिया भर की बातें



■ 1 जनवरी

- जापान में 7.6 की तीव्रता से भूकम्प के झटके आये।
- हिट एंड रन के नये प्रावधान के विरोध में वाहन चालकों ने चक्का जाम किया।
- सपा नेता उत्तरप्रदेश के पूर्व मंत्री याकूब कुरैशी की 31 करोड़ की बेनामी सम्पत्ति जब्त हुई।

■ 2 जनवरी

- जापान में आये भूकम्प में 48 लोगों की मौत हुई। 3200 लोग अंधेरे में रहे। टोक्यो में दो विमानों की टक्कर में एक विमान में आग लगी सभी यात्री सुरक्षित।
- तिरुचिरापल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तमिलनाडु यात्रा पर गये 20 हजार करोड़ की सौगात दी।
- दक्षिण कोरिया के विपक्षी नेता ली जेड म्युंग पर जान लेवा हमला हुआ।

■ 3 जनवरी

- अदानी-हिंडनवर्ग मामले अदानी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली कोर्ट ने सेबी को जांच के लिये सक्षम एजेंसी माना।
- निष्कासित सांसद महुआ मोइत्रा को सुप्रीम कोर्ट ने राहत देने से इंकार किया।
- मुख्यमंत्री केजरीवाल ई.डी. के समन पर हाजिर नहीं हुये।

■ 4 जनवरी

- आंध्रप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री की बेटी बाई एस. शर्मीला काँग्रेस में शामिल हुई।
- दिल्ली: मोहल्ला क्लिनिक प्रयोगशाला में फर्जी परीक्षणों की सी.बी.आई जांच की सिफारिश उपराज्य पाल वी के सक्सेना ने की।
- आई.पी.एस. रश्मि शुक्ला प्रथम महिला डी.जी.पी (महाराष्ट्र) बनी।

■ 5 जनवरी

- कोलकाता: पं. बंगाल में ई.डी अधिकारी पर हमला हुआ उनका सिर फूटा।
- सुप्रीम कोर्ट ने एलगार परिषद माओवादी गौतम नवलखा के जमानत आदेश पर रोक की सीमा बढ़ाई।
- दाऊद की हवेली सनातन धर्म की पाठशाला बनेगी।

■ 6 जनवरी

- ई.डी.ने सी.एम की नेता शंकर आध्या को गिरफ्तार किया।
- महादेव एप मामले में मुंबई से दीक्षित कोठारी की पहली गिरफ्तारी हुई।
- श्रीनगर: आनंदेश्वर मंदिर में 32 वर्ष बाद हवन हुआ।

■ 7 जनवरी

- गुंजी: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 1 दिन के दौरे जौलीकांग पहुँचे यह स्थान 1500 फीट ऊपर चीन की सीमा से कुछ किमी. दूर है।
- गुजरात हाईकोर्ट ने अरविंद केजरीवाल व संजय सिंह के समन पर रोक लगाने इंकार किया।
- सी.बी.आई ने आई.ए.एस अधिकारी को भ्रष्टाचार मामले में गिरफ्तार किया।

■ 8 जनवरी

- सुप्रीम कोर्ट ने बिलकिस बानो के 11

अपराधियों को पुनः सरेण्डर करने को कहा तथा गुजरात सरकार को सजा माफ करने को गलत बताया।

- छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री नंदकुमार बघेल का निधन हुआ वे 89 वर्ष के थे।
- श्री गंगानगर (राज) श्री करनपुर विधानसभा सीट के उम्मीदवार मंत्री सुरेन्द्र पाल सिंह टीटी चुनाव हारे।

■ 9 जनवरी

- प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीतकार उस्ताद राशिद का निधन हुआ आप 55 वर्ष के थे।
- फोर्टवर्थ सैंडमेन सिग्रेचर होटल में विस्फोट हुआ 21 लोग घायल हुये।
- रियाद: तीसरे हज और उमरा सम्मेलन में स्मृति ईरानी शामिल हुई।

■ 10 जनवरी

- मुम्बई: विधानसभा अध्यक्ष राहुल नर्वोकर ने एकनाथ के गुट को असली शिवसेना घोषित किया।
- ढाका: चुनाव के बाद अवानी लीग हिन्दुओं पर लगातार हमला कर रही है आज के हमले में 40 हिन्दू घर तोड़े। 1 की मौत हुई।
- काँग्रेस महासचिव ने घोषणा कर दी कि राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में काँग्रेस के वरिष्ठ नेता शामिल नहीं होंगे।

■ 11 जनवरी

- स्वच्छता सर्वेक्षण में इंदौर शहर को 7वीं बार का गौरव हासिल हुआ। महाराष्ट्र को देश का सबसे स्वच्छ राज्य का खिताब मिला।
- वायुआ न्यू गिनि में आपातकाल की घोषणा हुई जिसके विरोध में प्रदर्शन लूटपाट हुई 9 लोगों की मौत हुई।
- कलकत्ता उच्च न्यायालय ने ईडी अधिकारियों को सुरक्षा प्रदान की।

■ 12 जनवरी

- बालासोर: भारत ने नई पीढ़ी की आकाश मिसाइल का सफल परीक्षण किया।
- पं. बंगाल के मंत्री सुजीत बोस सहित 3 तृणमूल नेताओं पर ई.डी.के.छापे पड़े।
- केन्द्रीय गृहराज्य मंत्री नीसीथ प्रमाणीक को सुप्रीम कोर्ट ने राहत दी इनके खिलाफ पश्चिम बंगाल पुलिस कोई दंडात्मक कार्रवाई न करें।

■ 13 जनवरी

- किरना घराने की प्रसिद्ध गायिका प्रभा अत्रे का निधन हुआ वे 91वें वर्ष की थी।
- इंडिया गठबंधन का अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे को बनाया गया।
- मौसम के कारण मुंबई से गुवाहटी जाने वाली इंडिगो की फ्लाईट ढाका पहुंची।

■ 14 जनवरी

- पूर्व केन्द्रीय मंत्री काँग्रेस नेता मिलिंद देवडाने काँग्रेस छोड़ दी वे शिवसेना (शिंदे गुट) में शामिल हुये।
- इम्फाल: राहुल गांधी की न्याय यात्रा शुरू हुई।
- दिल्ली धुएँ के कारण दम घुटने से 1 ही परिवार के चार सदस्य सहित 6 सदस्यों की मौत हुई।

■ 15 जनवरी

- गृहमंत्री अमित शाह की बहिन राजेश्वरी बेन शाह (65 वर्ष) का निधन हुआ।
- उत्तर भारत में कोहरे का पहरा रहा 111 विमान देरी से उड़े। 79 उड़ानें रद्द हुईं।
- भुज: एक स्टील फैक्ट्री में पिघली धातु गिरने से 3 श्रमिकों की मौत हुई एक की हालत गंभीर हुई।

■ 16 जनवरी

- पुसद: पोहरादेवी के दर्शन के लिये जा रहा वाहन गिरने से 6 श्रद्धालुओं की मौत हुई

तथा 12 गंभीर हुयें।

- टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल ने 35 साल बाद 31वीं सीड एलेक्जेंडर को ऑस्ट्रेलियन ओपन के दूसरे राउण्ड में हराया।
- सुप्रीम कोर्ट ने ज्ञानी के वजूखाने की सफाई करने की इजाजत दी।

■ 17 जनवरी

- चेन्नई: तमिलनाडु के सिरावायल में आयोजित जल्लिकट्टू के दौरान दो लोग मरे 40 लोग घायल हुये।
- तेहरान: ईरान ने पाक के आतंकी ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक किया।
- शिलांग: खराब मौसल के कारण राष्ट्रपति द्रौपति मुर्मू का हैलीकॉप्टर उड़ान नहीं भर सका।

■ 18 जनवरी

- पाकिस्तान ने ईरान पर मिसाइलों से हमला किया 9 लोगों की मौत हुई। युद्ध का खतरा बढ़ा।
- हरणी झील (बड़ोदरा) में पिकनिक के दौरान हादसा हुआ झील में 14 बच्चे डूबे 1 नाव से सेल्फी के चक्कर संतुलन खोने से डूबी। 16 की मौत हुई।
- केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने कोचिंग क्लासों में 16 वर्ष से कम के विद्यार्थियों को प्रवेश नहीं देने के सख्त निर्देश दिये।

■ 19 जनवरी

- दलजीत चौधरी सशस्त्र सीमा बल के महानिदेशक नियुक्त हुये।
- सुप्रीम कोर्ट ने काँग्रेस नेता राहुल गांधी की सांसदी बहाल का आदेश रद्द करने वाली याचिका खारिज कर दी।
- ढाक: (उत्तराखंड) सीमांत क्षेत्रों जोशी मठ से लगे 29 पुलों का 6 सड़कों का उद्घाटन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने किया।

■ 20 जनवरी

- टेनिस स्टार सानिया मिर्जा ने पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेट कप्तान शोएब मलिक को तलाक दिया।
- बीजापुर (छत्तीसगढ़) मुठभेड में दो महिला सहित तीन नक्सली ढेर।
- राहुल गांधी की न्याय यात्रा पर हमला हुआ यह हमला असम में हुआ।

■ 21 जनवरी

- सोनितपुर: असम में भीड़ ने राहुल गांधी की न्याय यात्रा के काफिले को रोका।
- बाम्बे हाईकोर्ट ने 22 जनवरी की सार्वजनिक छुट्टी के खिलाफ याचिका खारिज की।
- बगदाद: ईराक में अमेरिका के एयरबेस पर मिसाइलों से हमला हुआ कई घायल।

■ 22 जनवरी

- उत्तर भारत जहाँ ठंड का प्रकोप झेल रहा वहीं कश्मीर भीषण शीत लहर का शिकार बना।
- असम में राहुल गांधी को शंकर देव के जन्म स्थान मंदिर जाने से रोका गया।
- अयोध्या: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

■ 23 जनवरी

- बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न सम्मान देने की घोषणा राष्ट्रपति भवन से हुई।
- एजल: म्यांमार का एक सैन्य विमान क्रैश हुआ 8 लोग घायल हुये।
- गाजा में हमास ने युद्ध विराम को खारिज किया और इजरायली सेना पर हमला किया 21 सैनिकों की मौत हुई।

■ 24 जनवरी

- ओटावा: एक विमान हादसे में 6 खदान कर्मियों की मौत हुई।

- पेरिस: नये पर्यावरण नियमों और तेल की कीमतों के विरोध में किसानों ने हाईवे जाम किया।

- बीड़ (महाराष्ट्र) जिले के माजलगांव में महिला से पुरुष बना ललित पिता बना उसकी पत्नी सीमा ने पुत्र को जन्म दिया।

■ 25 जनवरी

- न्याय मूर्ति पीबी बराले ने सुप्रीम कोर्ट जज की शपथ ली।

- राजस्थान के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष हरिशंकर भाभडा का निधन हुआ वे 96 वर्ष के थे।

- आस्ट्रेलिया के फिलिप द्वीप में 4 भारतीयों की डूबने से मौत हुई।

■ 26 जनवरी

- ईरान ने पाकिस्तान के बलूचिस्तान पर हवाई हमला किया पाकिस्तान ने भी ईरान पर हमला कर जवाब दिया।

- इंडिया संगठन के राजद और जदयू एक दूसरे से अलग होने की ओर बढ़े। गणतंत्र दिवस समारोह में तेजस्वी और नीतिश कुमार अलग अलग दिखे।

- 99 साल की बेटी ब्रुसेल ने तैराकी के 3 वर्ल्ड रिकार्ड तोड़े।

■ 27 जनवरी

- केरल राज्यपाल को स्टूडेन्ट फेडरेशन द्वारा काले झंडे दिखाने पर राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान धरने पर बैठे।

- आस्ट्रेलिया ओपन में टेनिस स्टार रोहन बोपन्ना ने इतिहास रचा मेंस डबल्स फायनल जीता।

- मालदीप ने भारत के सैन्य एक्सचेंज प्रोग्राम को निरस्त किया।

■ 28 जनवरी

- पटना: भाजपा के संप्रदाय चौधरी और विजय सिंह सहित नीतिश कुमार की सरकार में

दो उपमुख्यमंत्री एवं 9 मंत्री बने।

- दिल्ली: कालकाजी मंदिर में जागरण मंच गिरने से 1 महिला की मौत हुई 17 लोग घायल हुये।

- वाशिंगटन जीन थैरेपी से इलाज करने पर 11 वर्षीय बच्चे ने (मूक बधिर) ने सुनना प्रारंभ कर दिया।

■ 29 जनवरी

- भारतीय नौसेना ने पूर्वी सोमालिय तट पर समुद्री लुटेरों को खदेड़ा।

- जार्डन में ड्रोन हमले में अमेरिकी सैनिक की मौत हुई बाइडेन भड़के और कहा हम इसका जबाब देंगे।

- तेहरान ईरान में 4 मोसाद समर्थकों को मृत्युदंड दिया गया।

■ 30 जनवरी

- केरल की एक अदालत ने भाजपा नेता रंजीत श्री निवासन हत्या के 15 पी.एफ.आई.के आरोपियों को सजा एमौत सुनाई।

- समुद्री डाकूओं से 19 पाकिस्तानियों को भारतीय नौ सेना ने बचाया 11 लुटेरों को पकड़ा।

- रावलपिंडी की विशेष अदालत पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को एवं पूर्व विदेशी मंत्री शाह महमूद कुरैशी को गोपनीयत उल्लंघन मामले में 10-10 साल की सजा सुनाई।

■ 31 दिसम्बर

- जमीन घोटाले में घिरे झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इस्तीफा दिया ईडी ने उन्हें हाउस अरेस्ट किया।

- नई संसद में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के भाषण से वजट सत्र प्रारंभ हुआ

- वाराणसी: जिला कोर्ट ने ज्ञानवापी परिसर स्थित तहखाने में हिन्दुओं के पूजापाठ का अधिकार 30 साल बाद बहाल किया।

इसे भी जानिये

भौतिक सम्बंधी महत्वपूर्ण खोज

क्र.	खोज	वैज्ञानिक	वर्ष
01	परमाणु	जॉन डाल्टन	1808
02	परमाणु संरचना	नील बोहर व रदरफोर्ड	1913
03	गति विषयक नियम	न्यूटन	1687
04	रेडियो एक्टिवता	हेनरी बेकरल	1896
05	रेडीयम	मैडम क्यूरी	1898
06	सापेक्षता सिद्धांत	अल्बर्ट आइन्सटीन	1905
07	विद्युत चुम्बकीय प्रेरण	माईकल फैराडे	1831
08	रमन् प्रभाव	सी.वी. रमन	1928
09	एक्स (किरणें)	विल्हेम रॉन्टन	1895
10	क्वाण्टम सिद्धांत	मैक्स प्लाँक	1900
11	प्रकाश विद्युत प्रभाव	अल्बर्ट आइन्सटीन	1905
12	विद्युत आकर्षण नियम	कूलम्ब	1779
13	फोटोग्राफी (धातु में)	जे. निप्से	1826
14	फोटोग्राफी (कागज में)	डब्ल्यू. फॉक्स, टालबोट	1835
15	फोटोग्राफी (फिल्म में)	जान कारबट	1888
16	आवर्त सारणी	मेण्डलीफ	1869
17	विद्युत प्रतिरोधक नियम	जी.एस.ओम	1827
18	तैरने के नियम	आर्कीमिडीज	-
19	तापानियक उत्सर्जन	एडीसन	-
20	डायोड बाल्व	सर.जे.एस. फ्लेमिंग	1904
21	ट्रायोड बाल्व	डॉ. ली.डी.फोरेस्ट	1907
22	नाभिकीय रियक्टर	एनरीको कर्मी	1942
23	विद्युत अपघटन के नियम	फैराडे	-
24	बेतार का तार	मार्कोनी	1901



दिशा बोध मुनि-महिमा



1. जिन लोगों ने इन्द्रियों के समस्त भोगों को त्याग दिया है और जो तपस्वी जीवन व्यतीत करते हैं धर्मशास्त्र उनकी महिमा को अन्य सब बातों से अधिक उत्कृष्ट बताते हैं।
2. तुम तपस्वी लोगों की महिमा को नहीं नाप सकते। यह काम उतना ही कठिन है जितना की दिवंगत आत्माओं की गणना करना।
3. जिन लोगों ने परलोक के साथ इहलोक की तुलना करने के पश्चात् इसे त्याग दिया है, उनकी महिमा से यह पृथ्वी जगमगा रही है।
4. जो पुरुष अपनी सुदृढ़ इच्छाशक्ति के द्वारा पाँचों इन्द्रियों को इस तरह वश में रखता है जिस तरह हाथी अंकुश द्वारा वशीभूत किया जाता है वही वास्तव में स्वर्ग के खेतों में बीज बोने योग्य है।
5. जिसने पंचेन्द्रियों की तृष्णा शमन की है उस तपस्वी के तप में क्या सामर्थ्य है यदि वह देखना चाहते हो, तो देवाधिदेव इन्द्र की ओर देखो।
6. महान् पुरुष वे ही हैं, जो अशक्य कार्यों को भी सम्भव कर देते हैं और क्षुद्र वे हैं जिनसे यह काम नहीं हो सकता।
7. जो स्पर्श, रस, गंध, रूप और शब्द- इन पाँच इन्द्रिय-विषयों का यथोचित सम्यक् उपभोग करता है वह सारे संसार पर शासन करेगा।
8. संसार भर के धर्मग्रन्थ, सत्यवक्ता महात्माओं की महिमा की घोषणा करते हैं।
9. त्याग की चट्टान पर खड़े हुए महात्माओं के क्रोध को एक क्षण भी सह लेना असम्भव है।
10. साधुप्रकृति पुरुषों को ही साधु-सत्पुरुष कहना चाहिये, क्योंकि वे ही लोग सब प्राणियों पर दया रखते हैं।

बच्चों के चतुर्मुखी विकास में मातृशक्ति की भूमिका

* डॉ. वीनू जैन, लंदन यू.के. *

जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि वरदत्तादि पंच महर्षियों की सिद्धभूमि, पार्श्वनाथ भगवान की देशना स्थली और समवसरण भूमि, भगवान पार्श्वनाथ के द्वितीय भव के गजराज बज्रघोष की स्वर्गभूमि है। वर्तमान वर्ष महावीर का 2550वाँ निर्वाण वर्ष तथा पार्श्वनाथ का 2800 वाँ निर्वाण वर्ष है। इस वर्ष 4 से 10 दिसम्बर 2023 की अवधि में नैनागिरि में श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आयोजित महिला सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में सहभागिता कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

सर्वप्रथम मैं इस विशाल पाण्डाल में समुपस्थित पितृ और मातृशक्ति को प्रणाम करती हूँ। भगवान पार्श्वनाथ की पावन भूमि नैनागिरि में आकर आप सभी से बात करते हुये मैं अत्यधिक गौरवान्वित अनुभव कर रही हूँ। यह हमारे ससुर श्री सुरेश जी की जन्म भूमि और उनके अमृतकाल की कर्मभूमि है। यह वही भूमि है जहाँ से अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत कर मेरी सासू माँ विमला जी मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति बनी। मेरे पिता चीफ इंजीनियर श्री के.सी. जैन इस तीर्थ के न्यासी और सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्यक्ष रहे। मेरी माँ डॉ. आशा जी ने आफ्रीका की विपरीत परिस्थितियों में रहकर हमारा पालन-पोषण किया। आज मैं इन सभी को हमारे व्यक्तित्व में सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना करने और हम सतत मार्गदर्शन देने के लिये प्रणाम करती हूँ और उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

आप सभी से आग्रह कि अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिये ठोस प्रयास करें। नियमित रूप से उनकी अच्छी देखभाल करें ताकि वे अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर अच्छे, शिक्षित और जिम्मेदार नागरिक बन सकें। बच्चे का पालन-पोषण सबसे कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य है तदपि यह फायदेमंद भी है। बच्चे को जन्म देकर, उसका पालन-पोषण कर हम अपने, अपने परिवार और सामूहिक रूप से अपनी पूरी समाज और राष्ट्र के बेहतर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

हमने अपनी विनम्रता परिश्रम और कौशल की मदद से दुनिया भर के प्रमुख देशों अफ्रीका उत्तरी अमेरिका, यूरोप और भारत में सार्थक जीवन जिया है। मुम्बई और बैनकुंवर आईटी उद्योग में मैंने 10 वर्षों तक कार्य किया। वर्तमान में दो बच्चों की माँ के कर्तव्यों का निर्वाह करते हुये शिक्षाविद् के रूप में लंदन के समीप स्थित कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में कार्य कर रही हूँ। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने हमारी तीन पुस्तकें प्रकाशित की है जो विश्व के 123 देशों के विद्यालयों में चल रही है। हमारी बड़ी बेटी विधि न्यू कासल अपना टाईन से एम.एस.सी और

छोटी विदुषी ऑक्सफोर्ड से बी.ए. कर रही है।

प्रत्येक बच्चे के विकास में उसके जन्मज गुणों और पोषण की परिस्थितियों की आधारभूत भूमिका होती है। यद्यपि प्रकृति और पोषण दोनों कारक- उसकी शारीरिक, मानसिक और व्यावहारिक विशेषताओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तदपि हम अपने बच्चों की प्रकृति और प्राकृतिक गुणों का संवर्द्धन नहीं कर सकते हैं किन्तु उनके पालन पोषण की परिस्थितियों में बहुत कुछ सुधार कर सकते हैं। बच्चों को अच्छे से अच्छे संस्कार दे सकते हैं। शिशु जन्म से कैसा है ? इसमें परिवर्तन करना संभव भले न हो किन्तु वह कैसे आगे बढ़ सकता है ? कैसे ऊपर उठ सकता है ? इस संबंध में हम ठोस प्रयास कर सकते हैं। उसके संपोषण और शिक्षण के क्षेत्र में प्रभावी योगदान दे सकते हैं।

शिशु कौन है ? और क्या बन सकता है, इसमें माँ की बड़ी भूमिका होती है। अतः जन्म से 5 वर्ष तक अपने बच्चों के स्वास्थ्य की अच्छी देखभाल करें। हम उनका अच्छे से अच्छे ढंग से पालन-पोषण करें। उन्हें पर्याप्त पोषण और सुरक्षा दें। खुशहाल वातावरण दें। उन्हें पर्याप्त समय दें। उनसे चर्चा करें। घर में उन्हें पढ़ाये और उनकी अच्छी से अच्छी केयर करें। उन्हें नई-नई चीजें सीखने के लिये प्रेरित करें। उनकी रोल मॉडल बनें। उनके काम में बार-बार टोका-टोकी करने से बचें। इससे बच्चों में आत्म विश्वास पैदा होता है और वे सफल बच्चे बन जाते हैं।

हमारे देश में यह मान्यता है कि माध्यमिक और महाविद्यालयीन शिक्षा ही बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करती है किन्तु प्रत्येक बच्चे का सही ढंग से शैक्षणिक आधारभूमि उसके जन्म के प्रारंभिक 5 वर्षों में ही तैयार करना आवश्यक होती है। बच्चे के सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देकर उसे पूरे जीवन के लिये तैयार करने का यह सबसे अच्छा समय होता है। इन वर्षों में उनका शारीरिक और मानसिक विकास बेहतर होता है। वे आयु वर्ग के अन्य बच्चों से मिलकर टीम वर्क करना सीखते हैं। आपस में संवाद करते हैं। सहयोग करते हैं नेटवर्किंग का यह स्तर उनके युवा मन में आत्मविश्वास, सामाजिकता और मित्रता के बीज बोता है। इसी अवधि में वे अपनी वस्तुओं से संबंध स्थापित करना, दूसरों से मिलना, प्रेम करना और उनका सम्मान करना सीखते हैं।

विशेष रूप से युवा माताओं से मेरा आग्रह है कि आप अपने जीवन में कुछ न कुछ नया सीखते रहें। इससे आपके बच्चे भी सदैव नई-नई चीजें सीखते रहने की शिक्षा सहज ही ग्रहण कर लेते हैं। भोजन बनाते समय बच्चों को साथ रखें उनका सहयोग लें। उन्हें पाक कला सिखाएं। उनसे घर के छोटे-मोटे कार्य करायें। परिवार के सभी सदस्यों और सहायकों के साथ मिल-जुलकर सभी कार्य करना सिखाएं। उनकी सतत सक्रियता सुनिश्चित करें।

कामकाजी माताओं के बच्चे अपनी माताओं की ढेर सारी गतिविधियों को देखते/करते हुये बड़े होते हैं। वे यह समझने लगते हैं कि एक समय में कई काम किये जा सकते हैं तथा धीरे-

धीरे वे भी एक समय में कई काम करने लगते हैं।

अपने बच्चों को पैसे से जुड़े सबक सिखायें। उन्हें पैसा कमाना सिखाएं। हमें यह कहते हुये खुशी होती है कि हमारी दोनों बेटियाँ अपने से छोटे बच्चों को पढ़ाकर अच्छी कमाई कर रही हैं। अपनी पढ़ाई का खर्च उठा रही हैं। बेहतर कल के लिये हम अपने बच्चों को आज व्यापार में निवेश करना सिखाएं। अलग-अलग सरकार की स्कीम और कंपनी में पैसा इन्वेस्ट करना सिखायें। मंदी से सीख लें और अपने पास कुछ नगद पैसे रखें। घर में किफायत से रहें। बचत करें बच्चों को पूरा समय दें। उनके साथ पर्यटन स्थलों पर जायें। उन्हें मंदिर और तीर्थों पर ले जायें। उन्हें सर्वोत्तम शिक्षा और शिक्षा की सर्वोत्तम सुविधायें प्रदान करें। अपने परिवार की भलाई और सुरक्षा के लिये पूरी कोशिश करें। पूरे परिवार के कल्याण के लिये प्रभु से प्रार्थना करें।

आप अपने बच्चों को भगवान महावीर के अहिंसा और साहस के प्रेरक प्रसंग सुनाएं। उनके समक्ष देश के महानायकों, वैज्ञानिकों और सफल व्यक्तियों के उदाहरण प्रस्तुत करें। उन्हें विष्णु शर्मा द्वारा हितोपदेश में वर्णित पशु-पक्षियों की रोचक कहानियाँ सुनायें।

आप भी अपने परिवार के लिये उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने आपके पति और बच्चे हैं। आपके पूरे परिवार का पालन-पोषण अपनी देखभाल करने के बिना संभव नहीं हो सकता। अतः अपना खयाल रखना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि अपने परिवार का।

आप सभी यह स्मरण रखें कि पी. व्ही. सिंधु और साइना नेहवाल को कोचिंग देने के पहले बेडमेंटन कोच गोपीचंद ने उनके मोबाइल छीन लिये थे और उनसे कहा था कि वे केवल गोल्डमेडल पर फोकस करें। इसी प्रकार भटकाने वाली चीजों से दूर रहकर हम अपनी शक्तियों को बाहर निकालें और उनका सदुपयोग करें। चतुर्मुखी सफलता के शिखर पर आगे बढ़ते रहें।

कविता

एकता के गीत

अलगाव के नहीं गीत एकता के गाना चाहिये ।
अलगाव के नहीं गीत एकता गाना चाहिये ।
फिरका परस्ती दोस्तो जड़ से मिटाना चाहिये ॥
क्रूरता की तीरगी में ढक चुकी है मनुजता ।
अब तो दुनिया में इनायत का सूरज उगाना चाहिये ॥
फासले सब छोड़कर इक पल बनायें नया ।
आदमी को आदमी से सब मिलाना चाहिये ॥
दोजखों के रास्ते अब न चुन पाये कोई ।
इस जमी पर दोस्तो जन्नत बनाना चाहिये ॥
जिस्म पर कब से जमी है नफरतों की गर्द गहरी ।
प्रेम के दरिया में यारो अब नहाना चाहिये ॥



जन प्रतिनिधियों की इतनी सुरक्षा क्यों

* डॉ. अरविन्द प्रेमचंद जैन, भोपाल *

राजशाही काल में जब कोई महामंत्री या मंत्री अत्याचार करता था तब वह अपने साथ 2-4 सैनिक रखता था कारण मंत्री स्वयं इतना बलवान और सक्षम होता था की जनता से निपटना जानता था, राजा भी बहुत कलाकार, हुनरबाज होते थे की वे जनता या दुश्मन की चाल समझ जाते थे उनको अधिक सुरक्षा की जरूर नहीं पड़ती थी, उसके बाद हमारे देश में अंग्रेज आये, वो भी बहुत कम उस अनुपात में हमारी आबादी उनसे अधिक थी पर उनका प्रभाव इतना था की उनको भी अधिक सुरक्षा की जरूरत नहीं पड़ती थी, फिर आजादी की लड़ाई में तो हमारे नेता सुरक्षा विहीन रहते थे जिसका उदाहरण महात्मा गांधी की हत्या।

जैसे - जैसे आजादी के बाद नेताओं की चाल ढाल में नैतिकता का अभाव आने लगा और उनके द्वारा धन लोलुपता बड़ी तब उन्होंने पहले अपने साथ निजी तौर गुंडे लठैत रखना शुरू किया। उसके बाद प्रिवीपर्स खत होने के बाद राजे महाराजे सामान्य स्थिति में आ गये कुछ को छोड़कर सब बिना सुरक्षा के रहने लगे उस समय बहुत अधिक से अधिक 500-600 राजा महाराजा जमींदार रहे होंगे पर उसके बाद उनकी आदतों को देखकर हमारे यहाँ वर्तमान में चुने और भूतपूर्व सांसद, मंत्री, विधायक सेवा निवृत्त न्यायाधीश आदि आदि लगभग 5,79,092 वी आई पी हैं जिनके लिये सुरक्षा व्यवस्था के नाम पर सैनिक हवाई यात्रा, विदेश यात्रायें आने जाने के लिये वाहन मुफ्त, बिजली मुफ्त, मुफ्त पानी, कम दामों में उच्चतम क्वालिटी का भोजन आदि आदि की सुविधायें पेंशन भत्ता के साथ मिलती हैं।

अब हम अन्य देशों की ओर निगाह डाले की उनके यहाँ कितने वी आई पी होते हैं- जैसे ब्रिटेन में 74, फ्रांस में 109, जापान में 125, जर्मनी में 142, अमेरिका में 252, रूस में 312, चीन में 435 और भारत नहीं इंडिया में 5,71,092 को सब सुविधा दी जाती हैं इसके साथ हमारे देश में अजब गजब हैं सांसद विधायक मंत्री मुख्य मंत्री राज्यपाल, राष्ट्रपति यदि एक व्यक्ति बनता है तो उसे हर पद का वेतन भत्ता अलग-अलग मिलता है ऐसा क्यों ?

इस प्रकार देखा जाये तो कितना पैसा इन पर व्यय होता है और इसके अलावा जनता द्वारा चुने हुये जन प्रतिनिधि इनते भयभीत क्यों होते हैं कि उनकी सुरक्षा में करोड़ों रूपये साल खर्च होते हैं क्या वे पद पर आकर अजर अमर हो जाते हैं और पद से हटने के बाद भी उतनी सुरक्षा क्यों और उनके मरने के बाद भी उनके परिवार के लिये भी सुरक्षा क्या एक बार पद पर आने के बाद उनको स्वर्गवासी होने तक का लाइसेंस मिल जाता है और उसके बाद उनके परिवार जनों को क्या इतनी सहानुभूति सरकारी अधिकारी कर्मचारियों को देना चाहिये अथवा नहीं ?

जब एक सरकारी कर्मचारी 25 वर्ष की उम्र से 60 वर्ष तक कार्य करता है, वह अपनी जवानी पूरी सरकारी नौकरी में झोंक देता है तब उसे पेंशन मिलती है और इन चुने हुये प्रतिनिधि सिर्फ चुने जाने के बाद जिंदगी भर भत्ता प्राप्त करते हैं, जैसे कोई का जोड़ा शादी करने के बाद

सुहागरात न मना पाए और उनमें से कोई एक मर जाए तब वह विधुर या विधवा कहलाने लगती हैं। पर सांसद, विधायक सदा सुहागन होती हैं ऐसा क्यों ?

एक तरफ हम गरीबी की दुहाई दे रहे हैं, दूसरी ओर हमारे ऊपर इतना क्रोध है की मध्यम वर्ग को अपना भरण पोषण करने में परेशानी हो रही और गरीबों को सरकार ने अपनी तिजोरी खोलकर रख दी है जिसका खर्चा भी हम मध्यम वर्ग को उठाना पड़ रहा है। और इसके बाद लाखों वी आई पी का खर्चा हम कर दाताओं से क्यों वसूलकर उनको दिया जा रहा है, इस पर पुर्नविचार होना जरूरी है और कोई जरूरी नहीं है कि जनता के द्वारा चुने प्रतिनिधियों को उस कार्यकाल तक वेतन देना चाहिये उसके बाद कोई जरूरी नहीं।

मजेदार बात यह होती है कि जब वेतन भत्ते बढ़ाने की बात आती है तब सब एक हो जाते हैं और सरकारी कर्मचारियों की बात आती है तो सरकार नंगपन करती है। यह दोहरा मापदंड बंद होना चाहिये।

**बहुत हो चूका जनता का शोषण, कभी गरीबी कभी महंगाई
कभी कम वर्षा सूखा का बहाना, अपने ऐशो आराम में कोई नहीं कोताही
आने के पहले इतनी चौकसी की, परिदा न पर मार सके
जिस दिन काल आयेगा, जल, थल, नभ महल से भी नहीं बच पायेंगे
क्यों इस गरीब देश का खून कब तक चूसोगे
कलयुगी सांसद और विधायक नाकारा, संसद, विधानसभा रोती हैं इन करतूतों से**

कविता

विद्यागुरु सम संत समागम संस्कार फीचर्स

धर्म प्रभावना आत्म साधना	विद्या वाणी है कल्याणी
संस्कार का दे अवदान	चोखा तत्त्व बताये जीव अजीव अरू
भूलों को ये राह दिखाये	पुण्य पाप का गहरा राज बताये
दुखियों के सब कष्ट मिटाये	देव गुरु का आराधन कर
दे मुक्ति सोपान	आगम गीत सुनाये मधुरिम वाणी
देह कष्ट को कष्ट न माने	अमृत बरसे भविजन झूमे नाचे
सब परिषह सह	तप मय चर्या तत्त्व की चर्या
जिनके रहती अधरों पर मुस्कान	व्यथा हरे सब मन की विद्या गुरु सा
	संत समागम गायें हम गुणगान

कहानी

कपास का पेन

लेखक: 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

शाम के सात बज रहे थे। सब लोग अपनी अपनी जगह बैठे हुये थे, तखत पर एलक सिद्धांतसागर जी महाराज भी बैठे हुये थे। अपना अपना संस्मरण सब सुना रहे थे, सब लोगों ने कहा ऐलक जी से आप आचार्य श्री जी का संस्मरण

सुनाईये। उन्होंने आचार्य श्री के संस्मरण सुनाये, संस्मरण सुनाने के बाद सबका एक-एक क्रम से संस्मरण सुनाने का नंबर लग रहा था। अब बात आई, आकाश महाजन की भी कि वो भी अपना एक संस्मरण सुनाये। आकाश महाजन ने अपना संस्मरण सुनाया, जब मैं दस साल की उम्र का था तब मेरे पिता जी अशोक जी एक दिन बहुत अच्छा कलम लेकर के आए। कलम का रंग सुनहरा था, उसका कैप भी सोने का रंग का था, उस पेन को देख कर मेरा मन बिल्कुल ललच गया। मैं रोज उस पेन को दुकान पर जाता था तो उठा कर



देखता था और फिर वहीं रख देता था। एक दिन मेरे पिता जी अशोक जी इसे देख लिया क्यों आकाश ये पेन बार बार क्यों उठाता है और फिर रख देता है। मैंने पिता जी से कहा कि पिताजी मुझे ये पेन बहुत अच्छा लग रहा है

क्या मैं ले लूँ। उन्होंने झल्लाते हुये गुस्से में कहा कि रख दे वहीं ऐसे पेन नहीं लिये जाते हैं। पेन लेने का शौक है तो पहले तू पढ़ाई लिखाई अच्छे से कर, दिन भर खेलता रहता है, मस्ती करता रहता है, पेन का करेगा क्या, लिखना तो आता है नहीं है। तो मैंने पिता जी से कहा कि मैं तो बहुत अच्छा लिख लेता हूँ स्कूल में पढ़ता भी हूँ तब पिताजी ने कहा कि मुझे पता है कितना तुम पढ़ता है तेरे परीक्षा में जो नंबर आता है उसे देखकर के मुझे ये पता लग जाता है कि तु कितना पढ़ता है कि देख तेरे ही सामने वह है न तेरा मित्र कितने नंबर लाता है और उसके

नंबर और तेरे नंबरों में अंतर कितना रहता है। अब तो तुम एक काम कर पढ़ाई लिखाई अच्छे से कर, अगर तु रोज स्कूल जाने लगा और पढ़ाई भी अच्छे से करने लगा तो तुम्हें ये पेन अवश्य दे दूंगा।

आकाश को पेन का लालच था और आकाश ने पेन की लालच में रोज स्कूल जाना शुरु कर दिया और पढ़ाई भी करने लगा, कापियों पर लिखने भी लगा। एक दिन उसने कहा पिताजी से कि पेन से आज लिख के देख लूँ की कैसी लिखाई आती है। इनके पिताजी ने कहा हाँ चल तू लिख ले और आकाश ने पेन बड़ी खुशी-खुशी से उठाया और हाथ में लेकर के उछालता हुआ चल रहा था, एक दिन वो पेन लेकर के घर पर पहुँचा और अपने छोटे भाईयों और बहनों को पेन दिखा-दिखा कर खूब ललचाया। बहन धरती ने भी कहा भैया ये पेन थोड़ा मुझे लिखने को तो दो, आकाश ने बोला जा सीधी जा बैठ जा तू क्या जानती लिखना सीखना। मैंने पिताजी से बहुत मुश्किल से ये पेन लिया है। एक दिन उसका छोटा भाई पवन ने एक दिन झटके से पेन लेकर लिखना शुरु किया, पेन से जब लिख रहा था तो आकाश ने देख लिया, आकाश ने उससे पेन छीनकर ले लिया और बोला अब ये पेन कभी लिया तो तुमको मार-मार के धुत्रा कर दूंगा। पवन ने डर करके वो पेन वहीं छोड़ दिया।

पवन से पेन लेकर के आकाश कपास के ऊपर खेल रहा था, अब क्या हुआ कि कपास के ढेर में कब कैसे कहाँ वो पेन गिर गया पता नहीं चला और आकाश उस कपास में से पेन ढूँढ नहीं पाया। अब अशोक जी ने जब कपास बेचने का दिन आया तो उसमें से वह पेन उन्हें मिल गया और उन्होंने वह पेन छुपा करके रख दिये। आकाश ने सोचा की कभी भी पिताजी पेन मांगेंगे तो क्या जबाब दूंगा तो फिर आकाश ने वैसा ही पेन एक दिन दुकान पर बैठा और उसने दुकान के गल्ले में से दस रुपये चोरी कर दिये। वह चोरी करके वह दस रुपये का जैसा पेन उसके पिताजी ने दिया था वैसा का वैसा पेन खरीद कर लिया और उसने अपने बैग में रख लिया। अब उसे पता लगा की अब वह पेन उसे मिलने वाला है ही नहीं और न उसने फिर से ढूँढने की कोशिश की, परिणाम ये आया की पेन खो गया था और पेन के खो जाने के बाद आकाश के पिताजी अशोक जी को वह पेन मिल गया तब वह पेन उन्होंने छुप्पाकार के रख दिया और आकाश को यह पता नहीं लग पाया की पेन मेरे पिताजी के पास हैं।

आकाश ने दूसरा पेन ले करके खूब मजे से लिखना शुरु कर दिया अब आकाश के पास यह बात आई बहुत दिन देखने के बाद एक दिन उसके पिताजी आकर के आकाश के पास दूसरा पेन देख लिया,

उन्होंने कहा ये आकाश के पास ये पेन दूसरा कैसे आया, पता लगाया जिस दुकान पर वह पेन मिलते थे उस दुकान पर वे गये और उन्होंने पूछा क्यों मेरा बेटा आकाश आया था क्या, तो मनोज गोरे ने कहा मेरे पास आकाश आया था और उसने मेरे यहां से ऐसा ही पेन एक और खरीदा है, फिर उन्होंने पूछा कितने का खरीदा तो मनोज गोरे ने कहा वही दस रुपये का ठीक है कोई बात नहीं अब आकाश के पेन को लेकर के दिन अशोक जी अपनी बही खाता चेक कर रहे थे तो उन्होंने आकाश से कहा आश बेटा वह पेन कहाँ है आकाश अपने पिताजी से खूब मुँह लगा हुआ था।

अशोक जी को पता था की आकाश अपनी दुकान से कभी पैसे नहीं चुराता है और वह दुकान भी बहुत अच्छी चला लेता है, दुकान पर बैठता भी है परन्तु यह पता नहीं था की वह दुकान पर बैठ करके कुछ भी करता है। कोई बात नहीं अशोक जी चुपचाप रहे और उसकी हरकतों को देखते रहें। एक दिन उन्होंने सोचा कि आकाश को अब पकड़ना चाहिये, आकाश को पकड़ने के लिये उन्होंने आकाश पर नजर रखी। आकाश स्कूल जाता और स्कूल से वापस आता फिर दुकान पर बैठता और सब कुछ काम करता परन्तु कभी भी एक दो बार उन्होंने उसके जेब भी जाँच की परन्तु जेबों में कभी भी पैसे नहीं निकले और न ही आकाश कहीं भी कोई भी पैसा खर्च करते

उनके पकड़ में आया। फिर भी आकाश इतनी सफाई से चारी करता था ये उन्हें भी जानकारी नहीं थी, कि वह इतनी सफाई के साथ वह चोरी कर लेता है। वह आकाश को बहुत ही विश्वास पात्र मानते रहें लेकिन एक दिन उन्होंने कहा कि आज आकाश की परीक्षा लेना है।

उन्होंने अपनी पत्नी रेखा से कहा आकाश को तुमने कभी कोई चोरी करते हुये देखा तो रेखाजी ने कहा नहीं तो वह चोरी क्या करेगा, वह सबसे बड़ा है वह रोज स्कूल जाता है, पढ़ता लिखता है और उसके साथ-साथ खेलता घूमता है और घर में उसको सबकुछ खाने को मिलता है, सब कुछ उसे घर पर ही मिल जाता है। क्योंकि उन दोनों आकाश और उसकी माँ रेखा जी अपना एक ऐसा नियम बनाया था की बाहर किसी के यहाँ खाना नही खाना है क्योंकि वे घर पे ही सब कुछ खिला देती थी क्योंकि उनके यहाँ हर चीज की स्वतंत्रता थी। बच्चों के लिये अनुशासन में रखना उनके लिये बहुत अच्छा लगता था और वे बच्चों को अनुशासन में अवश्य रखा करते थे। एक दिन ही नहीं कई बार अपने बच्चों को परीक्षा भी लेते रहते थे, उन पर नजर भी रखते थे। उनका सोच ये था कि बच्चों पर नजर होना चाहिये, नियंत्रण नहीं क्योंकि बच्चों पर नियंत्रण होता है तो बच्चे बिगड़ जाते हैं पर नजर अवश्य रखते थे। उसी नजर के अंतर्गत वे बाल मनोविज्ञान के अंतर्गत

अपने बच्चों की आदतों पर भी ध्यान देती थी क्योंकि बच्चों की आदतें जो होती है वो हमेशा अपनी पत्नी से कहा करते थे क्योंकि जब उनके पति-पत्नी में चर्चा होती थी तब कभी-कभी मार पीट हो जाती थी तो अशोक जी हमेशा मारपीट का विरोध करते थे, वे कहते थे मारना नहीं चाहिये, साल में एक आधर बार कभी जब बहुत बड़ी गलती की हो तब बच्चों को मार देना चाहिये। हमेशा मार देने से बच्चे ढीठ और बेशर्म जैसे हो जाते हैं इसलिये बच्चों को मारना अपने लिये बहुत गलत हो जाता है तो वे कभी भी बच्चों को मारा नहीं करते थे लेकिन रेखा जी गुस्सा की थोड़ी तेज थी और वो अनुशासन हमेशा रखती थी और उनकी एक आदत और भी थी और बच्चों में से वह किसी एक को नहीं मारती थी, तीनों बच्चों की पिटाई करती थी और जब तीनों की पिटाई होती थी और जब एक पीटता था तो दूसरा भाग जाता या छुप जाता था क्योंकि उसे पता था कि अब हमारा नंबर पिटाई के लिये आने वाला है।

ऐसी स्थिति देख करके अशोक जी अपने पत्नी रेखा जी को कहते थे कि बच्चों को ऐसे नहीं सुधारा जा सकता है। बच्चों में अगर भय पैदा हो जायेगा तो वें हमेशा अपनी कोई भी बात अपने आप को नहीं बताया करेगा इसलिये बच्चों के लिये हमेशा ऐसे नहीं सुधारा जा सकता है अपितु समर्पण के आधार पर सुधारा जा सकता है। और बच्चों को सुधरने का सबसे बढ़िया तरीका होता है

कि बच्चों के लिये उन पर छोड़ दिया जाये अगर वह अपनी बात पूरी नहीं बतायें छुपा करके रखेंगे तो एक न एक दिन वे अपनी कुछ न कुछ चीज को छुपा करके अवश्य रखेंगे इसलिये बच्चे छुपा करके कोई काम करते हैं तो बच्चे निश्चित तौर पर अपराधनी बन जाते हैं इसलिये उन अपराधों को रोकने के लिये बच्चों के लिये सदैव उनकी भयमुक्त वातावरण बनाने का प्रयास करना चाहिये इसलिये अशोक जी अपने बच्चों को कम मारा करते थे और समझाते थे और बच्चों को प्यार भी करते थे। अगर कभी रेखा जी अपने बच्चों की पिटाई करती थी तो उसके ऊपर भी वें झल्ला जाते थे और कहते थे नहीं बच्चों को मारपीट कम करना चाहिये।

अब अशोक जी को ये बात पकड़ में आ रही थी तो उन्होंने एक दिन आकाश को अपने पास बुलाया और बड़े प्रेम से हाथ पकड़ कर अपने दुकान पर ले गये और कहा बेटा वो एक पेन हमने जो दिया था वो तुम्हारे पास है क्या तो आकाश ने कहाँ हाँ मेरे पास है। अशोक जी ने कहा जाओ और घर से उठा करके लाओ आकाश ने घर गया और अपने बैग में से पेन निकल कर हाथ में उछलता हुआ अपने दुकान की ओर जाने लगा और उसी समय उसकी माँ रेखा जी ने कहा आकाश तुम कहा जा रहा है तो आकाश ने कहा मैं दुकान जा रहा हूँ फिर माँ ने पूछा क्यों जा रहे हो तो आकाश ने कहा की पिता जी ने पेन मंगवायें हैं फिर माँ ने

कहा अभी रूक जा पहले भोजन कर ले फिर उसके बाद चला जाना दुकान, नहीं तो मैं फिर दूसरे काम में लग जाऊंगी तो तेरे लिये भोजन मिल पाना मुश्किल होगा। आकाश ने भी सोचा चलो अपन पहले भोजन कर लें और आकाश भोजन करने के लिये बैठ गया।

बढ़िया भोजन करने के बाद अपनी माँ से बोला आई मुझे आज एक बात बहुत अच्छी लगती है आज की खिचड़ी जो अपने बनाई है ये खिचड़ी कितनी अच्छी लगी मटर की खिचड़ी तो मुझे बहुत पसंद है और वह खाते खाते बहुत सारी लाइप्यार की बातें करता रहा और आकाश ने पूरा भोजन कर लिया जब वह भोजन करके हाथ ही धो रहा था अशोक जी दुकान से घर आ गए, उन्होंने आ करके कहा क्यों आकाश भोजन हो गया तो आकाश ने कहा पिताजी भोजन हो गया। अशोक जी ने आकाश से फिर कहा आकाश वो पेन कहा है तो आकाश पिताजी के हाथ पर पेन रख दिया और कहा पिता जी ये रहा पेन। उन्होंने कहा बेटा ये वही पेन है जो हमने दिया था तुम्हें तो आकाश ने कहा है हाँ ये तो वही पेन है पिताजी फिर अशोक जी ने कहा अच्छा बेटा कहीं ये दूसरा पेन तो नहीं है तो आकाश ने कहा नहीं पिताजी ये जो आपने दिये थे वही पेन है। आकाश के बात सुन करके अशोक जी ने कहा ऐसा ही पेन एक मेरे पास भी है और आकाश से कहा कहीं

ये पेन तुमने खरीदा तो नहीं, आकाश ये बात सुनकर झिझक सा गया और झिझक कर बोला नहीं तो अशोक जी ने पूछा तुम झूल बोल रहे हो या सच बोल रहे हो फिर आकाश ने कहा पिता जी मैं सच कह रहा हूँ और मैं अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की कसम खाकर कह रहा हूँ कि मैंने कही से ये पेन नहीं खरीदा। अशोक जी बोले अच्छा तुम यही बैठो और वो सीढ़ी से ऊपर वाले कमरे में गये और सोचने लगे की आकाश को कैसे इसकी गलती एहसास करया जाये क्योंकि बच्चों को उसकी गलती का एहसास होना बहुत जरूरी होता है। जब बच्चों को इनकी गलती एहसास हो जाती है तो वे निश्चित तौर पर गलती करना छोड़ देते हैं और यदि बच्चों को अपनी गलती का एहसास नहीं होता है तो बच्चें गलती की पुनरावृत्ति करते हैं इसलिये उन्होंने बहुत देर तक सोचा कि इसको कैसे क्या कहें फिर उन्होंने ने अपनी उस अलमारी को खोला और जो कपास में पेन मिला था उस पेन को निकाला और पेन निकाल करके आकाश को कहा की देख तेरा ये पेन है तूने मुझे दिया था और ये दूसरा पेन कहाँ से आ गया। अब आकाश को लगा कि मैं पकड़ा गया हूँ तो उसने कहा कि नहीं नहीं आपने दूसरा खरीदा होगा तब अशोक जी ने कहा नहीं मैंने कोई पेन नहीं खरीदा है अपितु ये पेन जो है न तेरा कभी कपास में गिरा था क्या।

आकाश ने समझ लिया की अब मेरी

चोरी पकड़ी गयी है ओर जब यह बात सोच रहा था कि अब उसकी चोरी पकड़ी गई, इस बात को सोच करके अब वह सहम सा गया और कुछ बोलने की स्थिति में न हो करके वह सर हिलाने लगा। अशोक जी ने डंडा उठाया और डंडा जैसे ही उठाया आकाश की आँखों से पानी आ गया और उसने यह तय कर लिया अब तो पक्के में मैं पिटूंगा और पिटने से पहले सच बता दूँ तो भी पिटूंगा और पिटने के बाद तो सच बताना ही पड़ेगा इसलिये आकाश ने सोचा अब क्या किया जाये बहुत देर तक वह सोचता रहा और उसके पिताजी डंडा बजाते रहे और वह कुछ भी नहीं बोल रहा था। बच्चों की सहमी हुयी स्थिति को देखकर आकाश के पिताजी अशोक जी को लगा कि ऐसी स्थिति में इसको डंडा नहीं दिखाना चाहिये। चलो कोई बात नहीं अब सिर्फ एक बात है तू पिटेगा या नहीं पिटेगा ये बात बता। तो आकाश ने कहा पिटूंगा फिर अशोक जी ने बोलो क्यों पिटेगा तो आकाश ने कहा मैंने ये पेन दूसरा खरीदा है तो पिताजी बोले तेरे पास इस पेन को खरीदने के पैसे कहाँ से आये तो आकाश ने बोला हमें रोड़ पर दस रुपये पड़े हुये मिले थे तब मैंने सोचा इसका पेन खरीद लूँ। अशोक जी ने बोले अच्छा तो तुम्हें रोड़ पर पड़े दस रुपये मिले थे तो बता कब मिले थे और तूने मुझे क्यों नहीं बताया रोड़ पर पड़ी हुई, भूली हुई किसी की चीज उठाना

तुझे पता है ये क्या कहलाती है चोरी कहलाती है। अब तू झूठ बोल रहा है, अब तू सच बता की तेरे पास दस रुपये कहाँ से आये। आकाश ने भगवान कसम मुझे दस रुपये सड़क पर गिरे मिले थे। अशोक जी ने पूछा कहा मिले थे तो आकाश ने बोला पाउली मंदिर के जहाँ पर जाते हैं वहीं उस सड़क पर मिल गये थे तो इसलिये मैंने आपको डर के कारण नहीं बताया क्योंकि उस पैसे को वहीं के वहीं रखवा देते इसलिये मैंने आपको नहीं बताया और मैंने उस पैसे से पेन खरीद लिया। अब आकाश के द्वारा गढ़ी हुई कहानी पर अशोक जी को विश्वास नहीं हुआ और जब विश्वास नहीं हुआ तो उन्होंने फिर उससे पूछना जारी रखा आखिरकार कहानी पर कहानी गढ़ने वाला आकाश टूट गया और टूट करके उसने सच बताना शुरु कर दिया और यह कहा मैं दुकान से दस रुपये उठाया था ओर आपकी नजर चुराकर के और फिर मैंने पेन को खरीदा था क्योंकि मेरा पेन कपास में खो गया और मैंने बहुत ढूँढा लेकिन मिला नहीं था इसलिये मैंने सोचा अगर आप कभी मांगेंगे तो क्या जबाब दूंगा इसलिये मैंने डर से दस रुपये लेकर दूसरा पेन ले लिया। फिर अशोक ने कहा बेटा ऐसे चोरी करना पाप है और तुम आज नियम लो की आज के बाद से कभी कोई गलत काम या चोरी नहीं करेगा तो आकाश ने नियम लिया और उसके बाद कभी चोरी नहीं किया।

तीर्थकर ऋषभदेव और उनका अवदान

* डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर *

जैन धर्म के चौबीस तीर्थकरों में भगवान् ऋषभदेव प्रथम तीर्थकर हैं। इन्हें आदिनाथ और वृषभदेव भी कहा जाता है। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में समागत उनके उल्लेख यह कहने के लिये पर्याप्त हैं कि वे ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने मानव समुदाय को कृषि, लेखन, व्यापार, शिल्प, युद्ध और विद्या की शिक्षा दी। किसी भी व्यक्ति और समुदाय के लिये इन प्रकल्पों की शिक्षायें आगे बढ़ाने के लिये अनिवार्य होती हैं। भरत चक्रवर्ती, प्रथम जैन तीर्थकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र थे। जैन और हिन्दू पुराणों के अनुसार वह चक्रवर्ती सम्राट् थे और उन्हीं के नाम पर भारत का नाम भारतवर्ष पड़ा। तीर्थकर श्रीऋषभदेव ने ही सर्वप्रथम सन्यास ग्रहण करके योग और ध्यान के माध्यम से संसार के दुःखों से मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया था। इस कारण आपको इस युग का आदियोगी भी कहा जाता है। भगवान् ऋषभदेव के चरित्र का प्रामाणिक वर्णन आचार्य जिनसेन (सातवीं शती ईस्वी) द्वारा संस्कृत भाषा में रचित आदिपुराण में प्राप्त होता है। भगवान् ऋषभदेव अवसर्पिणी सृष्टि के सुखमा दुःखमा नामक तृतीयकाल में हुये थे।

अयोध्या और तीर्थकर ऋषभदेव: इन दिनों अयोध्या भगवान् राम के कारण पूरे देश में चर्चित है। अयोध्या जैन धर्म के लिये खास है। यहां जैन परंपरा के 24 में से पांच तीर्थकरों का जन्म हुआ है। जिनमें प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव का जन्म अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश में हुआ था। उनका जन्म चैत्र कृष्ण नवमी को अयोध्या के महाराजा नाभिराय तथा माता मरुदेवी के यहां हुआ था, वहीं माघ कृष्ण चतुर्दशी को इनका निर्वाण कैलाश पर्वत पर हुआ। श्री ऋषभदेव की आयु चौरासी लाख पूर्व और शरीर की अवगाहना पाँच सौ धनुष थी। युवा अवस्था में आपका विवाह नन्दा ओर सुनन्दा नामक दो कन्याओं से हुआ था। महारानी नन्दा से भरत चक्रवर्ती आदि निन्यानबे पुत्र और ब्राह्मी नामक पुत्री का जन्म हुआ था और रानी सुनन्दा से बाहुबलि नामक पुत्र और सुन्दरी नामक पुत्री का जन्म हुआ था।

आइये जानते हैं तीर्थकर ऋषभदेव द्वारा भारतीय संस्कृति को दिये गये अवदानों के कुछ विशेष तथ्य:

ऋषभदेव प्रागैतिहासिक काल के महापुरुष: तीर्थकर ऋषभदेव प्रागैतिहासिक काल के महापुरुष हैं, जिन्हें इतिहास काल की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। किंतु वे आज भी संपूर्ण भारतीयता की स्मृति में पूर्णतः सुरक्षित हैं। ऋग्वेद आदि प्राचीन वैदिक साहित्य में भी इनका आदर के साथ संस्तवन किया गया है। भगवान् ऋषभदेव को उनके विराट् व्यक्तित्व के कारण जैन धर्म के साथ-साथ वैदिक परम्परा में भी पूर्ण आदर प्राप्त है। श्रीमद् भागवत् पुराण के पाँचवें स्कन्ध में श्री ऋषभदेव के चरित्र का वर्णन बड़ी ही श्रद्धा के साथ किया गया है। भारत के राष्ट्रपति एवं प्रसिद्ध दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन ने अपनी भारतीय दर्शन के इतिहास में लिखा है कि जैन परंपरा ऋषभदेव से अपनी उत्पत्ति का कथन करती है जो बहुत सी शताब्दियों के पूर्व हुये हैं। महाभारत के अनुशासन पर्व में भी ऋषभदेव का नाम आया है। वैदिक साहित्य में भगवान् ऋषभदेव को जैन धर्म का आदि प्रवर्तक माना गया है। डॉ. एन.एन.वसु ने सिद्ध किया है कि

लेखन कला और ब्राह्मी विद्या का आविष्कार ऋषभदेव ने किया था। विभिन्न साक्ष्यों द्वारा यह पुष्टि हो जाती है कि ऋषभदेव भारतीय संस्कृति के प्रथम वरिष्ठ महापुरुष थे। मानवीय गुणों के विकास की सभी सीमाएं ऋषभदेव ने उद्घाटित की। सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक काका कालेलकर का यह निष्कर्ष उचित ही है- हिन्दू समाज को संस्कारी और सभ्य बनाने में ऋषभदेव का बड़ा हाथ है। कहा जाता है कि विवाह व्यवस्था, पाकशास्त्र, गणित, लेखन आदि संस्कृति के बीज ऋषभदेव ने समाज में बोये। अगर कहें तो भी चलेगा कि यह सब करके और अंत अंत में उसका त्याग करके ऋषभदेव ने प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों मार्गों का आचरण करके दिखाया।

तीर्थकर ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम से भारतवर्ष नाम: जैन परंपरा और अनेक ऐतिहासिक तथ्य का मानना है कि इन्हीं प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण भारतवर्ष इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ। भरत चक्रवर्ती ने जम्बूद्वीप के संपूर्ण भरतक्षेत्र (पृथ्वी) को जीतकर उसका स्वामित्व प्राप्त किया, जिसके कारण उस सम्पूर्ण भरतक्षेत्र का एक नाम भारतवर्ष पड़ गया। ऐतिहासिक तथ्यों को ध्यान में रखते हुये भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारत शब्द का ही प्रयोग किया गया है।

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने भी एक बार दुष्यन्तपुत्र भरत के नाम पर भारत के नामकरण की बात लिखी थी, किन्तु बाद में उन्होंने सार्वजनिक रूप से अपनी भूल को स्वीकार किया और लिखा कि- मैंने अपनी भारत की मौलिक एकता नामक पुस्तक के पृष्ठ 22-24 पर दौष्यन्तिक भरत से भारतवर्ष लिखकर भूल की थी। इसकी ओर मेरा ध्यान कुछ मित्रों ने आकर्षित किया। उसे अब सुधार लेना चाहिये।

वैदिक परंपरा में भागवत् पुराण को एक प्रामाणिक ग्रंथ माना है। उसकी एक प्राचीन निर्युक्ति के अनुसार **अजनाभं नामैतद् वर्षं भारत मिति यत् आरभ्य व्यपादिशन्ति** सृष्टि के आदि में आदि मनु स्वायम्भुव मनु के पौत्र नाभिराय थे। उन्हीं के नाम से इस देश का नाम अजनाभवर्ष कहलाता था। इनके पुत्र ऋषभ थे जो कि आदिराजा, आदिक्षत्रीय और आदियोगी भी थे। अनेक ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं पुरातात्विक और पौराणिक कथाओं में स्पष्ट उल्लेख है कि ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर ही देश का भारतवर्ष नामकरण हुआ है।

कृषि करो या ऋषि बनो: मनुष्य के अस्तित्व के लिये रोटी, कपड़ा और मकान जैसी चीजें आवश्यक हैं, किन्तु यह अधूरी संपन्नता है। उसमें अहिंसा, सत्य, संयम, समता, साधना और तप के आध्यात्मिक मूल्यों की आंतरिक संपन्नता भी जुड़नी चाहिये। प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव ने भारतीय संस्कृति को बहुत कुछ दिया है। छह कर्मों के द्वारा उन्होंने जहां समाज को विकास का मार्ग सुझाया, वहीं अहिंसा, संयम तथा तप के उपदेश द्वारा समाज की आंतरिक चेतना को भी जगाया। यही कारण है कि उनका एक प्रसिद्ध कथन है -कृषि करो या ऋषि बनो। अर्थात् जीविका के साथ-साथ आध्यात्मिक मूल्य भी आवश्यक हैं।

जैन परंपरा के अनुसार तीर्थकर ऋषभदेव ने कृषि का सूत्रपात किया। अनेकानेक शिल्पों की अवधारणा की। कृषि और उद्योग में अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया कि धरती पर स्वर्ग उतर आया। कर्मयोग की वह रसधारा वही कि उजड़ते और वीरान होते जन जीवन में सब ओर बसंत खिल उठा।

प्रथम शिक्षा प्रदाता एवं ब्राह्मी लिपि के प्रवर्तक: भगवान ऋषभदेव ने महिमा साक्षरता तथा स्त्री समानता पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। अपनी दोनों पुत्रियों को ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान के साथ-साथ व्याकरण छंद, अलंकार, रूपक, उपमा आदि के साथ स्त्रियोचित अनेक गुणों के ज्ञान से अलंकृत किया। लिपि विद्या को ऋषभदेव ने विशेष रूप से ब्राह्मी को सिखाया। इसी के आधार पर उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपी पड़ गया। ब्राह्मी लिपि विश्व की आद्य लिपी है। दूसरी पुत्री सुंदरी को अंकगणतीय ज्ञान से पुरुस्कृत किया। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसे अभियान ऋषभदेव के पथ पर चलकर अत्यधिक सफल हो सकते हैं। आज भी उनके द्वारा निर्मित व्याकरण शास्त्र तथा गणितीय सिद्धांतों ने महानतम ग्रंथों में स्थान प्राप्त किया है।

अक्षय तृतीया: तीर्थंकर श्री ऋषभदेव क प्रथम आहार ग्रहण करने के कारण ही यह तिथि अक्षय तृतीया पर्व के रूप में विख्यात है।

कला में प्राचीनकाल से उल्लेख: जैन संस्कृति के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का विस्तृत वर्णन एवं श्रमण एवं वैदिक वाङ्मय में तो हुआ ही है, कला में भी उनका उल्लेख प्राचीनकाल से होता आया है। ऋषभदेव की प्राचीनतम मूर्तियां कुषाणकाल और चौसा से मिली है। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों की खुदाई से प्राप्त मूर्तियों को पुरातत्व विभाग ने ऋषभदेव की मूर्तियां बताया है। ऋषभदेव की गुप्तकालीन मूर्तियां मथुरा, चौसा एवं अकोटा से मिली हैं। ऋषभदेव की सर्वाधिक मूर्तियां उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश में उत्कीर्ण हुई हैं। मुख्यरूप से मथुरा, कुंडलपुर, लखनऊ, नवागढ़, ग्वालियर, खजुराहो, गोलाकोट, बूढ़ी चंदेरी, शहडोल, गुना आदि स्थानों की ऋषभदेव प्रतिमाएं मुख्य रूप से उल्लेखनीय हैं। बिहार, उड़ीसा और बंगाल में भी अनेक महत्वपूर्ण मूर्तियां प्राप्त होती हैं।

विश्व का आठवां आश्चर्य भगवान बाहुबली की मूर्ति: ऋषभदेव के एक पुत्र बाहुबली की एक हजार वर्ष पुरानी 57 फुट पर्वत पाषाण से बनी विशाल प्रतिमा कर्नाटक के श्रवणबेलगोला स्थान पर स्थित है तो गोमटेश्वर के नाम से भी जानी जाती है। जो विश्व का आठवां आश्चर्य मानी जाती है जिसका प्रत्येक 12 वर्ष में महामस्तकाभिषेक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता है। श्रवणबेलगोला के चन्द्रगिरि नामक पहाड़ी पर भरत चक्रवर्ती की प्रतिमा स्थापित है।

भक्ति साहित्य में ऋषभदेव: जैन भक्ति साहित्य में भगवान ऋषभदेव की भक्ति सर्वप्रथम की जाती है। उनकी भक्ति में स्वतंत्र रूप से काव्य, पुराण, स्तोत्र, पूजाएँ आदि बड़ी मात्रा में लिखे गये हैं। सातवीं शताब्दी में मुनिराज मानतुंग आचार्य ने भक्तामर स्तोत्र द्वारा भगवान ऋषभदेव का महान महत्वशील स्तवन भक्ति की है, आज जन-जन इससे विदित है। संस्कृत भाषा में रचित यह स्तोत्र आज जैन श्रद्धालुओं का कण्ठहार बना हुआ है।

आज अधिक प्रासंगिक हैं ऋषभदेव की शिक्षाएं: भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा द्वारा प्रतिपादित जीवन-शैली, आज के चुनौती भरे माहौल में उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता है। तीर्थंकर ऋषभदेव अध्यात्म विद्या के भी जनक रहे हैं। आज मानवता के सम्मुख भौतिकवादी चुनौतियों के कारण नाना प्रकार के सामाजिक एवं मानसिक तनाव तथा संकट व्यक्तिगत,

सामाजिक एवं भूमण्डल स्तर पर दृष्टिगोचर हो रहे हैं। भगवान ऋषभदेव द्वारा बताई गई जीवन शैली की हमारी सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था में काफी प्रासंगिकता एवं महत्ता है। उनके द्वारा प्रतिपादित ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न क्षेत्रों में ऐसी झलकियां मिलती है जिन्हें रेखांकित करके हम अपने सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं।

आदर्श दण्ड संहिता का क्रिया प्रावधान: प्रशासनिक कार्य में इस भारत भूमि को उन्होंने राज्य, नगर, खेत, कर्वट, मटम्ब, द्रोण मुख तथा संवाहन में विभाजित कर सुयोग्य प्रशासनिक, न्यायिक अधिकारों से युक्त राजा, माण्डलिक, किलेदार, नगर प्रमुख आदि के सुर्पुद किया। आपने आदर्श दण्ड संहिता का भी प्रावधान कुशलता पूर्वक किया।

षड्विद्या शिक्षा प्रदाता: प्रत्येक वर्ण व्यवस्था में पूर्ण सामंजस्य निर्मित करने हेतु तथा उनके निर्वाह के लिये आवश्यक मार्गदर्शक सिद्धांत, प्रतिपादन करते हुये स्वयं उसका प्रयोग या निर्माण करके प्रात्याक्षिक भी किया। अश्व परीक्षा, आयुध निर्माण, रत्न परीक्षा, पशु पालन आदि बहतर कलाओं का ज्ञान प्रदर्शित किया। उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है- 1. असि-शस्त्र विद्या, 2. मसि-पशुपालन, 3. कृषि- खेती, वृक्ष लता, वेली, आयुर्वेद 4. विद्या- पढ़ना, लिखना 5. वाणिज्य, व्यापार, वाणिज्य 6. शिल्प - सभी प्रकार के कला कारी कार्य।

देशभर में मनाया जाता है जन्म और मोक्ष कल्याणक: प्रतिवर्ष ऋषभदेव जन्म कल्याणक और मोक्ष कल्याणक जैन समुदाय में हर्ष उल्लास के साथ श्रद्धा पूर्वक मनाया जाता है। मंदिरों में इस दिन तीर्थंकर ऋषभदेव विशेष पूजा-अर्चना, अभिषेक- शांतिधारा की जाती है, शोभायात्रा निकाली जाती है, प्रवचन, व्याख्यान, संगोष्ठी होती है। महाआरती और सांस्कृतिक आयोजन किये जाते हैं। मंदिरों को सजाया जाता है। भगवान के जन्म का पालना झुलाया जाता है। मिठाई बांटी जाती है। जन्म भूमि अयोध्या में विशेष पूजा अर्चना की जाती है। अयोध्या जैन परंपरा के अनुसार शाश्वत तीर्थ है।

भगवान ऋषभदेव के समवसरण (धर्मसभा) के द्वारा अनेक वर्षों तक असंख्यात भव्यजीवों को अहिंसा, समता एवं आत्मसंयम रूप पवित्र जैन धर्म का उपदेश दिया था। आपके समवसरण में वृषभसेन आदि चौरासी गणधर ऋषि (प्रधान शिष्य) थे। चौरासी हजार मुनि और साढ़े तीन लाख आर्थिकार्ये और तीन लाख श्रावक और पाँच लाख श्राविकायें थीं। अन्त में आयु पूर्ण होने पर भगवान् ऋषभदेव ने अष्टापद कैलास पर्वत से माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन निर्वाण प्राप्त किया था।

ऋषभदेव का अवदान अविस्मरणीय: भगवान ऋषभदेव ने एक ऐसी समाज व्यवस्था दी, जो अपने आप में परिपूर्ण तो थी ही साथ ही जिसकी पृष्ठ भूमि में अध्यात्म पर आधारित नैतिकता की नींव भी थी।

भगवान् ऋषभदेव अपने लोकव्यापी प्रभाव और उपदेशों के कारण भारतीय जनमानस के हृदय में सदैव श्रद्धास्पद रहेंगे। आज के भोगप्रधान वातावरण में भगवान ऋषभदेव की योगप्रधान शिक्षाएं मानवजाति के कल्याण के लिये अत्यधिक प्रासंगिक हैं। तीर्थंकर ऋषभदेव ने भारतीय संस्कृति के लिये जो अवदान दिया वह इतना महत्वपूर्ण है कि उसे जैन ही नहीं जैनेतर भारतीय परंपरा में आज भी कृतज्ञता पूर्वक स्मरण करती है और युगों तक करती रहेगी।

हमारे गौरव

ऐतिहासिक जैन सम्राट चेटक

विशाल एवं शक्तिशाली गणतंत्र अध्यक्ष तथा वैशाली नगरी के अधिपती, महाराज चेटक अपने समय के सम्पूर्ण भारतवर्ष के सर्वप्रथम सर्वप्रधान सत्ताधियों में से एक थे। वह व्रात्य क्षत्रियों की लिच्छवी जाती में उत्पन्न हुये थे। कुछ ग्रंथों में उन्हें इक्ष्वाकुवंशी और कुछ में हैध्यवंशी भी लिखा है। वस्तुतः हैध्यवंशी भी मुलतः इक्ष्वाकुवंश की ही एक शाखा है। राजा के और यशोमती के पुत्र इन महाराज चेटक की महादेवी का नाम सुभद्रा था। दोनों भी परम श्रद्धालु जिनभक्त थे। अहिंसा धर्म के अनुयायी होते हुये भी महाराज चेटक बडेही पराक्रमी और वीर योद्धा थे।

कहते हैं कि अनेक शत्रुओं को चेटक या दास बनाने से ही उनका नाम चेटक पड़ा था।

महाराज चेटक अत्यंत न्यायप्रिय भी थे। अपनी सत्ता, कुटुंब और प्राणों पर संकट आने पर भी और अन्याय के सम्मुख अपना सिर न झुकाया।

अपने वीर्य, शौर्य, बुद्धि के लिये सदाचार के लिये सुसंगठन के लिये वैशाली के लिच्छवी सर्वत्र प्रसिद्ध थे। स्वयं महात्मा बुद्ध ने भी उनके गुणों की भुरी-भुरी प्रशंसा की है।

कविता

साजिश हँस रही है

संस्कार फीचर्स



कल युग की महिमा छल बल का बोलबाला
अपनो को ठगने की कला पनप रही है
ठहाके देकर साजिश हँस रही है
डीप फेक के सहारे सही राह चलने वालों को
किया जा रहा बदनाम प्रदर्शन करने वाले
छली दिल के काले कमा रहे हैं नाम
कौन देख सकता है, इनके खोटे काम

चेहरे पर लगाया है नकाब न कोई चिंता न कोई तनाव
तड़फे भले दुनिया इन्हें है चैन आराम
किसी बुलंद सितारे गर्दिश में करने
किसकी भी इज्जत हरने ईर्ष्या से भरे
बैर है जिनके हरे सिर्फ आग की लगाना
जिनका काम है न कोई ईमान
न कोई राम है, नफरत फैले
या हो दंगे या हो किसके चरित्र नंगे
इनके तो इरादे बहुत हैं गंदे
ये तो सिर्फ शिकारी है पापी दुराचारी है
स्वयं तो भटके हैं खुराफत में अटके हैं
न सोते न सोने देते हैं अपनी डीप फेक हैं
सबकी चैन छीन लेते हैं, इनकी क्या है चाल
झुका मिलेगा इकन इनका भाल

क्रमांक-37 वरिष्ठ नागरिक



बुढ़ापे में सजगता से भोजन करे

जब आपकी आयु साठ वर्ष से ऊपर जाने लगे, तब आप भोजन तभी करें जब आपको सच में भूख लगे। क्या वरिष्ठ नागरिक भूख के अनुसार भोजन करते हैं? अथवा समय से बंधकर भोजन करते हैं? भोजन पर बैठकर अपने आपको टटोलिये, क्या वास्तव में आपको भूख है। आपको खाना चाहिये अथवा नहीं खाना चाहिये। कोई नहीं अपने आप को टटोलता। खा ही लेते हैं। समय होता है और आप भोजन पर बैठ जाते हैं।

भोजन के लिये बैठते हुये, अपने आप से पूछना चाहिये कि मुझे खाना चाहिये अथवा नहीं खाना चाहिये। अगर सच में लगे कि भोजन करना ही चाहिये तब ही खायें। अगर लगे कि न खाने से भी चलेगा तो दूसरा ऑप्शन चुनियें। नहीं खायें। युवावस्था में जब आप बीस अथवा पच्चीस वर्ष के होते हैं, तब तो आप के भीतर निर्माण चालू रहता है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती जाती है, शरीर में (Degeneration) विकार आने चालू हो जाते हैं। अर्थात् नये कोष कम बनते हैं और पुराने कोष ज्यादा नष्ट होते हैं। पच्चीस वर्ष की अवस्था आती है, कि शरीर जितना बढ़ना था, उतना बढ़ गया, अब धीरे-धीरे घटना शुरू हो जाता है।

जैन आगमों में बताया गया है ऊनोदरी! ऊनोदरी का मतलब है, पेट को थोड़ा खाली रखना इसके पीछे क्या राज है। इसके पीछे एक बढ़िया विज्ञान है। पेट का आधा हिस्सा ठोस आहार (Solid Food) के आहार से भरना चाहिये। इसके बाद पच्चीस प्रतिशत भाग तरल आहार (पानी) से भरना चाहिये। शेष चतुर्थ हिस्से को खाली छोड़ देना चाहिये। जैसे घर में मिक्सी (Mixxi) का उपायेग किया जाता है। यदि मिक्सी के डिब्बे (Container) को पूरा भर दिया जाये तो क्या वह घूम पायेगी। नहीं घूम पायेगी थोड़ी जगह खाली छोड़नी पड़ेगी। वैसे ही हमारा पेट है। जब आपको लगे कि अब मैं थोड़ा सा और खा सकता हूँ उस समय रूक जायें।

उस समय भोजन से उठ जाएं। यह तभी होगा जब आप खाने के प्रति सजग होंगे। भोजन खाना कब बंद कर देना चाहिये, इसका एक उपाय जब आप भोजन करते हैं तो आपको डकार आती है। जब पहली डकार आती है तो वह इस बाती सूचना है कि आपका पेट 70% भर गया है अब पानी के लिये ही जगह है। फिर भी आप भोजन चले जाये तो दूसरी डकार आती है, यह इस बात की सूचना है कि आपका पेट पूरी तरह भर गया है। फिर अगर आप खाते चले जाओ तो वह खाना, जैसा भीतर जाता है, वैसा ही बाहर आ जाता है। पहली डकार के पश्चात् भोजन से उठ जाना चाहिये, फिर भी यदि थाली में कुछ शेष है और खाना अनिवार्य है तो दूसरी डकार के बाद तो उठ ही जाना चाहिये।

कितने लोग जानते हैं कि उन्हें डकार भी आती है। क्योंकि सजगता ही खो गई है थोड़ा सजग

हो जाओ। सजगता से खाना खाओ भगवान न आपको इतना बढ़िया भोजन दिया है। क्या आप सजगता पूर्वक उस भोजन को खा भी नहीं सकते? आज संसार में लाखों लोग ऐसे हैं जिन्हें दो वक्त की रोटी भी ठीक से नहीं मिल पाती है। आपको भोजन मिल रहा है, पर आपके भीतर भोजन के प्रति कोई आदर नहीं है। बस खाये जा रहे हो- खाये जा रहे हो। भोजन के प्रति सजग होना सीखिये। भोजन के संबंध में हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि हम कम बार भोजन करें। आप दिन में एक बार का ध्यान रखना चाहिये कि हम कम बार भोजन करें। आप दिन में एक बार भोजन करो तो यह आपके लिये श्रेष्ठतम है। एक बार में यदि संतुष्टि नहीं मिलती है तो दिन में दो बार भोजन करो। बुढ़ापे में दो बार का भोजन पर्याप्त है। परन्तु देखा जाता है कि लोग दिन भर कुछ न कुछ खाते रहते हैं। दिन भर खाने का मतलब है कि आप अपना ही अनदार कर रहे हैं। आप अपने आप ही व्याधियों को आमंत्रित कर रहे हैं। कम भोजन करें और कम बार भोजन करें यह है आहार का संयम। स्वर्णिम बुढ़ापे का सूत्र है, अपने भीतर अनासक्त चेतना का विकास करें। आपके अंदर जो पकड़ है उसे ढीला करें। यदि खाने से मन नहीं भरता तो एक नियम अवश्य बना लें कि एक बार खाने के बाद ढाई घंटे एक पहर कुछ भी नहीं खाना। यह (Medical Science) का परामर्श भी है तथा चेतावनी भी है।

आगामी विशेषांक



विश्व गुरु अध्यात्मिक चिंतक महान साहित्यकार राष्ट्रीय चेतना के मुखरवक्ता करुणा मूर्ति तीर्थ संरक्षक संवर्धक आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का समग्र सामग्री संस्कार विशेषांक आगामी जुलाई माह में दीक्षा दिवस के समय प्रस्तुत होगा। लेखकगण सामग्री भेजे तथा पाठक अपना अंक सुरक्षित करें।

ब्र. जिनेश मलैया

प्रधान संपादक: संस्कार सागर, इंदौर

6232967108

8989505108

email: sanskarsagar@yahoo.co.in

सासों की शरगम बनाये रखे अस्थमा रोग (दमा) कारण व नियंत्रण उपाय

* जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 *

इन दिनों मौसम सर्दी से गर्मी में बदल रहा है। इस समय शरीर की इम्युनिटी कम होने से मौसमी बिमारियाँ और एलर्जी की समस्या बढ़ने लगती है जिससे सर्दी-जुकाम और सिरदर्द व सांस लेने में तकलीफ हो सकती है। इस मौसम में सबसे अधिक अस्थमा (दमा) जो फेफड़ों में जुड़ी बीमारी है। इसमें सांस लेने में परेशानी के साथ कई तरह की शारीरिक समस्याएँ भी होने लगती है। देश में लगभग दो करोड़ से अधिक इस बीमारी से पीड़ित हैं इनमें 60% से अधिक एलर्जिक अस्थमा के हैं।

अस्थमा के लक्षण तब दिखते हैं जब वायुमार्ग की परत में सूजन आ जाती है और आस पास की मांसपेशियों में तनाव बढ़ जाता है जिससे वायुमार्ग संकीर्ण हो जाता है। और आंशिक अवरोध आ जाता है व बलगम वायुमार्ग में भर जाता है जिससे यहाँ से गुजरने वाली हवा की मात्रा कम हो जाती है। इन स्थितियों के चलते अस्थमा का अटैक भी आ सकता है।

गले की सांस नली को ट्रेकिया (Trachea) कहते हैं जो लगभग चार इंच लम्बी होती है जो दो नलियों में बट जाती है जिन्हें ब्रोकाई (Brochi) कहते हैं। इन दोनों से एक नली दायें और दूसरी बायें फेफड़े में चली जाती है जिनमें दायी ब्रोकाई छोटी तथा चोड़ी होती है व बायी लम्बी तथा पतली होती है। इन सभी की अंदर रेशेदार पेशियों की दीवार होती है तथा इन पर बालदार एपिथीलियम का अस्तर लगा होता है। ये महीन बाल ऊपर की ओर हिलते हैं व इनकी गति से धूलकण व शरीर को हानिकारक विषाणु आदि बाहार निकल जाते हैं। जब इन दोनों नलियों में (वायुमार्ग) की परत में सूजन तथा फेफड़ों में श्लेमा (Mucous) जमा हो जाता है तब अस्थमा रोग का प्रकोप हो जाता है।

लक्षण- सांस लेने में खिंचाव, घरघराहट, कर्कश या सीटी जैसी आवाजें छाती में जकड़न, दम धुटना, खांसने में कफ आना, लेटने पर तकलीफ होना, मेहनत करने वाले काम करने पर तेज सांस चलना, नींद न आना। दोनों हाथों पर मार देकर या तकिये का सहारा लेकर झुककर बैठना, लगातार हवा चाहता है। सांस सामान्य तौर पर लेता है किन्तु सांस छोड़ने में तकलीफ महसूस व ज्यादा समय लगता है, आक्रमण के समय अकड़न या आक्षेप दौरा पड़ना आदि।

अस्थमा अक्सर दो तरह का अधिक होता है एक आक्षेपिक (स्पैज्मोदिक) दूसरा वायु उपनली संबंधी (ब्रांक्वियल)। किसी-किसी को अस्थमा का दौरा जल्दी-जल्दी, यहाँ तक हर महीने में एक बार और किसी-किसी को 8 से 10 महीने बाद आता है।

कारण- 1. धूल व प्रदूषण युक्त तीव्र वातावरण में अधिक समय तक रहना, रात्रि में ज्यादा देर तक जागरण करना। 2. तेज गंध, फूल, धुआ, पालतू जानवर, परागकण, दवाई रूई से एलर्जी आदि, तनाव या कोई रोग होना, किसी प्रकार की एलर्जी बचपन में वायरल संक्रमण।

3. वंशागत दोष से अर्थात् माता पिता को रोग हो तो संतान को भी हो सकता है। 4. मौसम में परिवर्तन सदी व गर्मी पड़ना। 5. अधिकतर अमावस्या या पूर्णिमा के दिन रोग का बढ़ना, चर्म रोग होने के बाद अस्थिमा हो सकता है व जिन्हें जल्दी-जल्दी दौरा पड़ता है उनको अंत में हृदय की बीमारी व शोध इत्यादि बीमारी हो सकती है।

सावधानियाँ-

1. जल्दी पचने वाले हल्के भोजन व द्रव्य अधिक लेना, हमेशा कुछ पेट खाली रखना व शाम के समय हल्का भोजन करना और सूर्यास्त के बाद कोई भी चीज चबाकर खाना चाहिये।

2. सर्दी से बचाव रखना व ठंडे पानी की जगह गरम कुनकुने पानी से नहाना चाहिये। बीच-बसी में सीना और पीठ छोड़कर बाकी शरीर गर्म पानी में कपड़ा भिंकोकर पोखना लाभदायक होता है।

3. हरी पत्तेदार सब्जियाँ विटामिन ए.सी और ई. एंटीऑक्सीडेंट्स वाली चीजें ज्यादा मात्रा में लेना व मौसमी ताजे फल व सब्जियाँ का उपयोग करें। प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट व वसा चीजे कम से कम उपयोग करना।

4. ज्यादा गरम और नभ वातावरण से बचे, घर से बाहर निकलते समय मास्क लगाये। एवं स्थान परिवर्तन से लाभ मिलता है।

5. जंक फास्टफूड, सोडा, ड्रिंक्स व बाहरी भोजन से दूरी बनाये, अल्कोहल व धूम्रपान से बचना चाहिये, जिन कारणों से होता है उनके प्रति सचेत रहना चाहिये।

6. मुँह से सांस लेने से, सांस लेने का सही तरीका सीखना, नियमित सैर व योग करना।

विशेष-

1. अस्थिमा रोगी सभी समय अस्वस्थ नहीं रहते व दौरा दूर होने पर पूर्णतः स्वस्थ हो जाते हैं।
2. प्रायः रोगी दीर्घ जीवी होते हैं क्योंकि खाने पीने रहन सहन को अनियमितता करने का साहस नहीं कर सकते।

3. अस्थिमा बहुत तकलीफ देने वाली बीमारी है जो देर होने का बाद एक दम आरोग्य नहीं होती है केवल रूकी रहती है। कहावत है अस्थिमा (दमा) दम के साथ ही जाता है।

4. बच्चों में अस्थिमा रोग के लक्षण दिखते हे जो उपचार उम्र बढ़ने के साथ ठीक हो जाते हैं।

उपचार- अस्थिमा रोग की लक्षणों की जांच कराकर शुरुआत में पूर्णतः इलाज परहेज से नियंत्रण हो जाता है। सभी चिकित्सा पद्धतियों में इलाज संभव है कि किन्तु अचानक तेज दौरा पड़ने व उम्र होने पर ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति लाभदायक होती है।

होम्योपैथी पद्धति भी बहुत प्रभावशाली है जिसमें शारीरिक व मानसिक लक्षणों के आधार पर प्रमुख औषधियों एकोनाइट, आर्सेनिक, इपिकाक, बैसेलियम, फास्फोरस, ग्रेफाइट, प्लसेटिला, कार्बोबेज, कैलकेरियाकार्व, नैट्रम सल्फ, कैलिब्राइक्रोम आदि।

सासों की शरगम जीव मात्र के लिये जीवन दायिनी है जो जीवन को हर बाधा से सुरक्षित रखती है अतः मौसम बदलने के साथ स्वयं को बदलने से स्वस्थ व निरोगी रह सकते हैं।



हास्य तरंग

1. महिला- अपनी नई सहेली से शादी के बाद तुम्हारे पति का रंग धीरे-धीरे निखर रहा है। सहेली- यह बात है कि पहिले वे कोयले की दुकान चलाते थे, अब आटा पीसने की चक्की।

2. पत्नी (पति से)- झूठ बोलना कब बंद करोगे ? पति- लेकिन मैंने कब झूठ बोला, पत्नी अच्छा क्यों झूठ बोल रहे हो ? कब रात्रि टी.वी पर बच्चों से कह रहे थे कि तुम किसी से नहीं डरते।

3. वकील (गवाह से)- आप मेरे प्रश्नों के उत्तर लम्बा बढ़ाकर नहीं दो मात्र हों या ना में जबाब दो। गवाह मेरे से मुश्किल है, मैं सेल्समेन हूँ, अच्छा वकील साहब आप मेरे प्रश्न का उत्तर हों या नाम में दे सकते हो ? वकील हँ क्यों नहीं। गवाह- आपकी पत्नी पहले पीटती थी पर अब नहीं ? वकील- असमंजस में पड़ गये।

4. दोस्त- अपने दोस्त से तुम्हारी पत्नी का कमर दर्द ठीक हुआ कि नहीं दोस्त- हाँ डॉक्टर को एक बार दिखाने में ही ठीक हो गया था। दोस्त- कौन सी दवाईयाँ दी थी, दूसरा दोस्त कोई दवा नहीं दी बस डॉक्टर ने बताया कि यह बुढ़ापे की निशानी है तब से दर्द की शिकायत नहीं की।

5. पुलिस वाले को कुत्ते ने काट दिया वह डॉक्टर पास ईलाज कराने गया। डॉक्टर ने घाव साफ करके पट्टी बांध दी दवाईयाँ लिपटते हुये डॉक्टर ने पूछा क्या कुत्ते ने आपको पहचाना नहीं।

संकलन: जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

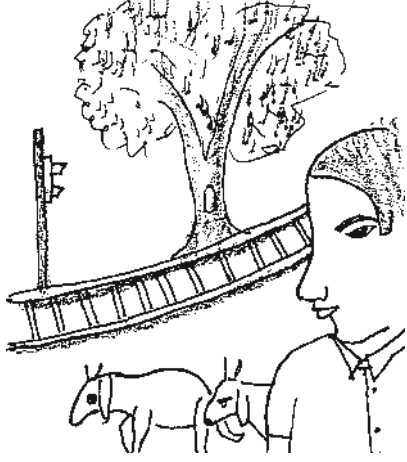
आंवला लोंजी

आंवला 250 ग्राम, सरसों का तेल 2 बड़े चम्मच, मैथी दाना 1 छोटी चम्मच, सौंफ एक छोटी चम्मच, हींग 1 पिंच, सौंठ 1 बड़े चम्मच, ग्रेटेड, हल्दी पाउडर 1 छोटी चम्मच, धनिया पाउडर 1 छोटी चम्मच, सौंफ पाउडर 3 छोटी चम्मच, जीरा पाउडर 1.5 छोटी चम्मच, मिर्ची पाउडर 1 छोटी चम्मच, गरम मसाला 1.5 छोटी चम्मच, नमक 1 छोटी चम्मच, काला नमक 0.75 छोटी चम्मच, गुड़ 0.75 कप।

विधि: भिगोने में 2 कप पानी डालकर उबाल आने दीजिये उबाल आने पर आंवला पानी में डालकर हल्के नरम होने तक पकाएँ फिर पानी से निकालकर ठंडे होने रख दें इसकी एक-एक कली अलग कर लें पैन में 2 बड़े चम्मच सरसां का तेल गरम करें साबुत सौंफ और मैथी दाना डालकर हल्का भूनिये फ्लेम धीमी करके इसमें हींग, सौंठ, आंवला हल्दी, धनिया पाउडर, सौंफ पाउडर, जीरा पाउडर, गरम मसाला, लाल मिर्च पाउडर, नमक, काला नमक और गुड़ डालिये सबको अच्छे से मिलाकर गुड़ के पिघलने तक इसे पकायें इसे थोड़ी थोड़ी देर में चलाते हुये धीमी फ्लेम पर पकाना है गुड़ के पिघल जाने पर इसे थोड़ा गाढ़ा होने तक पकायें पक जाने पर फ्लेम बंद करके इसे ठंडा होने दीजिये।

बाल कहानी

बहादुर मोरसलिम



रेलवे ट्रैक पर बहादुर बालक घूम रहा था जब ट्रेन धीरे-धीरे आगे बढ़ती चली जा रही थी परन्तु मालदह में ट्रेन की स्थिति देख करके मोरसलिम ने अपने आगे देखा कि ट्रेन के पटरी के नीचे की मिट्टी खिसक रही थी और ट्रेन एक पूरी तीव्र गति से चली आ रही है मोरसलिम घबराया और इधर-उधर देखा तो उसे कोई भी रेलवे कर्मचारी नहीं दिखा और ना ही कोई व्यक्ति दिखा तब उसने सोच लिया की आज एक बहुत बड़ा हादसा मेरे आँखों के सामने होगा। उसने बड़े हादसा से बचने और बचने के लिये वह रेलवे ट्रैक से दूर नहीं हटा उसने सोचा जिंदगी और मौत दो चीजें तो होती है परन्तु जिंदगी

को यदि सही शान को बनाना है तो किसी दूसरे की जान को बचाना है। यह सोच करके बालक मोरसलिम रेलवे ट्रैक पर खड़ा होकर आगे देखने लगा उसने देखा बहुत करीब लगभग 3 किलोमीटर दूर से एक ट्रेन चली आ रही है उसकी गति भी बहुत तीव्र है उसने जल्दी जल्दी अपनी कमीज को उतरा, उसकी कमीज का रंग लाल था और उसने सोचा यह लाल रंग जो कमीज की है उस लाल रंग से ट्रेन रूक जाती है। बहादुर मोरसलिम अपनी कमीज को उठा करके ऊपर हाथ करके घुमाना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे ट्रेन भी एक गति से चल रही थी उसकी गति कम हो गई, और कम होते ही उस गति से जब कम हुई तो अचानक उसने देखा की ट्रेन रूक गई है और ट्रेन के रूकते ही उसमें से पायलट उतरा और ट्रेन से नीचे उतरते ही उसने पहले उस बालक से पूछा बेटा क्या बात है तुम लाल शर्ट क्यों घुमा रहे हो तब बालक ने ऊंगली का इशारा करते हुये कहा देखो अंकल नीचे किनी बड़ी स्थिति खराब है। जब पायलट ने देखा तो समझ गया की सचमूच में इस बालक ने आज सैकड़ों लोगों की जान बचा ली है उसके लिये उसने उसे उठाया और रेलवे अधिकारियों के लिये मोबाईल से कॉल लगाकर स्थिति बताई और उस बालक का नाम पूछा और उसकी उम्र पूछी तो उस बालक ने अपनी उम्र 12 साल बताया। देखते ही देखते अपने पिताजी के साथ पायलट से बात करने लगा क्योंकि उस बालक के पिताजी भी उसी जगह आ चुके थे। दोनों अपने बकरियों को चराने के लिये निकलें थे लेकिन शेख मोरसलिम ने यह ट्रेन हादसा बचा करे एक बहुत बड़ा काम कर दिया जिस पर उस बालक को उसकी बहादुरी के लिये पुरस्कार देने का निश्चित किया गया।

संस्कार गीत

आचार्य समंतभद्र



समंतभद्र ने सबसे पहले सर्वोदय का सूत्र दिया
देवागम की रचना करके सत्यन्याय का सूर्य दिया

1.

युक्थनुशासन स्तुति विद्या
श्रावक आगम बतलाया
स्वयंभू स्तोत्र इन गुरु ने
काव्य भक्ति की शुभ गाथा
रत्नकरण्डक श्रावक शास्त्र
समंतभद्र ने हमें दिया

2.

जैन धर्म की ध्वजा में थामकर
भारत के हर ग्राम में
सफल सभी शास्त्रार्थ गुरु के
काशी मथुरा ग्राम में
तर्क शिरोमणि समन्तभद्र ने
मिथ्यात्म का अंत किया

3.

काव्य जगत के कवि अनूठे
महाकवि तुम कहलाये
अलंकार रस छंद विधाता
जिनवाणी घर घर लाये
तय साधक ध्यानी गुरु अनेकांत प्रमाण दिया

बाल कविता

मैं भारत हूँ भारत बोलो



मैं भारत हूँ भारत बोलो
मेरी गरिमा कम न तोलो
मैं प्रतिभा सुन्दर भारत
मानव धर्म निभाता भारत
परम अहिंसा धर्म हमारा
विश्व गुरु हूँ सबको प्यारा
युद्ध नहीं मैं देता बुद्ध
दर्शन देता सबको शुद्ध
महावीर मैं राम की भूमि
धर्म कर्म की अनुपम भूमि
तपोभूमि मैं कर्म भूमि हूँ
गंगा यमुना की जननि हूँ
पाप कर्म तुप अपने धोलो
मैं भारत हूँ भारत बोलो

समाचार

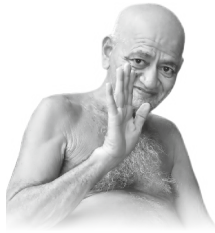
दीक्षाये सम्पन्न

रतलाम- आचार्य श्री सुंदरसागर महाराज जी के करकमलों से मुनि श्री सुप्रभसागर जी एवं बाल ब्र. साकेत भैया की मातेश्वरी की आर्यिका दीक्षा 21 फरवरी 2024 को शीतलधाम रतलाम में सम्पन्न हुई जिनका नाम आर्यिका श्री सुप्रजमति माताजी रखा गया।

रतलाम- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. रविन्द्र भैया, ब्र. निहाल भैया, ब्र. जिनेश भैया की दीक्षाये 22 फरवरी 2024 को शीतलधाम रतलाम में हुई। जिनका नाम क्रमशः मुनि श्री शीलसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री श्रेयसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री श्रेयसागर जी महाराज रखा गया।

आगामी दीक्षाये

सम्मदशिखर- आर्यिका श्री विनतमति माताजी के करकमलों से ब्र. प्रज्ञा दीदी बीना की दीक्षा 26 मार्च 2024 को श्री सिद्धक्षेत्र सम्मद शिखर मधुवन जिला गिरिडीह में होगी।



समाधिमरण

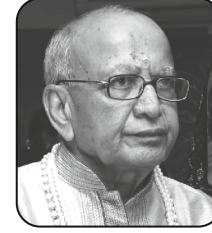
डोंगरगढ़- संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर महाराज जी का सम्यक् समाधिमरण 18 फरवरी 2024 को श्री चन्द्रोदय क्षेत्र डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़ में हुई।

समाधि के समय निर्यापक मुनि श्री योगसागर जी महाराज, निर्यापक मुनि श्री समतासागर जी महाराज, निर्यापक मुनि श्री प्रसादसागर जी महाराज, मुनि श्री पूज्यसागर जी महाराज, मुनि श्री महासागर जी महाराज, मुनि श्री निष्कंपसागर जी महाराज, मुनि श्री चन्द्रप्रभसागर जी महाराज, मुनि श्री निरामयसागर जी महाराज, एलक श्री निश्चयसागर जी महाराज, एलक श्री धैर्यसागर जी महाराज वहां उपस्थित थे। आचार्य श्री ने 6 फरवरी 2024 को दोपहर में निर्यापक मुनि श्री योगसागर महाराज जी को संघ व्यवस्था के संबंध में आचार्य श्री ने बताया तथा निर्यापक श्रमण समयसागर महाराज जी को आचार्य पद देने की बात कही। मुनि श्री समयसागर महाराज जी का आचार्य पदारोहण श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में पूरे संघ के सान्निध्य में होगा।

समडोली (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री जिनसेन महाराज जी के शिष्य क्षुल्लक श्री नंदीश्वर जी महाराज का समाधिमरण 18 फरवरी को दोप. 11.30 बजे हुआ।

सलूम्वर (राजस्थान)- आचार्य श्री वर्द्धमानसागर महाराज की शिष्या आर्यिका श्री योगीमति माताजी का समाधिमरण सलूम्वर राजस्थान में 19 फरवरी 2024 को रात्रि 10.41 पर हुआ।

णामोकार तीर्थ (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री देवनंदी महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री सुनिर्मल श्री माताजी समाधिमरण 4 फरवरी 2024 को प्रातः 9.36 पर णामोकार तीर्थ महाराष्ट्र में हुआ।



जैन जगत् के वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के जीवन चारित्र विद्याधर से विद्यासागर कृति के लेखक आदरणीय सुरेश जैन सरल का समाधि पूर्वक मरण 22 फरवरी 2024 को दोप. 4.35 पर जबलपुर में हुआ। संस्कार सागर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

पटपटगंज (दिल्ली)- आर्यिका श्री सुदर्शनमति माताजी का समाधिमरण 01 फरवरी रात्रि 10 बजे आचार्य श्री अनेकांत सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग द्वारा चयनित आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी 2021 में निम्न डॉक्टरों का चयन किया गया जिनमें डॉ. सोनल शाह, डॉ. शुभम सिंघई, डॉ. अभिनव दिवाकर, डॉ. मेघा जैन, डॉ. दीपिका जैन, डॉ. रेखा जैन, डॉ. तनीषा जैन, डॉ. नुपूर जैन, डॉ. आस्था जैन, डॉ. पारस कुमार जैन, डॉ. श्रद्धा जैन, डॉ. वत्सला जैन सभी को संस्कार सागर परिवार एवं श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट की ओर से बहुत-बहुत बधाईयाँ।

श्रीमद् मज्जिनेन्द्र वेदी प्रतिष्ठा भगवान विराजमान विश्वशांति महायज्ञ सम्पन्न इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति

मंदिर इंदौर में आचार्य श्री विहर्षसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 24 से 26 फरवरी 2024 को सम्पन्न हुई। जिसमें सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य हर्ष-तृप्ति जैन, तथा महायज्ञनायक- कैलाशचन्द्र जी जैन, कुबेर- श्रीमति संगीता जितेन्द्र जैन को प्राप्त हुआ तथा प्रतिमा विराजमान करने का सौभाग्य हर्ष-तृप्ति जैन, कैलाशचन्द्र जी जैन, श्रीमती सपना अभय जैन, श्रीमती निधि संजय जैन बासोदा, श्रीमती अनीता सुरेश जैन बैंक वालो को प्राप्त हुआ।

भट्टारक स्वामी
आनुकीर्ति जीभट्टारक स्वामी
धवलकीर्ति जीभट्टारक स्वामी
लक्ष्मीसेन जी

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इंदौर में 24 से 26 फरवरी वेदी प्रतिष्ठा के अवसर पर दिनांक 24 फरवरी को ध्वजारोहण इन्द्रप्रतिष्ठा, मंडप प्रतिष्ठा कार्यक्रम आचार्य श्री विहर्षसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य एवं कम्मदहली कर्नाटक के भट्टारक स्वामी भानुकीर्ति जी तथा अरहंतगिरि कर्नाटक के भट्टारक स्वामी धवलकीर्ति जी, ज्वालामालिनी कर्नाटक के भट्टारक स्वामी लक्ष्मीसेन जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। तथा सभी पधारे भट्टारक स्वामी विद्या वारिधी उपाधि से सम्मानित किया गया।

वर्ग पहेली 293

1		2	3		4		5	6
		7					8	
		9			10	11		
12	13			14				15
16			17			18	19	
			20				21	
22			23		24			
		25			26	27		28
29				30				

ऊपर से नीचे

1. प्रथम तीर्थंकर का नाम -5
2. पथिक, -4
3. अज्ञान, मूढ़ता, मूर्खता -3
4. बारीक कपड़ा -4
5. उपदेश -भगवान महावीर का एक नाम -3
6. दया बहादुर -2
9. शिर, वीर -2
11. हारना थकान का भाव -3
13. वट वृक्ष -4
15. शरण, सहारा -3
17. पावन -3
19. कतार पंक्ति -2
22. काय, श्री कृष्ण -3
24. कमल, पद्म, सरोज -3
25. मकान -2
27. प्रत्येक हर एक हरि का नाम -2
28. रिश्ता, संबंध -2

बाये से दाये

1. बसंत ऋतुओं का राजा -4
4. प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की माताजी -4
7. स्ट्राईक -4
9. श्रीकृष्ण के उपदेश सृजित ग्रंथ -2
10. मंथन क्रिया, विलोलना -3
12. पति का भाई -3
14. नयन पुट -3
16. श्रेष्ठ, वरदान -2
17. कमल, नीरज -2
18. मापने की क्रिया मापन -3
20. ब्रह्माण -2
21. पथ मार्ग -2
22. धीमा, हल्का, कम धीरे-धीरे -2
23. तीन भुजा का क्षेत्र -3
26. फहराना, फरकाना -4
29. कैनाल पानी बहाने वाली कृत्रिम नदी -3
30. दृष्टि -3

वर्ग पहेली 292 का हल

1	ऋ	तु	रा	ज		4	म	रू	5	दे	6	वी
		7	ह	ड	ता	ल			8	श	र	
		9	गी	ता		10	म	11	थ	ना		
12	13	व	र		14	प	ल	क			15	प
16	र			17	झ			18	प	ना		
				20	वि	प्र			21	य	ह	
22	म	द		23	त्र	भु	24	ज				
द		25	घ			26	ल	27	ह	रा	28	ना
29	न	ह	र		30	न	ज	र				ता

सदस्यता क्र.

पता :

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

ये देख नजारा कुदरत का



नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।



**जन जन के
आराध्य गुरु
परम पूज्य
आचार्य श्री
विद्यासागर
मुनिराज जी**

समतापूर्वक समाधि

18 फरवरी 2024
डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़

विनम्र विनयांजलि

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ
सर्वोपयोगी न्यास शिरपुर जिला वाशिम महाराष्ट्र 444 504

जन जन के
आराध्य गुरु
परम पूज्य
आचार्य श्री
विद्यासागर
मुनिराज जी

समतापूर्वक समाधि

18 फरवरी 2024, डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़



संस्कार सागर परिवार , श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट
श्रुत सिद्धांत शोध पीठ, इंदौर

संस्कार सागर वद्वेष सिर्फे पृष्ठ Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 6232967108

दिनांक 28/02/24, पोस्टिंग दिनांक - 03/03/2024